A MANUAL OF SANSKRIT TRANSLATION

FOR HIGH SCHOOL STUDENTS

१. सन्धि-प्रकरण

सन्धि तीन प्रकार की होती है—

स्वर-सन्धि, व्यंजन-सन्धि और विसर्ग-सन्धि।

(१) स्वर-सन्धि—स्वर के साथ जब स्वर का मेल हो तो उसे स्वर-सन्धि कहते हैं; जैसे—परम + आत्मा = परमात्मा।

(२) व्यंजन के आगे स्वर अथवा व्यंजन के आने से जो विकार होता है उसे व्यंजन-सन्धि कहते हैं; जैसे—जगत् + नाथ = जगन्नाथ।

(३) विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन के आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-सन्धि कहते हैं; जैसे—निः + फल = निष्फल।

स्वर-सन्धि (अच् सन्धि)

१. **गुण-सन्धि**—अ या आ के पश्चात्, इ या ई हो तो दोनों को मिलकर "ए" उ या ऊ हो तो दोनों को मिलकर "ओ", ऋ हो तो दोनों को मिलकर "अर्" और लृ हो तो "अल्" हो जाता है; जैसे—

सुर + ईशः = सुरेशः	महा + ईशः = महेशः
हित + उपदेशः = हितोपदेशः	महा + उत्सवः = महोत्सवः
देवः + ऋषिः = देवर्षिः	ब्रह्मा + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः
तव + लृकारः = तवल्कारः	

(अकः सवर्णे दीर्घः)

दीर्घ-सन्धि—यदि ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ या ऋ से परे इनके ही सदृश कोई स्वर परे हो तो दोनों को मिलकर एक दीर्घ अक्षर हो जाता है। जैसे—

विद्या + आलयः = विद्यालयः　　विद्या + अभ्यासः = विद्याभ्यासः

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः　　लक्ष्मी + ईशः = लक्ष्मीशः

गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः　　वधू + उत्सवः = वधूत्सवः

पितृ + ऋणम् = पितॄणम्　　शुभ + आगमनम् = शुभागमनम्

(वृद्धिरेचि)

३. वृद्धि-सन्धि—अ अथवा आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान में ऐ और ओ या औ हो तो दोनों के स्थान में "औ" हो जाता है; जैसे

अद्य + एव = अद्यैव　　तथा + एव = तथैव

गृह + ओषधिः = गृहौषधिः　　महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्

मम + औदार्यम् = ममौदार्यम्　　महा + औषधम् = महौषधम्

(इकोयणचि)

४. यण् सन्धि—ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ या ऌ के पश्चात् किसी सदृश स्वर के न होने पर इ, उ, ऋ, ऌ की जगह क्रमशः य, व, र, ल हो जाते हैं; जैसे—

इति + आदि = इत्यादि　　अपि + एवम् = अप्येवम्

सु + आगतम् = स्वागतम्　　अनु + एषणम् = अन्वेषणम्

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा　　गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः

(एचोऽयवायावः)

५. अयादि-सन्धि ए, ओ, ऐ, औ को स्वर परे होने पर क्रमशः अय्, अव्, आय्। आव् हो जाते हैं; जैसे—

ने + अन = नयन　　गै + अकः = गायकः

पो + अन = पवन　　पौ + अकः = पावकः

(एङः पदान्तादति)

६. पूर्व-रूपसन्धि—पद के पश्चात् यदि कहीं ए या ओ के बाद अकार हो तो उसका लोप करके उस अकार के स्थान में (ऽ) चिह्न लगा देते हैं; जैसे—

प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण ।

(ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्)

७. प्रकृतिभाव-सन्धि—(क) द्विवचनान्त पद के ए, ई या ऊ के पश्चात् कोई स्वर हो तो सन्धि नहीं होती; जैसे—

लते + इमे = लते इमे   साधू + अत्र = साधू अत्र ।

हरी + एतौ = हरी एतौ ।

(ख) प्लुत हुए स्वर की सन्धि नहीं होती है; जैसे—

हे कृष्ण + आगच्छ = कृष्ण३आगच्छ ।

(हल्) व्यंजन-सन्धि

१. (क) (स्तोः श्चुनाश्चुः) सकार या तवर्ग से पहले या पीछे शकार या चवर्ग हो तो स को श और तवर्ग को क्रमशः चवर्ग हो जाता है । जैसे—

रामस् + शेते = रामश्शेते ।

हरिस् + चिनोति = हरिश्चिनोति, सत् + चित् = सच्चित्,

तद् + जयः = तज्जयः, यज् + न = यज्ञः

(ख) (शात्) शकार से परे तवर्ग हो तो उसे चवर्ग नहीं होता;

जैसे—प्रश् + नः = प्रश्नः ।

२. (ष्टुनाष्टुः) सकार अथवा तवर्ग के स्थान में षकार या टवर्ग के योग में पूर्व या पश्चात् षकार या टवर्ग हो जाता है; जैसे—

धनुस + टङ्कारः धनुष्टङ्कारः, अभीष् + तः = अभीष्टः

३. (तोर्लि) तवर्ग से परे लकार हो तो तवर्ग को भी लकार हो जाता है; जैसे—

तडित् + लता = तडिल्लता, भवान् + लिखति = भवाँल्लिखति

४. (झलां जशोऽन्ते) वर्ग के पहले, दूसरे और चौथे अक्षर को पदान्त में उस ही वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है, जैसे—

वाक् + ईशः = वागीशः, अच् + अन्तः = अजन्तः, जगत् + ईशः = जगदीशः।

५. वर्ग के पहले, दूसरे और चौथे अक्षर को वर्ग चौथा या तीसरा अक्षर परे होने पर उस ही वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है, जैसे—क्रुध् + धः = क्रुद्धः, बुध् + धिः = बुद्धिः।

६. वर्ग के पदान्त प्रथम चार वर्णों के पर यदि श हो और श कार के बाद यदि कोई स्वर या ह्, य्, व्, र्, ल्, में से कोई अक्षर हो तो श को विकल्प से छ हो जाता है। जैसे—

एतत् + श्रुत्वा = एतच् + श्रुत्वा या एतच्छ्रुत्वा।

७. (क) पदान्त के अक्षर (क् से लेकर म् तक) के और म्, व्, ल्, को अनुनासिक अक्षर परे होने पर उस ही वर्ग का अनुनासिक होता है, जैसे—

षट् + मासा = षण्मासाः, जगत् + नाथः = जगन्नाथः।

(ख) परन्तु प्रत्यय का अनुनासिक अक्षर परे होने पर नित्य अनुनासिक ही होगा, जैसे—

वाक्मयम् = वाङ्मयम्, कियत् + मात्रम् = कियन्मात्रम्।

८. पदान्त मकार से परे यदि कोई व्यंजन हो तो म् को अनुस्वार हो जाता है, जैसे—

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे।

९. यदि पदान्त नकार से परे च्, छ्, ट्, ठ्, त् और थ् में से कोई अक्षर हो और उनके बाद यदि कोई स्वर ह्, य्, व्, र्, ल् या किसी भी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर होवे तो न् को अनुस्वार और स्

हो जाता है, परन्तु प्रशान् के न् को अनुस्वार या स् नहीं होता है, जैसे—

कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित्, अस्मिन् + तडागे = अस्मिंस्तडागे । प्रशान् + तनोति । प्रशान्तनोति ।

१०. पदान्त के स का रु (र्) होता है; जैसे—
रात्रिस्—भविष्यति = रात्रिर्भविष्यति ।

११. पदान्त र् से परे यदि वर्गों के पहले दूसरे अक्षर या श्, ष्, स् में कोई अक्षर हो अथवा कोई भी अक्षर न हो तो र् को विसर्ग (या 'स') हो जाता है; जैसे—

रामर् + कथयति = रामःकथयति, हरिर् = हरिः ।

१२. र् से परे र हो तो पूर्व र का लोप हो जाता है और इससे पूर्व यदि अ, इ, या उ में से कोई स्वर होवे तो उसे दीर्घ भी हो जाता है, जैसे—

निर् + रसम् = नीरसम् निर् + रोगः + नीरोगः ।

१३. पदान्त स् (र) से पहले यदि ह्रस्व अकार हो और रेफ के आगे ह्रस्व अकार ह्, य्, व्, र्, ल् अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें अक्षरों में से कोई अक्षर हो तो रु (र्) को उ हो जाता है, जैसे—मनस् + रथः = मनोरथः, मनस् + रमः = मनोरमः, नरस् + याति नरोयाति । शिवोऽर्च्यः ।

१४. पदान्त रु (र्) से पूर्व यदि ह्रस्व अ हो और आगे ह्रस्व अ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो अथवा रु (र्) से पूर्व आ होवे इसके पश्चात् कोई स्वर या ह, य, व, र, ल या वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें अक्षरों में से कोई अक्षर होवे तो रु (र्) के स्थान में य् होकर उसका लोप हो जाता है; जैसे—
देवास् + इह = देवार + इह = देवाय् + इह = देवा इह । चन्द्रशेखरस् + आह = चन्द्रशेखरर + आह = चन्द्रशेखरय् + आह = चन्द्रशेखर आह ।

१५. (अतो रोरप्लुतादप्लुते) अप्लुत (जो प्लुत न हो) ह्रस्व अकार से परे अप्लुत अकार हो तो रु के स्थान में उकार आदेश हो। जैसे—

पुरुष रु + अत्र = पुरुष उ + अत्र = पुरुषोऽत्र। यहाँ 'पुरुष रु + अत्र' इस अवस्था में 'रु' के स्थान पर 'उ' होने के बाद 'पुरुष उ + अत्र' इस दशा में 'आद्गुणः' (स्वर सन्धि सूत्र सं० १) से गुण और पूर्व रूप एकादेश (स्वर सन्धि सूत्र सं० ६ से) होने पर 'पुरुषरेऽत्र' रूप हुआ। इसी प्रकार (मनः + अर्पय) मनस् + अर्पय + मनोऽर्पय (कः + अत्र) कस् + अत्र = कोऽत्र इत्यादि।

विसर्ग-सन्धि

१. चवर्ग, टवर्ग और तवर्ग के पहले दूसरे अक्षर के परे होने पर विसर्ग को स् हो जाता है; जैसे—

शिवः + त्राता = शिवस्त्राता।

१. श्, ष्, स्, के परे होने पर विसर्गों को स विकल्प से होता है; जैसे—

हरिः + शेते + हरिः शेते अथवा हरिस + शेते = हरिश्शेते।

३. प्रत्यय सम्बन्धहीन विसर्ग से पहले यदि ह्रस्व इ, या उ होवे और बाद में यदि कवर्ग या पवर्ग हो तो विसर्ग को ष हो जाता है; जैसे—

आविः + कृतम् = आविष्कृतम्।

रूप-सिद्धि में उपयोगी सन्धि-नियम

(१) किसी शब्द या रूप के अन्त में एक से अधिक व्यंजन होने पर प्रथम के अतिरिक्त अन्य व्यंजनों का लोप हो जाता है। जैसे—
मरुत् + स—मरुत् (प्रथमा एक वचन)

(२) शब्द के अन्त में अनुनासिक के अतिरिक्त अन्य व्यंजन के स्थान पर उसी वर्ग का प्रथम या तृतीय व्यंजन प्रयुक्त किया जाता है। जैसे—मरुत्—द्, वाक्—ग्।

(३) प्रत्यय के आदि में कठोर व्यंजन के पूर्व अनुनासिक के अतिरिक्त अन्य वर्गीय व्यंजन के स्थान पर उसी वर्ग का प्रथम व्यंजन होता है। जैसे—समिध् + सु—समित्सु ।

(४) अन्त्य क, ख, ग्, घ्, च्, ज् इनके स्थान पर "क्" होता है।

,,	ट्, ठ्, ड्, ढ्,	,,	,, ट्	,,
,,	त्, थ्, द्, ध्,	,,	,, त्	,,
,,	प्, फ्, ब्, भ्,	,,	,, प्	,,
,,	श, ष, ह,	,,	,, प	,,

परन्तु (अ) भ्रस्ज्, सृज्, यज्, राज्, भ्राज् इनके अन्त्य 'ज्' को ष् या 'ट्' होता है।

(आ) दिश्, दृश्, स्पृश् इनके पश्चात् कुछ भी न आने पर 'श्' का 'क्' होता है।

(इ) उपर्युक्त स्थानों पर 'नश्' के 'श्' का 'ट्' अथवा 'क्' होजाता है।

उदाहरणार्थ—(अ) मृज् + तः—मृष् + तः। (आ) दिश् + सु—दिक् + षु। दिश् + न = दिष्टः।

(५) शब्द के रूप में ही ऋ, र्, और ष् इनके पश्चात् 'न' इस व्यंजन के आने पर 'न्' का 'ण्' होता है। यह परिवर्तन ऋ, र्, ष् और 'न' इनके मध्य में स्वर, अर्ध-स्वर (ल् के अतिरिक्त), ह्, क वर्ग और प वर्ग इनके व्यंजन आने पर भी होता है। केवल 'न' रूप के अन्त में नहीं होना चाहिये। जैसे हरि + ना—हरिणा। परन्तु 'हरीन्'।

(६) अन्त्य घ्, ध्, भ्, के पश्चात् 'त' या 'थ्' इन आद्य वर्णों वाले प्रत्ययों का प्रयोग होने पर, उनके स्थान पर क्रमशः ग्, द् और ब् होते हैं और 'त' का 'ध्' हो जाता है। जैसे—दोघ् + ति = दोग्—धि। रुणध् + ति = रुणद् + धि।

(७) अन्त्य 'ढ्' के पश्चात् त्—थ्—ध् इन वर्णों से आरम्भ होने वाले प्रत्ययों का प्रयोग होने पर, 'ढ्' का लोप होता है और 'ऋ' के अतिरिक्त पीछे आने वाले अन्य स्वरों को दीर्घ हो जाता है। इसके अतिरिक्त त्—थ्, ध् का ढ हो जाता है। जैसे—लेढ्+ति= लेढ्+ढि=लेढि, लिढ् त=लीढः।

(८) पदान्त भिन्न ए, ऐ, ओ और औ इनके पश्चात् स्वर आने पर उनके स्थान पर क्रम से अय्, आय्, अव्, और आव् होता है। अजुहो+अम—अजुहव्+अम। इत्यादि।

---

३. समास (Compounds)

जब दो या दो से अधिक सार्थक पद मिलकर एक पद हो जाते हैं, तो उसे समास कहते हैं। और जो पद उस समास से बनता है उसे समस्त पद कहते हैं। इसमें पदों के मध्य की विभक्ति का लोप हो जाता है।

समासों के भेद

१ पूर्वपद प्रधान—अव्ययी भाव

२ उत्तरपद प्रधान—तत्पुरुष

३ उभयपद प्रधान—द्वन्द्व

४ अन्यपद प्रधान—बहुव्रीहि

प्रथमा तथा समानाधिकरण तत्पुरुष समास को कर्मधारय और संख्या पूर्वक कर्मधारय को द्विगु कहते हैं। इस प्रकार इन दोनों समासों को तत्पुरुष के अन्तर्गत न मान कर पृथक् मानने से समासों के ६ भेद बन जाते हैं।

इनके अतिरिक्त (१) नञ् समास (२) प्रादि समास और (३) उपपद समास ये तीन और छोटे-छोटे समास हैं। इनका वर्णन इस प्रकरण के अन्त में है।

अव्ययी भाव समास (Adverbial compound)

ध्यान रहे अव्ययी भाव समास से बना हुआ पद नपुंसक लिङ्ग के एक वचन ही में प्रयुक्त होता है। जैसे कूलस्य समीपम् = उपकूलम्।

सामीप्य, समृद्धि अभाव, पश्चात्, योग्यता, वीप्सा, अनुक्रम, सादृश्य, सम्पूर्णता, अनतिक्रम, पर्यन्त, अत्यय (नाश) यौग पद्य (एक काल में) आदि अर्थों में अव्ययी भाव समास होता है। जैसे—

सामीप्य = कृष्णस्य समीपम् = उपकृष्णम्। उपकूलम् इत्यादि।
वीप्सा = (बारंबार) गृहं गृहं प्रति = प्रतिगृहम्।
अनुक्रम = ज्येष्ठं अनु = अनुज्येष्ठम्।
अनतिक्रम = शक्ति मनतिक्रम्य = यथाशक्ति।
पर्यन्त = समुद्रस्य पर्यन्तम् = आसमुद्रम्।

तत्पुरुष समास (Determinative compound)

द्वितीया तत्पुरुष या कर्मतत्पुरुष = जहाँ पूर्वपद द्वितीयान्त हो। जैसे—

दुःखं श्रित = दुःखाश्रितः।

तृतीया तत्पुरुष या करणतत्पुरुष = जहाँ पूर्वपद तृतीया विभक्त्यन्त हो। जैसे—शरेण हतः = शरहतः।

चतुर्थी तत्पुरुष या सम्प्रदानतत्पुरुष = जहाँ पूर्वपद चतुर्थी विभक्त्यन्त हो। जैसे—

ज्ञानाय + अध्ययनम् = ज्ञानाध्ययनम्। यूपायदारु = यूपदारु।

पञ्चमी तत्पुरुष या अपादानतत्पुरुष। जहाँ पूर्वपद में पञ्चमी विभक्ति हो। जैसे—

सर्पात्भयम् = सर्पभयम्।

षष्ठी तत्पुरुष या सम्बन्धतत्पुरुष = जहाँ पूर्वपद में षष्ठी विभक्ति हो। जैसे—सुखस्य भोगः—सुखभोगः। राज्ञः पुरुषः = राज पुरुषः।

सप्तमी तत्पुरुष या अधिकरणतत्पुरुष = जहाँ पूर्वपद में सप्तमी विभक्ति हो। जैसे—

कार्ये कुशलः = कार्यकुशलः। प्रासादे + आरूढ़ः = प्रासादारूढ़ः।

नोट—तत्पुरुष समास में जहाँ पूर्वपद की विभक्तियों का लोप नहीं होता उसे अलुक् समास कहते हैं। यह अलुक् शिष्ट प्रयोगों में ही होता है।

तृतीया अलुक्—हस्तिनापुरम्। आत्मनापञ्चमम्।

चतुर्थी अलुक्—आत्मनेपदम्। परस्मैपदम्।

पञ्चमी अलुक्—अन्तिकादागतः।

षष्ठी अलुक्—पश्यतोहरः, दिशाम्पतिः।

सप्तमी अलुक् = युधिष्ठिरः, गेहेशूरः, अन्तेवासी।

कर्मधारय समास (Appositional compound)

विशेषण और विशेष्य के समास को कर्मधारय समास कहते हैं। इसमें उत्तरपद प्रधान और पूर्वपद में प्रथमा विभक्ति होने से इसे तत्पुरुष के अन्तर्गत माना है। जैसे—

पीतं अम्बरम् = पीताम्बरम्। नीलम् + उत्पलम् = नीलोत्पलम्।

द्विगु समास (Numerical compound)

संख्यावाचक विशेषण और विशेष्य के समास को द्विगु समास कहते हैं। (संख्या पूर्वो द्विगुः)। इसमें प्रायः समाहार (एक समय में अनेक वस्तु का) बोध होता है। समाहार द्विगु से जो पद बनता है वह नपुँसकलिङ्ग एकवचनान्त होता है। जैसे—त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम्। (२) पञ्चानां पात्राणां समाहारः पञ्चपात्रम्।

अकारान्त उत्तरपदवाले समाहार द्विगु समास के अन्त में अकारान्त शब्दों को स्त्रीलिङ्ग ई हो जाता है = जैसे त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी। षण्णां पदानां समाहारः षट्पदी। सप्तानां शतानां समाहारः = सप्तशती। शतानां अब्दानां समाहारः शताब्दी।

द्वन्द्व समास (Copulative compound)

"च" (और) के अर्थ में अनेक सुबन्तों का जो समास होता है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। इसमें उभयपद (पूर्वपद और उत्तरपद) प्रधान होते हैं। इस समास के तीन भेद हैं। (१) इतरेतर द्वन्द्व (२) समाहार द्वन्द्व (३) एकशेष द्वन्द्व।

इतरेतर द्वन्द्व

जब द्वन्द्व समास में प्रत्येक पद के अनुसार वचन हो, और पर पद (अन्तिम पद) का लिङ्ग हो, तो वह इतरेतर द्वन्द्व कहलाता है। जैसे—

१—रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ।

२—दिनं च यामिनी च = दिनयामिन्यौ।

समाहार द्वन्द्व

जब द्वन्द्व समास में अनेक शब्दों का समाहार (सब को मिलाकर एक रूप से) बोध हो, तो उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। इसमें बने समस्त पद एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग ही होते हैं। जैसे—

आहारश्च निद्रा च भयं च मैथुनं च तेषां समाहारः = आहार-निद्राभयमैथुनम्।

धनं च धान्यं च = धनधान्यम्।

एकशेष द्वन्द्व

जब द्वन्द्व समास में स्त्री और पुरुष का द्वन्द्व समास होता है तब तथा अन्य शब्दों में भी समास होने पर एक ही शेष रह जाता तब "एकशेष द्वन्द्व" कहलाता है। जैसे :—

हंसी च हंसश्च = हंसौ। माता च पिता च = पितरौ।

बहुव्रीहि समास (Attributive Comp.)

जब समास में जिन-जिन पदों का समास हो उनसे भिन्न कोई अन्य पद प्रधान हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे

वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः = वीरपुरुषः (देश) वीराः पुरुषाः यस्मिन् तत् + वीरपुरुषम् (नगरम्)। लम्बौ कर्णौ यस्य स लम्बकर्णः (गधा)

व्यधिकरण बहुव्रीहि

जिन पदों का समास हो, यदि वे भिन्न-भिन्न विभक्ति के हों तो उसे "व्यधिकरण बहुव्रीहि" कहते हैं। जैसे—

चक्रं पाणौ यस्य सः = चक्रपाणिः (विष्णुः)
लगुडं हस्ते यस्य सः = लगुडहस्तः (कश्चित्व्याधः)

नञ् समास

नञ् अव्यय का सुबन्त पद से जो समास होता है वह "नञ् समास कहाता" है। इसे तत्पुरुष के अन्तर्गत मानते हैं, तथा इसे 'नञ् तत्पुरुष' भी कहते हैं।

व्यञ्जन से पूर्व नञ् का "अ" रह जाता है। और स्वर से पूर्व नञ् को अन् हो जाता है।

नञ् के ६ अर्थ माने जाते हैं—

तत्सादृश्यं तदन्यत्वं तदल्पत्वं विरोधिता।
अप्राशस्त्य मभावश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः।

अर्थ—(१) समानता (२) भेद (३) अल्पता (४) विरोध (५) अप्राशस्त्य (बुराई) और (६) अभाव ये छः नञ् के अर्थ हैं। उदाहरण—

१—समानता—न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः। (ब्राह्मण जाति में पैदा न होने पर भी ब्राह्मण के समान है किन्तु ब्राह्मण नहीं है)

२—भेद—न पटः = अपटः (कपड़े से भिन्न)

३—अल्पता—न उदरं यस्या सा = अनुदराकन्या। (पतली कमर वाली कन्या)

४—विरोध—न धर्मः = अधर्म = (धर्म का विरोधी = अधर्म)

५—अप्राशस्त्य = (बुराई) न कार्यम् = अकार्यम् (बुरा कार्य) इसी प्रकार न कालः = अकालः (बुरा समय)

६—अभाव—न ज्ञानम् = अज्ञानम् । (ज्ञान न होना) इसी प्रकार अक्रोधः इत्यादि जानो ।

नोट—यदि नञ् समास में अन्य पद प्रधान हो तो वह बहुव्रीहि समास ही कहलायेगा ।

जैसे—न पुत्रः यस्य सः = अपुत्रः ।

न धनं यस्य सः = अधनः ।

न सहायः यस्य सः = असहायः ।

उपपद समास

जिन सुबन्त पदों के बाद धातुओं से कृत् प्रत्यय होते हैं, उन पदों को उपपद कहते हैं । उपपदों का धातुओं से जो समास होता है, उसे उपपद समास कहते हैं । जैसे—कुम्भं करोति = कुम्भकारः (कुम्भ-ङस् , कृ + अण् इत्यादि ।

प्रादि समास

जब 'प्र' आदि उपसर्गयुक्त कृदन्त पद का सुबन्त पद के साथ समास होता है तब उसे 'प्रादि समास' कहते हैं—जैसे प्रगतः आचार्यः "प्राचार्यः" इत्यादि ।

२. पारिभाषिक शब्द (Some Technical words)

भाषा Language
शुद्ध Correct
अशुद्ध Incorrect
व्याकरणविद्या Grammar
वर्ण Letters
शब्द Word
वाक्य Sentence
वर्ण-विचार Orthography
स्वर Vowels

धातु Root
धातुज Derivative
जातिवाचक Common-noun
व्यक्तिवाचक Proper noun
लिंग Gender
वचन Number
कारक Case
पुल्लिंग Masculine

व्यंजन Consonants
ह्रस्व Short Vowels
दीर्घ Long Vowels
प्लुत Lengthened Vowels
विशेषण Adjective
क्रिया Verb
अव्यय Article
रूढ़ि Primitive noun
विभेदक संख्याबोधक Ordinal
सामान्यसंख्याबोधक Cardinal
सकर्मक Transitive
अकर्मक Intransitive
कर्म Object
कर्त्ता Nominative
काल Tense
नियम Mood
भूत Past tense
वर्त्तमान Present tense
पूर्वकालिक क्रिया Participle
स्वार्थ नियम Indicative mood
शकत्यर्थ नियम Potential mood
आशंसार्थ नियम Subjunctive mood

स्त्रीलिंग Feminine
एकवचन Singular
द्विवचन Dual
बहुवचन Plural
कर्ता Nominative
उत्तमपुरुष First Person
मध्यमपुरुष Second Person
अन्यपुरुष Third person
गुणबोधक Qualitative
संख्याबोधक Numeral
विस्मयादिबोधक अव्यय Interjection
स्थानवाचक Adverb of place
कालवाचक Adverb of time
परिमाणवाचक Abverb of quantity
निषेधवाचक Adverb of negation
रीतिवाचक Adverb of manner
निश्चयवाचक Adverb of determination
कण्ठ्य Gutturals
तालव्य Palatals
मूर्द्धन्य Cerebrals
दन्त्य Dentals
ओष्ठ्य Labials

अनुमत्यर्थ नियम Imperative mood
भावार्थ नियम Infinitive-mood
क्रियाविशेषण Adverb
समुच्चायक Conjunction
उपसर्ग Preposition
संज्ञा Noun
सर्वनाम Pronoun
कर्म Accusative
करण Instrumental
संप्रदान Dative
अपादान Ablative
सम्बन्ध Genetive
अधिकरण Locative
सम्बोधक Vocative
पुरुषवाचक Personal pronoun
निश्चयवाचक Demonstrative pronoun
सम्बन्धवाचक Relative pronoun
प्रश्नवाचक Interrogative pronoun
अनिश्चयवाचक Indefinite pronoun
भविष्य Future tense

कण्ठ्य तालव्य Palate Gutturals
दन्तोष्ठ्य Dento Labials
नासिक्य Nasals
शब्दविचार Etymology
ध्वन्यात्मक Inarticulate
वर्णात्मक Articulate
सामान्यभूत Past tense
आसन्नभूत Present perfect tense
पूर्णभूत Pluperfect tense
संदिग्धभूत Past dubious
हेतुहेतुमद्भूत Indefinite or past conditional
अपूर्ण भूत Imperfect tense
सामान्यवर्तमान Present
संदिग्धवर्तमान Present dubious
सामान्यभविष्यत् Future
विधिक्रिया Imperative
सामान्यभविष्यत् Aorist
वाक्यविचार Syntax
वाक्य Sentence
उद्देश्य Subject
विधेय Predicate
पदविभाग Parsing

सुवन्त A nominal base
तिङन्त A verbal base
भ्वादिगण 1st Conjugation
अदादिगण 2nd ,, ,,
जुहोत्यादिगण 3rd ,, ,,
दिवादिगण 4th ,, ,,
स्वादिगण 5th ,, ,,
तुदादिगण 6th ,, ,,
रुधादिगण 7 th ,, ,,
तनादिगण 8th ,, ,,
क्र्यादिगण 9th ,, ,,
चुरादिगण 10th ,, ,,

द्वन्द्वसमास Coperlative Compound
तत्पुरुष समास Determinative ,,
कर्मधारय समास Appositional ,,
बहुव्रीहि समास Attributive ,,
अव्ययी भाव Adverbial ,,
विग्रह Dissolution ,,

Some Important Articles (अव्यय)

By chance = अकस्मात्, दैवात्
Before, forward = अग्रतः
Soon = अचिरात्
Immediately, Instantly, Then and there, Truly } अञ्जसा
Therefore = अतः
Henceforth, Henceforward, Hereafter } अतः परम
Exceedingly Excessively } अति
Here = अत्र
Then = अथ, अनन्तरम्
Yes = अथ किम्, वाढम्

Except Without = } अन्तरेण, विना
Elsewhere = अन्यत्र
Otherwise = अन्यथा, नोचेत्
Another day = अन्येद्युः
Also, too, Even } अपि
Towards = अभि
Oh, oh = अये, अयि
For = अर्थं, कृते
Again and again Frequently } असकृत्
Alas = अहह
Oh = अहो
Near = आरात्, निकषा

Or = अथवा
Today = अद्य
From this day = अद्य प्रभृति
Still, yet = अद्यापि
Below, beneath = अधः, अधस्तात्
Now, Now-a days = अधुना
Yet = अधुनापि
After = पश्चात्
Up = ऊर्ध्वम्
In one place = एकत्र
Once upon a time = एकदा
One by one = एकैकशः
Once = एकधा
As follows = एवम्
How, wherefore, Why } कथम्
With great difficulty = कथमपि
When = कदा
Sometimes, Rarely, Scarcely } कदाचित्
Not to speak of = किं पुनः
But = किन्तु, परन्तु, परम्
Why = किमिति
Why, whence = कुतः
Somewhere = कुत्रापि
By degrees = क्रमशः

Hence = इतः, अतः
As follows = इति
Thus = इत्थम्
Now = इदानीम्
Here = इह
A little = ईषत्
Aloud = उच्चैः
Or = उत, यद्वा
Above = उपरि
Hush, to remain silent = तूष्णीम्, ओषम्
Thrice = त्रिः
In the day time = दिवा
There = तत्र
Never = न कदाचित्
At night = नक्तम्
Not = नो, न, मा
Next day = परेद्यवि
Again and again = पुनःपुनः
Before = पुरः, पुरस्तात्, प्राक्
Long ago = पुरा
Previous = पूर्वेद्युः
Since = ततः प्रभृति
Early in the morning = प्रातः
Generally = प्रायशः
By force = बलात्
Exceedingly = भृशम्, अत्यन्तम्
Oh = भोः ! हे !

And, As well as = च
Late = चिरेण
Sometimes = जातु
Forthwth } झटिति, शीघ्रम्
Instantly } द्राक्
Then, Thence = ततः, तदा-तर्हि
For nothing = वृथा
Slowly = शनैः शनैः
Always = शश्वत्, सदा
Tomorrow = श्वः
Once = सकृत्
Ever = सदैव
Around = समन्तात्

Often = मुहुः
Where } यत्र
Whither } यत्र
If = यदि
Though, Although = यद्यपि
All at once. } युगपत्
Simultaneously } युगपत्
With = समम् , सह, सत्रा
Well = सम्यक् ,साधु, स्थाने,सुष्ठु
By all means = सर्वथा
Proper = साम्प्रतम् , उचितम्
In the evening = सायम्
Ah = हा !, आः !
Yesterday = ह्यः

धातुओं (Roots) के सकर्मक (Transitive) व अकर्मक (Intransitive) होने की मोटी पहिचान :—

लज्जा, सत्ता, स्थिति, जागरणम् ,
वृद्धि, क्षय, भय, जीवित, मरणम् ।
शयनं, क्रीडा, रुचि, दीप्त्यर्थम् ,
धातु गणं सकर्मकमाहुः ॥

ऊपर जो अर्थ गिनाए हैं, उनसे भिन्न अर्थ वाली धातुएँ सकर्मक होती हैं, अन्यथा अकर्मक जाननी चाहिये ।

Some English Expressions translated into Sanskrit

A.

About = परितः
Above = उपरि
According to = अनुसारेण
After = अनु
Afterwards = पश्चात्
Again = पुनः
Ago, = पुरा (Long ago)
Ah ! = आः ?
Alas ! = अहह
All = सर्वं, अखिलं
Almost = प्रायेण
Aloud = तारस्वरेण
Already = प्रागेव
Also, too, even, = अपि
Altogather = सर्वथा
Always = सर्वदा
And = च
Any how = येन केन प्रकारेण
Any longer = इतः परम्
Any more = इतः परम्
Around = समन्तात् ,परितः
As = यथा
Aside = जनान्तिकम् , अपवार्य
As it, As it were = इव
As well as = च
At the same time = सममेव
Away with = कृतम्

B.

Because = यतः
Before = पूर्वम्
Behind = पश्चात्
Below, Beneath = अधः
Between = अन्तरा
Beyond = पारे, अति (समस्त)
By chance = अकस्मात्
By and by = अचिरेण

C.

Certainly = नूनम्
Surely = „
Continually = अविरतम्

D.

During = मध्य

E.

Easily = लीलया, अनायासेन
Else = अन्यथा
Else where = अन्यत्र
Ere = प्राक्, पूर्वम्

Especially = विशेषेण
Ever = सदैव
Exceedingly = अतीव, अत्यन्तम्
Excessively = „ „
Except = विना

F.

False. hood = मृषा, मिथ्या
Far = दूरम् , दूरे
For = यतः, हि
Formerly = पुरा
For nothing = मुधा
Forth with = सपदि, द्राक्
Fortunately = दिष्ट्या
Forward = अग्रतः
Frequently = पुनः पुनः

G.

Generally = प्रायः

H.

Hark = शृणु
Hence = इतः
Hence forth = इतः परम्
Hence forward = „
Here = अत्र
Hither and thither = इतस्ततः
How = कथम्
However = तथापि
Hush = शान्तम् , तूष्णीम्

I.

If = यदि, चेत्
Immediately = तत्क्षणम्
Instantly = „
In = अन्तः
Indeed = नूनम् , खलु

L.

Last year = परुत्
Late = चिरेण
Like = इव
Little = ईषत् , स्तोकम्
a little „ „
Long = चिरम्
Luckily = दिष्ट्या

M.

Much = बहु

N.

Near = निकटे
Neither = नवा, नहि
Never = न कदापि
Not only = न केवलम्
Not to speak of = किंपुनः
Now, Now-a-days = अधुना
Nowhere = नकुत्रापि

O.

O, oh=भोः, अहो।
Often=मुहुः
On a sudden=सहसा
Suddenly= ,,
Once=सकृत्
Only=केवलम्
Merely= ,,
Or=वा, उत, यद्वा
Out words=बहिः
Over=उपरि

P.

Presently=सद्यः
Proper=साम्प्रतम्

Q.

Quite=अशेषेण
Rarely=कदाचित्
Scarcely= ,,

S.

Secretly=रहः निभृतम्
Simultaneously=युगपत्
Sice=प्रभृति
So=तथा
Sometimes=कदाचित्
Somewhat=ईषत्
Somewhere=कुत्रापि
Soon=शीघ्रम्
Still=अद्यापि

T.

Then=अथ
That (conj.)=यत्
Thence=ततः
There, thither=तत्र
Though, Although=यद्यपि
Thrice=त्रिः
Through=द्वारा, मुखेन
Thus=एवम्
Till, nntil=यावत्
To=प्रति
Together=एकत्र
Too=अति
Truly=अञ्जसा, सत्यम्

U.

Under=अधः
Up=उपरि

W.

Well=सुष्ठु, साधु, सम्यक्
When=यदा
Whence=कुतः
Wherefore=किमर्थम्
While=यदा
With=सह

Y.

Yes=अथकिम्
Yet=तथापि

उपसर्ग (Prepositions)

प्र, परा, अप, सम् , अनु, अव, निस्, निर, दुर, वि, आङ्, नि, अधि, अभि, प्रति, परि, उप।

Articles used for beautifying the sentences:—

वे अव्यय जो प्रायः वाक्यालङ्कार के लिये प्रयुक्त होते हैं—

खलु, किल, नु, वा, वै, ह, यावत् , तावत् , ननु ।

अनुवाद करते समय ध्यान देने योग्य नियम

(क)

(१) जिसे दिया जाता है, उसमें चतुर्थी विभक्ति लगती है। जैसे—वह मुझे रुपया देता है "स मह्यं रूप्यकाणि ददाति।" रानी दासी को अलङ्कार देती है "राज्ञी दास्यै अलङ्कारं ददाति।"

(२) "अनु" लगनेवाले शब्द से पूर्व द्वितीया लगती है। सखियाँ शकुन्तला के पीछे चलती हैं "सख्यः शकुन्तलामनुसरन्ति।"

(३) जहाँ कई में से एक चीज को छाँटा जाता है वहाँ षष्ठी विभक्ति के बाद या तो "मध्ये" शब्द का प्रयोग होता है या सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—द्वयोर्मध्ये प्रहारोऽभवत् , या—छात्रेषु गोविन्दः श्रेष्ठः।

(४) जिस शब्द के अन्त में अ होता है उस शब्द के अन्त में स्त्रीलिङ्ग में उसे आ कर देते हैं, परन्तु वह शब्द यदि जातिवाचक स्त्रीलिङ्ग हो तो आ के स्थान पर ई हो जाता है, जैसे=एका, अश्वी।

(५) प्रत्येक धातु का असली रूप ढूँढ़कर यदि अन्त में न या म हो तो उसे हटाकर जो धातु होती है उसमें कृदन्त कर्मवाच्य बनाते समय 'त' लगाया जाता है जैसे—स गतः, तेन गतम्, जैसे—वह खाता

है—स भक्षयति। वह खाता है तेन भक्षितम्। स लज्जते—वह शर्माता है। स लज्जितः—वह शर्माया था तेन लज्जितम्।

(६) शब्द के पूर्व में आ का प्रयोग करने पर वह शब्द स्वल्पार्थ का द्योतक होता है। जैसे आ + उष्णम् जलम् = ओष्णं जलम्।

(७) वर्ग के प्रारम्भिक चार अक्षरों के पश्चात् उसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ अक्षर परे हो या कुछ भी परे न हो, तो तृतीय अक्षर होता है। जैसे किञ्चित् + जानाति = किञ्चिद् जानाति। चेत्, वक्ति = चेद्वक्ति।

(८) क्रिया से क्त प्रत्यय करने पर कर्ता में तृतीया कर्म में प्रथमा विभक्ति लगती है, यह कर्मवाच्य में होता है इसको (Active) बनाते समय इसके अन्त में वत् जोड़ते हैं, और उसके रूप भगवत् की तरह चलते हैं जिसका पुंलिङ्ग में वान् और स्त्रीलिङ्ग में 'वती' बनता है। जैसे—स गतः, तेन गतम्। स गतवान्, सा गतवती, या स अगच्छत्।

(९) जिस धातु के अन्त में 'अन' प्रत्यय लगे उसके कर्म में षष्ठी ही विभक्ति लगती है। जैसे—रामः पुस्तकस्य पठनं करोति (राम पुस्तक को पढ़ता है)

(१०) अन, या त्र जिन शब्दों के अन्त में हों वे सब प्रायः नपुंसक लिङ्ग होते हैं। जैसे–गमनम्, पत्रम्।

(११) जिसके अन्त में ल आता है वह नपुंसक लिङ्ग होता है जैसे –फलम्, जलम्।

(१२) जिस शब्द के अन्त में अ हो और उसके पूर्व में उपसर्ग हो तो रूप नहीं चलेंगे, वहाँ पर अन्त में म् लगाने से ही काम चल जाता है। जैसे—प्रतिदिनम्। और जहाँ अन्त में इ या उ हों वहाँ म् भी नहीं लगेगा, जैसे यथाशक्ति। अनु भानु।

(१३) जिस शब्द के अन्त में ऋ आता है उसके प्रथमा एक वचन में विसर्ग नहीं होते। जैसे—माता, पिता।

(१५) जिनमें कारक विभक्तियाँ न हों उनमें उन्हें जोड़ो, जैसे— इश्वर ने सूर्य और चन्द्रमा बनाये हैं, यहाँ पर सूर्य और चन्द्रमा के आगे "को" जोड़ो तथा द्वितीया विभक्ति लगाओ, और फिर अनुवाद बनाओ।

(१६) भूतकालिक लङ् लकार का रूप बनाने के लिए वर्तमान काल के लट् के आदि में "अ" जोड़ो, तथा अन्तिम "इकार" हटादो जैसे—भवति से अभवत्।

(१७) विशेषण विशेष्य व उद्देश्य, तथा विधेय में प्रायः एक ही विभक्ति आती है। लिखा भी है:—

विशेष्यस्य हि यल्लिङ्गं विभक्ति वचने च ये।
तानि सर्वाणि कार्याणि विशेषण पदेष्वपि ॥

जैसे-हरितानि वनानि।

(१८) एकवचनान्त वर्तमानकालिक क्रिया के आगे "स्म" जोड़ देने से भूतकालवाची क्रिया का बन जाती है। जैसे-रामः गच्छतिस्म (राम जाता था)।

(१९) प्रति से पहले आए शब्द में द्वितीया विभक्ति आती है। जैसे—रामः ग्रामं प्रतिगच्छति (राम गाँव की ओर जाता है।)

(२०) "प्रत्येक" यह शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग व एकवचन में ही होता है।

(२१) त या क्त प्रत्यय होने पर कर्त्ता में नित्य तृतीया विभक्ति ही होती है।

(ख)

(१) जिसके अन्त में अ और उसके पूर्व में आ आवे तो वह शब्द प्रायः पुंलिङ्ग होता है। जैसे—प्रकाश, मान, अपमान, भाव, अपराध, व्यवहार इत्यादि।

(२) जिसमें 'सह' लगता है उसमें तृतीया विभक्ति लगती है। जैसे—"सीता रामेण सह वनमगमत्"

(३) किल, खलु, यावत्, नु, च, चेत्, ये शब्द वाक्य के पूर्व में कभी नहीं आते।

(४) जिसमें "इक" लगता है वह पुंल्लिङ्ग होता है। जैसे—तूलिकः।

(५) जिस शब्द के अन्त में अन लगे या त्र लगे तो समझो वह शब्द नपुंसक लिङ्ग है। जैसे—पत्रम्, भोजनम्।

(६) जितनी जाने की संस्कृत हैं, उनमें उद् लगाने से निकलने की संस्कृत हो जाती है। जैसे—गच्छति से उद्गच्छति।

(७) यदि अन्त का "न" स्वररहित हो तो 'र' से परे होने पर भी "ण" नहीं होता। जैसे—रामान्।

(८) "ष" "और" "र" के बाद 'न' आवे तो "ण" हो जाता है। परन्तु यदि श, ष, ठ, ल, ण, ये बीच में आ जायँ तो नहीं होता। जैसे—कर्णानाम। कर्शनम्।

(९) किसी वाक्य को कर्मवाच्य (Passive voice) में परिवर्तित करते हुए कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा विभक्ति और धातु के अन्त में 'यते' जोड़ देते हैं। जैसे—राम ग्राम को जाता है, रामः ग्रामं गच्छति (Active) रामेण ग्रामः गम्यते, (Passive)।

(१०) जहाँ वत् लगता है वहाँ विभक्ति नहीं लगती है। जैसे "मनुष्य वत्"—(मनुष्य की तरह) परन्तु इव लगाओगे तो षष्ठी विभक्ति लगेगी। जैसे "नरस्य इव"।

(११) जितनी जाने की संस्कृत है उनमें जहाँ "आ" उपसर्ग जाता है वहाँ त्वा या क्त्वा की जगह य हो जाता है, जैसे—गत्वा आगत्य या आगम्य और आना अर्थ हो जाता है।

(१२) जिस धातु के अन्त में "आ" होता है उसमें यते जोड़ते

समय "आ" का "ई" हो जाता है, जैसे—दीयते। किन्तु "ज्ञाधातु" में तो आ ही रहेगा जैसे "ज्ञायते" ही रूप बनेगा।

(१३) जब क्रिया कृत् प्रत्ययान्त "त" के रूप में हो तो द्वितीया विभक्ति की जगह प्रथमा विभक्ति लगती है। और वही कर्ता होता है जैसे 'पाठं पठति' का 'पाठः पठितः' 'ग्रामं गच्छति' का "ग्रामः गतः"। 'गमनं करोति' का "गमनं कृतम्" इत्यादि, और यह कर्मवाच्य कहलाता है।

(१४) यदि धातु से पहिले उपसर्ग (Preposition) हो तो "त्वा" के स्थान में "य" हो जाता है! जैसे गत्वा, निगत्य, या निगम्य, धावित्वा = प्रधाव्य।

(ग)

१—विना विभक्ति का कभी कोई शब्द न लिखो।
विभक्ति शब्द से case ending और verb ending (सुवन्त) और तिङन्त) दोनों लिये जाते हैं।

२—जिन शब्दों के अन्त में क, ष, ण, भ, म, र हों वे पुंलिंग होते हैं—जैसे स्तवकः, कारकः, वृषः, दोषः गुणः, पाषाणः, कुम्भः, वृषभः, सोमः, धूमः, द्वापरः, क्षुरः।

३—रु या उ जिनके अन्त में हों वे भी पुंलिंग होते हैं जैसे—मेरुः, सेतुः, हेतुः,।

४—मित्र शब्द सूर्य के अर्थ में पुंलिंग तथा दोस्त के अर्थ में नपुंसक होता है।

५—अकर्मक (Intransitive) धातुओं से कर्ता में 'त' प्रत्यय होता है। जैसे—बालकः भीतः (The boy feared)

६—गमनार्थक धातुओं के बाद 'त' प्रत्यय कर्ता में होता है जैसे—स ग्रामं गतः (He went to the village) रामः विद्यालयं प्रयातः (Rama went to school).

७—काम करने को, फूल तोड़ने को, पाठ पढ़ने को, इन वाक्यों की संस्कृत दो प्रकार से बताओ या तो यह करो कि धातु के अन्त में अन जोड़ दो जैसे—कृ+अन=करण। गम्+अन=गमन। त्रुट्+अन=त्रोटन। और अन के कर्म (object) में हमेशा षष्ठी विभक्ति करो जैसे 'कार्यस्य करणाय' पुष्पाणां त्रोटनाय। पाठस्य पाठनाय। या फिर धातु के अन्त में 'तुम्' जोड़ दो जैसे—कृ + तुम्=कर्तुम्। त्रुट् + तुम्=त्रोटितुम्। पठ्+तुम्=पठितुम्। और धातु के कर्म (object) में द्वितीया विभक्ति करो जैसे—कार्यं कर्तुम्। पुष्पाणि त्रोटितुम्। पाठं पठितुम्। इत्यादि।

८—विभक्तियों के चिह्नों को कभी न भूलो जो कि निम्नलिखित हैं—जैसे—प्रथमा का 'ने' या जहाँ कोई भी विभक्ति नहीं लग सके। द्वितीया का चिह्न 'को' है। तृतीया का 'ने' या 'से' है। चतुर्थी का—लिये या के लिये है। पञ्चमी का से है जिस 'से' के जोड़ने से अलग होना प्रतीत हो। षष्ठी का—का, के, की इत्यादि हैं किन्तु राम नाम का एक बालक है, सुशीला नाम की एक लड़की है, इन वाक्यों में 'का' और 'की' षष्ठी के चिह्न नहीं। अतः अनुवाद बनाते समय बुद्धि से काम लो। सप्तमी के चिह्न—में, पे, पर होते हैं। इन चिह्नों को ध्यान में रखकर यदि अनुवाद करोगे तो कभी फेल न होगे।

९—यह भी याद रक्खो कि निम्नलिखित शब्दों के रूप जरूर याद कर लो—राम, लता और फल क्रम से ये तीनों शब्द पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में चलते हैं। इसी प्रकार, तद्, यद्, सर्व, सर्वा, युष्मद्, अस्मद्, द्वि, त्रि, चतुर, भानु, मति, पति, भूपति, पितृ, मातृ, धातृ, इन शब्दों के रूप भी अवश्य याद कर लो।

१०—सन्धियों के नियम हमारी पुस्तक (कक्षा ७ व ८ के लिये) में देखो।

The Causal (णयन्त; प्रेरणार्थक)

जहाँ काम किसी के द्वारा कराया जाय वहाँ यह क्रिया आती है।

Primitive	Causal active
शिव कन्या ओदनं पचति	शिव कन्यया ओदनं पाचयति।
रामः भार्यां त्यजति	(स) रामेण भार्यां त्याजयति।
शत्रवः स्वर्गमगच्छन्	शत्रून् स्वर्गमगमयत्।
विधिर्वेदमध्यैत	विधिं वेदमध्यापयत्
भृत्यः कटं करोति	भृत्येन कटं कारयति।

Causal Possive (णयन्त कर्मवाच्य)

Causal active	Causal passive
रामं ग्रामं गमयति	रामो ग्रामं गम्यते।
कृष्णं मासमासयति	कृष्णः मासमास्यते।
वटुं ओदनं भोजयति	वटुः ओदनं भोज्यते।
रामेण धनं चोरयति	रामेण धनं चोर्यते।

कारक (Cases)

कर्तृ कारक (Nominative case)

(१) क्रिया का करनेवाला कर्ता कहाता है—जैसे बालकाः क्रीडन्ति (The boys are playing) अहं पुष्पं चिनोमि (I am plucking a flower)

कर्म कारक (accusative case)

(१) अधि शीङ् स्थासां कर्म—अधि पूर्वक शी, स्था, और आस धातु का अधिकरण कर्म संज्ञक होता है—जैसे शकुन्तला शय्यामधिशेते (शी) (Shakuntla is lying down on the bed) वागीश्वरः ग्रामं अध्यास्ते (आस्) (Vagishwar lives in the village महेशः गृहमधितिष्ठति (स्था) (Mahesh is at home)

(२) अभि नि उपसर्गपूर्वक विश् धातु का अधिकरण कर्म संज्ञक होता है—जैसे सुशीला सन्मार्ग मभिनिविशते (Sushila resorts to a right Path)

(३) क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति तथा नपुंसकलिङ्ग का एक वचन होता है—जैसा कमला मधुरं गायति (Kamala sings sweetly)

(४) अत्यन्त संयोग में काल व मार्ग के परिमाण वाचक से द्वितीया होती है—जैसे स मासं अधीते (He has been reading for a month) क्रोशं गिरि:तिष्ठति (The hill stretches over a (Krosh) two miles)

करण कारक (Instrumental case)

(१) "सह" के योग में तृतीया होती है—जैसे पिता पुत्रेण सह गच्छति (The father is going with his son)

(२) हीनार्थक (हीन, रहित आदि) वारणार्थक (अलम्, कृतम्, किम्) के योग में तृतीया होती है—जैसे विद्याहीनः, अलं विवादेन, इत्यादि ।

(३) अङ्ग विकार में तृतीया—जैसे अक्ष्णाकाणः । पादेनखञ्जः ।

(४) विना के योग में तृतीया होती है—जैसे रामेण विना, इत्यादि ।

सम्प्रदान (Dative case)

(१) स्पृह धातु के योग में कर्म कारक के स्थान में चतुर्थी विभक्ति होती है जैसे—सुषमा पुष्पेभ्यः स्पृहयति (Sushama a four year old girl—longs for flowers.)

(२) जिसका कर्जा हो उसके लिये चतुर्थी विभक्ति होती है—धारयति धातु के योग में । जैसे—अहं शतं तुभ्यं धारयामि (I oue you a hundred rupees)

(३) जिसको दिया जाय उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है—स तुभ्यं फलं ददाति—(He gives you a fruit

(४) क्रुध धातु के योग में कर्म के स्थान में चतुर्थी विभक्ति होती है—प्रभुः भृत्याय क्रुध्यति (The master becomes angry with his servant)

(५) जहाँ क्रिया अन्तर्निहित हो वहाँ चतुर्थी होती है जैसे—फलेभ्यो याति (फलानि आहर्तुं याति यहाँ "आहर्तुं" understood है)

(६) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, वषट्, और राध् तथा ईक्ष्, धातु के योग में चतुर्थी होती है। जैसे—तुभ्यं नमः, कृष्णाय राध्यति ईक्षते वा।

पञ्चमी विभक्ति (Ablative case)

(१) जिससे विभाग हो उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है—जैसे वृक्षात्-फलं पतति (The fruit fales from the tree)

(२) जिससे भय लगे उसमें पञ्चमी होती है। जैसे—सर्पः नकुलाय बिभेति (The snake is afraid of the mongoose) या "पाहिमां विपदः" Protect me from danger.

(३) जो जिसका उत्पादक हो उसमें पञ्चमी होती है—जैसे गोमयात् वृश्चिकः जायते—(Scorpion is produced from cowdung) हिमालयात् गङ्गा प्रभवति (The Ganges has issued from the Himalayas)

(४) जिससे छिपना हो उसमें पञ्चमी होती है। जैसे—पितुः निलीयते पुत्रः (The son hides himself from his father).

(५) जिससे पढ़े उसमें पञ्चमी होती है। जैसे—वागीश्वरः हरेः इंग्लिशभाषा मधीते (Vagishwara learns English from Hari).

(६) जहाँ से भेद दिखाना हो उसमें पञ्चमी हो। जैसे—स्वर्णं रजतात् भिद्यते—(Gold is different from Silver)

(७) पृथक् के योग में पञ्चमी होती है। जैसे—'ग्रामात् पृथक्,

षष्ठी (Genitive case)

(१) सर्वनाम के सहित हेतु शब्द के प्रयोग में षष्ठी होती है। जैसे—कस्य हेतोः वसति, (with what reason does he live)

(२) कृत् प्रत्ययों के योग में षष्ठी होती है—जगतः कर्ता (The maker of the Universe)

(३) आशीर्वाद में षष्ठी होती है। जैसे—तव सुखं भूयात् (May you fare well).

सप्तमी (Seventh case ending)

(१) अधिकरण (Locative case) में सप्तमी होती है। जैसे—मुनिःवने वसति (The sage lives in the forest).

(२) दूर, अधिक, आदि शब्दों से सप्तमी होती है—ग्रामात् दूरे (Away from the village) इत्यादि।

Some English Roots ahd their Sanskrit Equivalents with illustrations

To bathe=स्ना—स्नाति—अहं प्रत्यहं गङ्गायां स्नामि।
To be able=शक्—शक्नोति—शान्तिदेवी पठितुं शक्नोति।
To bear=सह—सहते—क्षमाशीलः दोषं सहते।
To be ashamed=लज्ज—लज्जते—नववधूः लज्जते।
To be born=जन्—जायते—आत्मा वै जायते पुत्रः।
To become dry=शुष्—शुष्यति—सूर्यातपेन जलं शुष्यति।
To begin=आ-रभ्—आरभते—श्वः परीक्षा आरप्स्यते।
To be pleased=प्री—प्रीयते—पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः।
To bind=बन्ध्—बध्नाति—गोपालः रज्ज्वा धेनुं बध्नाति।

To bite=दश्—दशति—सर्पः चौरं दशति ।

To break=भञ्—भनक्ति—चन्द्रकान्ता दण्डं भनक्ति ।

To breathe=श्वस्—श्वसिति—नरोऽयं अधुनापि श्वसिति ।

To bring forth=सू—सूते—लता कुसुमानि सूते ।

To burn=दह—दहति—अग्निः तृणानि दहति ।

To cheat=वञ्च्—वञ्चयते—धूर्तः साधुं वञ्चयते ।

To consult=मन्त्र्—मन्त्रयते—राजा अमात्यैः सह मन्त्रयते ।

To count=गण्—गणयति—सुषमा दन्तान् गणयति ।

To create=सृज्—सृजति—कालः भूतानि सृजति ।

To cross=तॄ—तरति—पथिकः नावा नदीं तरति ।

To cure=कित्—चिकित्सति—वैद्यः रोगं चिकित्सति ।

To cut=छिद्—छिनत्ति—अयं कुठारेण वृक्षं छिनत्ति ।

To decay=क्षि क्षीयते—सत्कार्येण पापं क्षीयते ।

To deserve=अर्ह्—अर्हति—स राजपदं अर्हति ।

To die=मृ—म्रियते—नाकाले म्रियते जन्तुः ।

To dig=खन्—खनति—पिपासार्तः सलिलाशया कूपं खनति ।

To dive=गाह्—गाहते—महिषाः नदीं गाहन्ते ।

To embrace=श्लिष्—श्लिष्यति—पिता पुत्रं श्लिष्यति ।

To envy=ईर्ष्—ईर्ष्यति—स प्रतिवेशिने ईर्ष्यति ।

To fan=वीज—वीजयति—सख्यौ शकुन्तलां वीजयतः ।

To featr=भी—बिभेति—पान्थः व्याघ्राद् बिभेति ।

To feel pain=व्यथ्—व्यथते—रोगी भृशं व्यथते ।

To fight=युध्—युध्यते—वीरः व्याघ्रेण सह युध्यते ।

To forgive=क्षमूष्—क्षमते—धीरः शतं दोषान् क्षमते ।

To flash=स्फुर्—स्फुरति—आकाशे विद्युत् स्फुरति ।

To float=प्लु—प्लवते—जले शिला न प्लवते ।

To fly=डी—डीयते—पक्षिणः आकाशे उड्डीयन्ते ।

To fry=भृज्ज्—भृज्जति—सा चणकान् भृज्जति ।

To grind = पिष्—पिनष्टि—इन्दुमती हरिद्रां पिनष्टि ।
To grow = रुह्—रोहति—यादृशमुप्यते बीजं तादृग् रोहति तत्फलम् ।
To grow old = जॄ—जीर्यति—सर्वः कालेन जीर्यति ।
To hide = गुह्—गूहसि—कथं त्वं सत्यं गूहसि ।
To hope = आशंश्—आशंससे त्वं विजयाय सञ्जय ।
To hurry = त्वर्—त्वरते—मालती स्व गृहं गन्तुं त्वरते ।
To kill = हन्—हन्ति—व्याधः मृगं हन्ति ।
To learn = शिक्ष्—शिक्षते—राजपुत्र गुरोरस्त्रशास्त्रं शिक्षते ।
To lick = लिह्—लेढि—श्वा गात्रं लेढि ।
To lie down = शी—शेते—शकुन्तला शय्यायां शेते ।
To love = कम्—कामयते—अहं राज्यं न कामये ।
To meditate = ध्यै—ध्यायति—मुनिः ईश्वरं ध्यायति ।
To melt = द्रु—द्रवति—स्वर्णमुत्तापेन द्रवति ।
To milk = दुह्—दोग्धि—गोपः गां दुग्धं दोग्धि ।
To neigh = ह्रेष्—ह्रेषते—अश्वः ह्रेषते ।
To nourish = पुष्—पुष्यति—घृतं देहं पुष्यति ।
To obstruct = रुध्—रुणद्धि—वृषः मार्गं रुणद्धि ।
To perish = नश्—नश्यति—दुष्टः स्वदोषेन नश्यति ।
To pierce = व्यध्—विध्यति—राजा बाणेन मृगं विध्यति ।
To please = प्री—प्रीणाति—सुशीला सेवया पितरौ प्रीणाति ।
To plough = कृष्—कर्षति—भृत्यः भूमिं कर्षति ।
To praise = स्तु—स्तौति—भक्तः हरिं स्तौति ।
To prevent = वृ—वारयति—यन्तृभ्यः गां वारयति ।
To punish = शास्—शास्ति—राजा दुष्टान् शास्ति ।
To purify = पु—पुनाति—मां पुनीहि मातर्गङ्गे ।
To put on = वस्—वस्ते—शिशुः नववस्त्रं वस्ते ।
To regret = शुच्—शोचति—किं वृथा मृतं पुत्रं शोचसि ।

To rejoice = मुद्—मोदते—चिरात् पुत्रं दृष्ट्वा माता मोदते ।
To remember = स्मृ—स्मरति—शिष्यः गुरोः स्मरति ।
To rule over = ईश—ईष्टे—राजा राज्यस्य ईष्टे ।
To sacrifice = हु—जुहोति—तपस्वी अग्नौ हविर्जुहोति ।
To scatter = कृ—किरति—दुष्टः बालकः फलानि समन्तात् किरति
To serve = सेव—सेवते—भृत्यः प्रभुं सेवते ।
To sew = सिव्—सीव्यति—सा सूच्या वस्त्रं सीव्यति ।
To sleep = स्वप्—स्वपिति—शिशुः सुखं स्वपिति ।
To smear = लिप्—लिम्पति—बालकः तैलेन गात्रं लिम्पति ।
To smell = घ्रा—जिघ्रति—विलासी पुष्पं जिघ्रति ।
To smile = स्मि—स्मयते—खञ्जं दृष्ट्वा बालिका स्मयते ।
To sneeze = क्षु—क्षवति—असौ नरः क्षवति ।
To soothe = सान्त्व—सान्त्वयति—बन्धुः शोकार्तं सान्त्वयति ।
To sow = वप्—वपति—कृषकः क्षेत्रे बीजं वपति ।
To spit = ष्ठिव्—ष्ठीवति—अयं नरः सततं ष्ठीवति ।
To sport = रम्—रमते—राजकन्या सखीमध्ये रमते ।
To sprinkle = सिच—सिञ्चति—भवभूतिः पुष्पेषु जलं सिञ्चति।
To strive = चेष्ट—चेष्टते—योगी मुक्तये चेष्टते ।
To study = अधि-ई—अधीते—छात्रः व्याकरणमधीते ।
To suffer = क्लिश—क्लिश्यति—स्वदोषेण नरः क्लिश्यति ।
To surround = वेष्ट—वेष्टन्ते—पारिषदः नृपं वेष्टन्ते ।
To swallow = गृ—गिरति—क्षुधार्तः अन्नं गिरति ।
To sweat = स्विद् स्विद्यति—निदाघार्तः पान्थः स्विद्यति ।
To swoon = मुह—मुह्यति—तदाकर्ण्य माता मुह्यति ।
To torment = दु—दुनोति—स मां दुनोति ।
To touch = स्पृश्—स्पृशति—हस्तेन गात्रं स्पृशति ।
To tremble = कम्प—कम्पते—शीतार्तः नरः कम्पते ।
To understand = बुध—बुध्यते—स एतत् न बुध्यते ।

To vanish = ली—लीयते—उत्थाय हृदि लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः।

To wake = जागृ—जागर्ति—शारदा प्रातः शीघ्रं जागर्ति।

To wash = क्षल्—क्षालयामि—अहं पादौ क्षालयामि।

To weave = वेञ्—वयति—तन्तुवायः वस्त्रं वयति।

To weep = रुद्—रोदिति—सुशीला वृथा रोदिति।

To weigh = तुल—तोलयति—वणिक् काञ्चनं तोलयति।

To whet = श्य—श्यति—दस्युः क्षुरं श्यति।

To wreath = ग्रथ्न—ग्रथ्नाति—सहचरी मालां ग्रथ्नाति।

To yawn = जृम्भ—जृम्भते—निद्रातुरः पुनः पुनः जृम्भते।

Prepositions and their uses

उपसर्ग (Prepositions) के लगने से धातुओं के अर्थ भिन्न-भिन्न हो जाते हैं—जैसे—

अस् = to throw = अभि + अस् = to recite = छात्रः पाठमभ्यस्यति।

आस् = to sit = उप + आस् = to worship = शारदा शिवमुपास्ते

इ = to go; अव + इ = to know = स शास्त्रमवैति।

with उद् = to rise = पूर्वस्यां दिशि सूर्य उदेति।

प्रति + इ = to trust = सुषमा त्वयि न प्रत्येति।

उप + इ = to betake oneself to = उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।

ईक्ष् = to see

with अप or प्रति to wait = देवि क्षणमपेक्षस्व।

प्रतीक्षस्व कानिचिद् दिनानि।

अव + ईक्ष् to inspect = धर्मकार्याण्यवेक्षते।

निर + ईक्ष् to observe = आगन्तुकः कन्यां निरीक्षते।

परि + ईक्ष् to examine = भवान् इमं छात्रं परीक्षताम् ।
उप + ईक्ष् to disregard = गोपालदासः धनहीनान् उपेक्षते ।

कृ = to do

अनु + कृ to imitate = मेघः गिरिशोभामनुकरोति ।
प्रति + कृ to remedy = रमेशः व्याधिं प्रतिकरोति ।

गम् = to go

अनु + गम् to follow = अनुगच्छ साधुपदवीम् ।
अव + गम् to know = तव प्रयत्नं विफलमवगच्छामि ।
निर + गम् to go out = शृगालो गृहात् निर्गच्छति ।
अधि + गम् to acquire = दत्तः श्रियमधिगच्छति ।
उद् + गम् to rise up = धूम उद्गच्छति हर्म्यतलात् ।
आ + गम् to come = बन्धो ! आगच्छ ।

ग्रह = to take

अनु + ग्रह to favour = मां देवः अनुगृह्णाति ।
नि + ग्रह् to punish = अयं शीघ्रं चोरः निगृह्यताम् ।
or to check = इन्द्रियाणां निग्रहं कुरु ।

चर् = to wander

सम् + चर् to move = वने मृगाः संचरन्ति ।
अनु + चर् to follow = सतां मार्गमनुचरेत् ।
परि + चर् to serve = भवभूतिः विष्णुं परिचरति ।
आ + चर् to behave = पुत्रं मित्रवद् आचरेत् षोडशे वर्षे ।

चि = to pluck

सम् + चि to gather = कृपणः अर्थं संचिनोति ।
वि + चि search for = सीतां रामः वने-वने विचिनोतिस्म ।

ज्ञा = to know

अप + ज्ञा to deny = स ऋण मपजानीते ।

अव + ज्ञा to hate or discord = न पितर मवजानीयात्।
प्रति + ज्ञा to promise = अहं धर्माचरणं कर्तु प्रतिजाने।

तॄ = to cross

अव + तॄ to descend = रामः वृक्षाद् अवतरति।
वि + तॄ to give = राजा धनं वितरति।

धा = to contain

सम् + धा to make peace or to aim at = शत्रुणा नहि सन्दध्यात्, स शरासने बाणं सन्दधाति।
अव + धा to attend = अस्मिन् विषये क्षणमवधत्स्व।
वि + धा to do = सहसा विदधीत न क्रियाम्।
अभि + धा to speak = वत्स ! सत्यमभिधेहि।
परि + धा to put on = बालकः नवं वस्त्रं परिदधाति।
अपि + धा to cover = शिशुः कर्णौ पिदधाति।
आ + धा to produce = प्रायः प्रत्ययमाधत्ते स्वगुणेषूत्तमादरः।

नी = to lead

प्र + नी to compose = वाल्मीकिः रामायणं प्रणीतवान्।
अप + नी to remove = स तव दर्पमपनेष्यति।
अनु + नी to conciliate = कुपितं मित्रमनुनयेत्।
निर् + नी to decide = मध्यस्थः कलहमूलं निर्णयति।
परि + नी to marry = रामः सीतां पर्यणयत्।
आ + नी to bring = शीघ्रं किञ्चिद् जलमानय।

पत् = to fall

प्रणि + पत् to bow down to = शिष्यः गुरवे प्रणिपतति।
उत् + पत् to fly = विहगा उत्पतन्ति आकाशे।
आ + पत् to happen = अहो ! महत् कष्टमापतितम्।

पद् = to go

प्र + पद् to get = बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते।

उत्+पद् to be produced=दुग्धात् घृतमुत्पद्यते ।
प्रति+पद् to promise, to know=स धनं दातुं प्रतिपेदे, न स प्रतिपन्नो वर्तते ।

भू=to be

प्र+भू to arise or be able=लोभात् क्रोधः प्रभवति, न चित्रोद्ग्राहे मणिः प्रभवति न तु मृदां चयः ।
परा or परि+भू to defeat=सबलो दुर्बलान् पराभवति or परिभवति ।
सम्+भू to be possible or अपमुपायः संभवति ।
to happen =भाग्येनेदं संभवति ।
to be born संभवामि युगे-युगे (गीता)
अनु+भू to feel=त्वं स्वदोषेण दुःखमनुभवसि ।
अभि+भू to defeat=कस्त्वामभिभवितुमिच्छति ।
उद्+भू to be born=पापात् नाश उद्भवति ।

मन्=to think

अनु+मन् to permit=त्वां गमनाय अनुमन्ये ।
अव+मन् to disregard=प्रियम्वदा निर्धनमवमन्यते ।

मन्त्र्=to consult

नि+मन्त्र् to invite=व्रतमुद्याप्य भोजनाय विप्रान् निमन्त्रयेत् ।

रुह्=to grow

प्र+रुह् to grow=न पर्वताग्रे नलिनी प्ररोहति ।
अव+रुह् descend=सैनिकः अश्वात् अवरोहति ।
अधि+रुह् to ascend=सरोकुजमारी वृक्षमधिरोहति ।
आ+रुह् ascend=राजा हस्तिनमारोहति ।

लप्=to speak

अप+लप् to conceal or to tell a lie=सत्यमपलपति चौरः ।

वि + लप् to lament = कौसल्या विलपति ।
आ + लप् to talk = कथमद्य मां न आलपसि ।

वद् = to speak

अप + वद् to censure = गुरुं नापवदेत् ।
वि + वद् to quarrel = मूर्खाः विवदन्ते ।
परि + वद् to speak ill = कमपि न परिवदेत् ।

वह् = to carry

उद् + वह् to marry = कन्यां राम उद्वहति ।
आ + वह् to produce = महदपि राज्यं सुखं न आवहति ।

वृत् = to be

प्र + वृत् to commence = ततः युद्धं प्रवृत्तम् ।
अनु + वृत् to follow = भृत्यः प्रभुचित्तमनुवर्तते ।
नि + वृत् to abstain from, or to return = पापात् निवर्तते
ग्रामं गत्वा निवर्तते ।
परि + वृत् to turn round = चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च
सुखानि च ।
आ + वृत् to go round = तैलकस्योक्षा तैलयंत्रं परितः आवर्तते ।

सद् = to go

प्र + सद् to favour = भगवन् ! प्रसीद ।
अव + सद् to be weary = पान्थः दूर गमनेन अवसीदति ।
वि + सद् to be sorry = मा विषीद हितपाल ?
नि + सद् to sit down = भवान् अत्र निषीदतु ।
आ + सद् to get = स शनैः शनैः गृहमाससाद ।

सृ = to go

प्र + सृ extend = शिवदत्तस्य कीर्तिः प्रसरति ।
अप + सृ to go away = त्वमस्मात् स्थानाद् अपसर ।
अनु + सृ to follow = स शिष्यः गुरुमनुसरति ।

निर्+सृ to come out=क्षताद् रक्तं निःसरति।

स्था=to stay

प्र+स्था to set out=राजा राधारमणमन्दिरं प्रतस्थे।
सम्+स्था to die=अनशनेन नरः संस्थास्यति।
अनु+स्था to do=यत्नेन विश्वनाथः कार्यमनुतिष्ठेत्।
अव+स्था to remain=चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे।
उत्+स्था to stand up=जवेन पीठादुदतिष्ठदच्युतः।

हृ=to steal, to carry

उत्+हृ to quote=अस्मात् एकं पद्यमुद्धर।
उप+हृ to offer=विश्वनाथः देवेभ्यो बलिमुपहरति।
आ+हृ to collect or to eat=स पूजार्थं पुष्पाणि आहरति,
विप्रा पक्वं भक्ष्यमाहरन्ति।

Some Proverbs and Choice Quotations in Sanskrit.

1. अङ्गारः शतधौतेन मलिनत्वं न मुञ्चति।
   Black will take no other hue.
2. अधिकन्तु न दोषाय।
   The more the better
3. अभ्यासाद् जायते नृणां द्वितीया प्रकृतिः शनैः।
   Habit is second nature.
4. अयमपरो गण्डस्योपरिपिटकः संवृत्तः।
   This is like a fresh boil grown upon another boil.
5. अल्पविद्या भयङ्करी।
   A little learning is a dangerous thing.
6. अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।
   As you sow so shall you reap.

7. अविज्ञातेऽपि बन्धौ हि बलात् प्रह्लादते मनः ।
A sight of a relative even if unknown forces us to delight.

8. अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयङ्करः ।
Even a favour of a capricious man is to be dreaded

9. असह्यं ज्ञातिदुर्वचः ।
Abuse from a relative is intolerable.

10. अहिंसा परमोधर्मः ।
Love is the best religion.

11. आतुरे नियमो नास्ति ।
One in fix knows no law.

12. आपातरम्या विषयाः पर्यन्त परितापिनः ।
Things which please us most at the outset end in misery.

13. आ मृत्योः सेव्यतां हरिः ।
God should be worshipped till death.

14. कर्मणा बाध्यते बुद्धिः ।
Business impedes knowledge.

15. कालस्य कुटिला गतिः ।
Crooked is the course of time.

16. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।
Everything looks well in a beautiful shape.

17. कीर्तिर्यस्य स जीवति ।
It is fame that immortalizes a man.

18. क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते ।
Labour, when it bears fruits, invigorates the man into fresh tasks.

19. कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ।
Weakness is never attended with frieindliness.

20. गण्डूषजलमात्रेण शफरी फर्फरायते ।

अथवा

अर्धोघटो घोषमुपैति नूनम् ।

The ferry makes a great stir in shallow water.

21. गतं न शोचन्ति हि बुद्धिमन्तः ।
Let by-gones be by-gones.

22. चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानिच ।
Change of fortune is the lot of life.

23. छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति ।
Misfortune never comes alone.

24. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ।
Destruction awaits those that are born.

25. जानीयात् व्यसने मित्रम् ।
Adversity is the touchstone of friendship.

26. दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी ।
Poverty destroys all virtues, or An empty pocket is the worst of crimes.

27. दुःखस्यानन्तरं सुखम् ।
Pleasure follows pain.

28. दुर्लक्ष्यचित्रा महतां हि वृत्तिः ।
The actions of the wise do not betray their aims.

29. सर्वमर्थेन सिद्ध्यति ।
Money leads to success in everything.

30. न केवलं यो महतोऽपभाषते, शृणोति तस्मादपि यः सपापभाक् ।
Not only he alone, who blames the honest is wrong but also he, who hears doing so.

31. न तु सद्योऽतिनीचस्य दृश्यते कर्मणः फलम् ।
The consequence of an evil work is not seen forthwith.

32. न दुःखं पञ्चभिः सह ।
Sorrow shared by others is bereft of its sting.

33. न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् ।
A gem is to be sought after, but it seeks nobody.

34. न वृथा शपथं कुर्यात् ।
Do not swear in vain.

35. न हि सुखं दुःखैर्विना लभ्यते ।
No pains no gains,

36. नह्यमूला जनश्रुतिः ।
There is some foundation in a widely current rumour.

37. येन साधारणी वृत्तिः स वै शत्रुरितिस्मृतः ।
Two of a trade can never agree.

38. विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः ।
They are truly wise whose passions are not stirred even in the midst of temptations.

39. विना पुरुषकारेण न च दैवं सुसिद्ध्यति ।
God helps those who help themselves.

40. विलम्बे कार्यहानिः स्यात् ।
Delay is dangerous.

41. विषकुम्भं पयो मुखम् ।
A honey tongue, a heart of gall.

42. विषस्य विषमौषधम् ।
Poison is the remedy for poison.

43. वीर भोग्या वसुन्धरा ।
Might is right.

44. वृद्धस्य वचनं ग्राह्यम् ।
The words of the aged are always acceptable

45. शत्रोरपि गुणा वाच्याः ।
Give the devil his due.

46. शरीरं वा पातयेयं कार्यं वा साधयेयम् ।
To do or to die.

47. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।
The body is the chief means for the practice of virtue and religion.

48. श्रेयांसि बहु विघ्नानि ।
There is many a slip between the cup and the lip.

49. संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ।
Virtue aud vice are contagious.

50. संहतिः कार्यसाधिका ।
Union is strength.

51. सर्वः कान्तमात्मानं पश्यति ।
Every mother thinks that all her geese are swans.

52. सर्वः सर्वं न जानाति ।
Everybody does not know every thing.

53. सर्वः स्वार्थं समीहते ।
Everybody looks for his own interest.

54. साहसे श्रीः प्रतिवसति ।
Fortune favours the brave.

55. शूर्पवत् दोषमुत्सृज्य गुणान् गृह्णन्ति साधवः ।
The virtuous sift the good from the bad as a winnowing fan separates the chaff from the grain.

56. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।
Truth is seldom pleasant.

वाच्य (Voice)

संस्कृत में प्रधानतः तीन वाच्य (Voice) हैं—(१) कर्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाववाच्य।

कर्तृवाच्य (Active Voice)

कर्तृवाच्यप्रयोगे तु प्रथमा कर्तृकारके।
द्वितीयान्तं भवेत्कर्म कर्त्रधीनं क्रियापदम् ॥

अर्थ—कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। जैसे—
रामो गृहं गच्छति। इत्यादि।

कर्मवाच्य (Passive Voice)

कर्मवाच्यप्रयोगे तु तृतीया कर्तृकारके।
प्रथमान्तं भवेत्कर्म कर्माधीनंक्रिया पदम् ॥

जब सकर्मक धातुओं का कर्ता तृतीया विभक्ति में और कर्म प्रथमा विभक्ति में होता है, तथा क्रिया कर्म के अनुसार होती है, तब वह कर्मवाच्य कहलाता है। जैसे—कुम्भकारेण घटः क्रियते ॥

भाववाच्य

कर्माभावो भाववाच्ये तृतीया कर्तृकारके।
क्रिया प्रथमपुरुषस्य वचनैकानुसारिणी ॥

अर्थ—जब अकर्मक धातुओं का कर्ता तृतीया विभक्ति में हो, और क्रिया प्रथम पुरुष एकवचनान्त हो तो भाववाच्य होता है। अकर्मक धातुओं का ही भाववाच्य होता है।

जैसे—कृष्णेन सुप्यते। इत्यादि।

कर्मवाच्य बनाने के कुछ नियम

(१) भाववाच्य या कर्मवाच्य और (कर्मकर्तृ वाच्य) की क्रिया सदा आत्मनेपद होगी। लट्, लङ्, लोङ् और विधि लिङ् इन लकारों में धातु के आगे य (क्) जोड़ा जाता है जैसे—दृश् + य + ते = दृश्यते। रामेण चन्द्रः दृश्यते।

(२) निन्द्, नन्द्, स्पन्द, वन्द, आदि धातुओं को छोड़कर शेष धातुओं की उपधा के नकार का लोप हो जाता है। जैसे बन्ध् = बध्यते, शंस् = शस्यते, मन्थ = मथ्यते इत्यादि।

(३) णिजन्त प्रेरणार्थक (Causative) धातु के णिच् के "इ" का लोप हो जाता है। जैसे—'कृ' का कारि = कर्तृ वाच्य में = कारयति और कर्मवाच्य में कार्यते।

(४) धातुओं के य, व, र के स्थान में क्रमशः इ, उ और "ऋ" हो जाते हैं। जैसे—यज्—इज्यते। व्यध्—(व + इ + ध्यते) = विध्यते। वच् = उच्यते। वद् = उद्यते। वप् = उप्यते। स्वप् = सुप्यते, वह् = उह्यते वस् से उष्यते। प्रच्छ से पृच्छ्यते। ग्रह से गृह्यते। सृज् = सृज्यते।

(५) दा, धा, मा, हा, गै (गा) सो (सा) स्था, पा (पीने के अर्थ में) ये धातुएँ कर्मवाच्य में ईकारान्त हो जाती हैं। दीयते। धीयते। मीयते। हीयते। गीयते। सोयते। स्थीयते। पीयते। इत्यादि।

(६) कर्मवाच्य में एक स्वर वाली धातुओं के इ, उ को दीर्घ कर देते हैं। जि—जीयते। चि—चीयते। स्तु—स्तूयते। नु = नूयते।

(७) धातुओं के अन्तिम ऋ को रि कर देते हैं। मृ = म्रियते। कृ = क्रियते। हृ = ह्रियते।

(८) धातुओं के अन्तिम ॠ को 'ईर्' भी कर देते हैं। जैसे तॄ = तीर्यते। दॄ = दीर्यते।

(९) कर्तृवाच्य में दृश् , पा, स्था, आदि धातुओं के स्थान पर जो पश्य, पिब, तिष्ठ, आदि होते हैं, वे कर्मवाच्य या भाववाच्य में नहीं होते। इसलिए असली धातुओं के आगे ही 'य' जोड़कर 'ते' आदि जोड़ते हैं। जैसे दृश् = दृश्यते। पी = पीयते। स्था = स्थीयते। गम् = गम्यते।

(१०) भाववाच्य या कर्तृवाच्य से बनी धातुओं के रूप दिवादिगण की आत्मनेपदी युध या मन् धातु से मिलते हैं। केवल ऊपर लिखे विशेष परिवर्तनों पर ही दृष्टि रखनी चाहिए। उदाहरण के लिए कुछ धातुओं के कुछ लकारों के एक-एक रूप दिये जाते हैं। इसी प्रकार अन्य धातुओं के रूप भी बनाने चाहियें—

धातु	लट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
भू	भूयते,	भूयताम्,	अभूयत,	भूयेत।
हस्	हस्यते,	हस्यताम्,	अहस्यत,	हस्येत।
वद्	उद्यते,	उद्यताम्,	औद्यत,	उद्येत।
पच्	पच्यते,	पच्यताम्,	अपच्यत,	पच्येत।
स्मृ	स्मर्यते,	स्मर्यताम्,	अस्मर्यत,	स्मर्येत।
जि	जीयते,	जीयताम्,	अजीयत,	जीयेत।
हृ	ह्रियते,	ह्रियताम्,	अह्रियत,	ह्रियेत।
शक्	शक्यते,	शक्यताम्,	अशक्यत,	शक्येत।
भक्ष	भक्ष्यते,	भक्ष्यताम्,	अभक्ष्यत,	भक्ष्येत।
चुर्	चोर्यते,	चोर्यताम्,	अचोर्यत,	चोर्येत।

SECTION I—ENGLISH

Exercise 1

कर्ता व कर्म

I salute gods. He bows to his teacher. We speak the truth. He tells a lie. They carry fruits. The teachers lead boys. The king is very kind. He loves men. They go to a forest. The fire burns the forest. The tigers live in caves. The birds live in the nests. The trees fall down. The parrots prattle. The wise know the reality.

Exercise 2

The king conquers his foes. The boys run fast. Why do you go to forest ? We two often walk in the jungle. Why do you go to theatre ? Two cooks cook rice and vegetables. His father knows the secret of the Shastras. She fetches water from a well. The bees return to the lotuses. Is he not my brother ? We know our duty. He does not worship gods.

Exercise 3

Stars shine in the sky. A cowherd dwells in a hut. Poets extol the exploits of kings. Saints live in dens. Two boys stand on the sea-shore. God is the lord of the universe. Trees grow in

the forest. The farmer sows the seed. The sun rises in the east. Two sages came to the school. They take away books in the hands. All creatures walk on foot. Animals live on the grass.

Exercise 4

(4th Conju.)

He gets angry without cause. The sea becomes agitated. Saints remain calm. They do not satisfy their parents. They err from their duty. The cattle perish for want of fodder. He walks on the road with two friends. He nourishes the deer with grains of rice They never become irritated. He gets weary by walking fast. The animals faint in the hot sun. The mother nourishes her children. God pardons His devotees. She dances in the palace before the king. We are pleased with our friends. The teachers get angry with boys of bad conduct. The wicked are mad after wealth. Rama and Vishnu are satisfied with those fruits.

Exercise 5

(Tenth Conju.)

The teacher tells stories to his students. The thief steals away the wealth. Ascetics meditate on God and their master contemplates the truth.

Sincere devotion pleases the Almighty. Radha adorns Krishna with flowers. The kings worship the sages. They wash their hands and feet. Bad boys steal the books of the good. The maid-servant washes the utensils. He counts mangoes. The farmer pleases his master. Sages teach their students in the morning. He beats his servant. I do not mind his angry words.

Exercise 6

Shop-keepers weigh the corn correctly. Pious men worship gods every day. The rats eat away rice and corn. The woman beats the cat with a stick. Pupils recite Vedas in the morning. They do not count coins in the box. The two poets publish these books. She washes her hands. He arranges books in the school room. They arrange pots in rows. The teacher contemplates the secret of the Shastras. We do not count upon the disease of the body. He steals the ornaments from boxes. The sons please their parents. The tigers eat the flesh of horses. Goldsmith weighs gold in tolas. Why do you mind his words ?

Exercise 7

(Atmanepada, Conjus. 1, 6, 4, 10)

Krishna examines the students in Grammar. Rama begins Nyaya Shastra this morning.

Ramadevi sports in the garden every evening. Yamuna, the daughter of Suryadeo, learns logic. Wise parents strive their best for the welfare of their progeny. The progeny too return in exchange the debt they owe to parents. Stars and planets shine in the sky at night. Wind, however stormy it may blow, cannot blow up the mountains from the spot. Thieves tremble with the fear of punishment. The disc of the moon decreases in the dark half and increases in the bright half of every month. Patriots serve their motherland with zeal and sincerity. All tall trees bear cool shade to travellers. Enemies do not rejoice at this event. Teachers aceept respect from their students. Students hope to get sound advice.

Exercise 8

'लट् प्रयोग'

Farmers reap the fruit of their labour. Brahmins wash their hands after meals. Krishna sees Radha dancing in the Rasa sports in the autumn. Udhava and Baldeo taste the sweets offered by Yashoda, mother of Krishna. Ascetics strive and meditate for absolution in the recesses of forests. Kings of noble heart, forgive the faults of servants of good conduct. Parrots sit on the top of lofty trees. The

general orders the army to march on to the east of the enemy's camp. Sometimes people speak dangerous truth hurting the feelings of others. The wicked boast of their own deeds. The prudent men see things minutely, test them and then accept or reject them. Goldsmith in the presence of a merchant weighs gold in a balance with tolas. The sun shines by day and the moon at night, but the lightning flashes only in the rainy season. They die instantly at the stroke of the arrows shot by their enemies. Birds fly in the sky early in the morning. They fly so high as they can go up. Peacocks dance on the mountain.

Exercise 9

(Passive Voice—(Ex. 9 & 10.)

The teacher is saluted by pupils. The leader is honoured everywhere.

A snake is killed by a mungoose. A deer is seen by a tiger in the forest. Kings are extolled by poets. Wicked persons are punished by God. You are served by Mohan (मोहन). Good men are always protected by God. Both of you are required by your friends. Sons are advised by (their) parents. A rat is being taken away by a cat. Our actions are always seen by a boy. Horses are adorned with ornaments. The water

rani (इन्द्राणी) is the wife of Indra (इन्द्र). Sita (सीता) brings flowers for the worship of Parvati (पार्वती). The queen gives a gold ornament to (her) maid. There are many fish in the water of the Godavari (गोदावरी). In the caves of the Himalayas (हिमालय) there are sages. Husbands sometimes do not endure the rudeness of their wives. The maid-servant praises the modesty of her queen. Shakuntla (शकुन्तला) is followed by (her two female) friends. There is always sweetness in the speech of good men. The beauty of the moon-light captivates the mind. Rama (राम) obeys the order of his mother Kaikeyi (कैकयी). Lovers sport in the moon-light with their sweethearts. In summer king plays in the water of the rivers. They two sit on a stone under the shade of a tree. The desires of men are fulfilled by the worship of gods. Women enter the bower of creepers. The queen is served by her two maids. Deities are worshipped in the house of pious people.

Exercise 13

(*Imperfect past* (लङ्) *Ex. 14 and 15*)

They went to Benares (वाराणसी) and saw the temple of Shiva (शिव) near the Ganges. Sita (सीता) beheld the golden deer in the forest. Gopal (गोपाल) beat the snake with his stick. The

boy hit a bird with arrows, The Yaksha (यक्ष) lived on the Ramgiri (रामगिरि) mountain for one year. Messengers reached Ayodhya (अयोध्या) in a chariot. Did you see the man with a sword ? The queen gave two ornaments to her maid. When did the boy return from home ? Did he not bring my books ? Rama (राम) was respected everywhere on account of his qualities. In ancient days kings protected their subjects justly. Kalidas (कालिदास) extolled the merits of Raghu (रघु) in his poems. Arjun (अर्जुन) obtained many boons from (the) gods. The thief was punished by the king's order. By favour of Krishna (कृष्ण) Arjun (अर्जुन) conquered his enemies. We two read newspapers in the library. A thief entered into the house at night. Abhimanyu (अभिमन्यु) discharged arrows at soldiers who surrounded him.

Exercise 14

The two clever students were examined in Nyaya and were found expert. Lakshmana rejoiced when he saw Bharat coming to him in (पंचवटी). You always pleased your teachers by good conduct and gentle benaviour. The queen followed by two servants entered the garden to enjoy the evening breezes. Yudhisthir ascended heaven by the vow of truthfulness at all costs.

They dived in the river even though it was biting cold in winter. You two swam across the big rivers.

Exercise 15

(*The Imperative Mood* (लोट्) *Ex. 15, 16*)

Boys, go to the garden and bring flowers. God protects you from miseries. Let us read our books to-day. Let them cross the Ganges by means of a boat. Let not the hunter kill the deer in the forest. May you get reward for your exertion. Let the boys play with their friends. Give your clothes to the poor. Boys, wash your hands and feet, and come here. Let them fight with their enemies with swords. Let us not fight with our brothers for a share of our father's wealth. Let us forgive the faults of our friends. Let not the child slip from your lap. Let your mother wash your hands with cold water. Let us conquer our enemies in battle by means of arrows. Let the man reside in your house for ten days. May the king get a son by your blessing. Let the boys be punished for their impudence. May the sons please their father and mother. Let him give a present of flowers to his teacher. Show me the way to the house of Krishna (कृष्ण) in द्वारिका ।

Exercise 16

May men obey the commands of God. Let the two cows be brought to the village. May your enemies be destroyed in battles. Children, taste the sweetmeats with your tongue. May the glory of your virtues shine for ever. Let the birds fly from their nests. Let thieves be punished for their wickedness. Always rejoice at your friend's prosperity. May men always speak the truth. May the rich give coins to the poor. Let your brother forgive faults of his servants. May the subjects pray for the welfare of their king. Let the messengers be called back from Kashi (काशी) Sit here on the stone under this tree. Let the servant fill the pot with water. Do not shut your eyes ; look at the picture. May you both be successful (उत्तीर्ण) in your examination. Let the door-keeper take the parrot to the king. May people get wealth and be prosperous. Let the boys count the mangoes and books. Please give me the books with your own hand. God save the learned men.

Exercise 17

Nouns ending in ऋ M. F. N.

The father (पितृ) asked his daughters (दुहितृ) 'about the sacrificial priests' (होतृ) advice. The

sisters (स्वसृ) of Mandhatri went home just after their brothers (भ्रातृ) arrived there. The daughters of Dravida leader (नेतृ) scolded them before their husbands. The sun (सवितृ) rises in the east and sets in the west, traversing (आक्रम्) the whole sky. The grandson (नप्तृ) of Aja newly decorated the capital Ayodhya according to his taste. The husbands (भर्तृ) of the Rajput ladies honoured the charioteers (सूतृ) for their skill. The loud singer (उद्गातृ) sang two Vedic hymns in the same tune at Jyotistom (ज्योतिष्टोम) The administrator (प्रशास्तृ) of the Province was wise and learned in Shastras. The mother-in-law of Rama was much pleased when the Pinak was broken. The jackals (क्रोष्टृ) howl loud and shrill in dark nights to threaten the travellers. Father-in-law and mother-in-law both deserve honour and respect from son-in-law (जामातृ).

Exercise 18

The people have full confidence in their honest and prudent leaders (नेतृ). The assistant priest (पोतृ) offers offerings to the sacrificial fire as directed by (होतृ). The mother (मातृ) of Rama and that of Bharat are aggrieved at this news. The doers (कर्तृ) of the sacrifice are waiting for the donors (दातृ) in the hall. Enough of anger towards those who speak (वक्तृ) the truth to the listeners (श्रोतृ)

(*The Potential Mood* (विधिलिङ्) *Ex. 19 & 20*)

Exercise 19

Men should not forget their friends in their adversity. Govind should go to the market and bring books. You should worship fire. Early in the morning every one should get up and study. The chamberlain proclaims that all should burn lamps this night. You should mind your own business. King should first conciliate their enemies by sweet words and presents. The Kshatriyas (क्षत्रिय) should protect all men by power of their arms. You should honour your teacher and elderly persons. You should never steal anything. We should not forget God in prosperity. You (two) should always try for the welfare of your friends. We two should learn Logic from our teacher. None should wish for self-praise by ruining others. May he long enjoy the company of the sage. You should not become agitated without cause. Men should wash their hand and feet when they return home. You should take courage and fight with your enemies. Sons should please their parents by their good conduct.

Exercise 20

You should not go to Ayodhya today. You should either stay here for five days or you

should go back, for your stars are not favourable to-day. The greedy-man wished that he should have all the eggs at once. Dasharatha (दशरथ) said to Kaikeyi (कैकेयी) the world may live without sun, and crops may grow without water, but I cannot live without Rama. The hare said to himself, "why should I care for any thing when death is certain? I shall go slowly." You would simply laugh if I tell you that story. If there be no water, we should all die. You should never drink wine, nor should ever gamble. Father, should I go to school? Brother says that he will take me with him. What else should the poor woman do? She has lost her husband and her only son and she has no one else. The king ordered that the rogues should be beaten. The king led his soldiers out of the city that he might fight with his enemy. He gave much money to his sisters that his parents might be pleased. Would the poor Brahmans (ब्राह्मण) get any money if they should beg through the town?

(*The Future Tense* लृट *from 21 to 23.*)

Exercise 21

They will take the permission of their preceptor before starting from Kanauj (कान्य कुब्ज). We shall all rejoice at our king's victory. These

girls will learn singing from the songster. You will beat the thieves with the stick. The father will give sweetmeats to his sons and daughters. We (two) shall guard our gold from these thieves. The travellers will go to Kashi by that path. We shall fill these two pits with earth. No one will expect alms from the miser. Gopal will give that delicious mango to his friend. They will dwell at Kashi for study. My mother will narrate all these stories to me. Your servants will return from the village in four days. You two will teach this pupil the principles of logic. We two shall live with you for a long time. Tomorrow we shall play with our friends in the garden. You shall see many wolves in the forest if you accompany us. Our king will fight with his enemy and will conquer him. We shall go near that village and preach loyalty and patriotism to the people.

(*Future*)

Exercise 22

Three days after will be the festival of the birth of Rama ; I shall go to Ayodhya ; will you accompany me ? Harish (हरीश) will go (गम्) to the Himalayas to take a bath in the sacred river, the Ganges, move about and see the beauty of the mountains. I shall teach you to read Gita (गीता)

Will you read a chapter every day in the morning? When will they send me to England? The guests will visit Benares and then come to you. Will he hope to go with you to the capital? The owner of the garden will get angry with you if you pluck the flowers without his permission. He will remember with gratitude the service done to him. Our king is very brave; he will defeat his enemies and establish his power in all the directions. Our friend will help us and cut off this net. What will you answer if your master asks you this question? My dear son, out of love for you I shall tell you what is good for you. You will please all the subjects by your good conduct. Get up, you fool! king Dasharatha will instal Rama as the crown prince. What will you do when he becomes the king? Rama will serve me just as his mother. Bharata will be expelled from the kingly line. You will live as a maid-servant. You will enter the apartment of anger and when your husband comes, you will ask him to give you your boons.

Exercise 23

I shall get up early in the morning and saluting the sun, recite prayers. I shall beat you with my stick if you do not follow my advice. These pictures are well drawn and painted; the

king and the queen will praise him for his skill and give him a reward. Your enemy is born and is safe in a house. He will kill you when the time comes. You will die and go to hell. You will leave all your possessions here. Rama (राम) is God incarnate. He will cross the ocean, fight with you and kill you. He will liberate Sita (सीता). I shall make Bibhishana (विभीषण) the king of Lanka (लङ्का) and if Ravana (रावण) comes to me for protection, I shall give him the kingdom of Ayodhya. He will even enter fire for you. He will even give up his own life to please you so said Manthara (मन्थरा). Tell me whatever you want. I shall at once do it. Let Rama (राम) live in the forest for fourteen years. How shall I say a harsh thing to him? You will be banished to-day. She will tell you. At the king's bidding I shall jump into the fire, eat virulent poison or drown myself in the sea. Kali (कलि) will live in you with great pain on account of my poison. Had he not extinguished the fire, it would have burnt the whole city. When will you begin to construct a house for you?

Exercise 24

(*Present Participles* शतृ *or* शानच्)

स्मरण रक्खोः—शतृ और शानच् यह दोनों जिसके अन्त में लगते हैं तो शतृ का 'अत्' और 'शानच्' का 'आन' बाक़ी रह जाता है

पुल्लिङ्ग में 'अत्' प्रत्यय जिसके अन्त में लगे उसके रूप 'भवत्' के समान भवान्, भवन्तौ, भवन्तः की तरह चलते हैं। तथा 'आन' प्रत्ययान्त के 'राम' की तरह चलते हैं। उदाहरण:—'मैंने तीन भागते हुए मृगों को देखा' इस वाक्य में 'भागते हुए' यह द्वितीयान्त है—यहाँ 'को' जो द्वितीया का चिह्न है वह छिपा हुआ है अतः "अहं त्रीन् धावतः या धावमानान् मृगान् अपश्यम्" या 'मया त्रयः धावन्तः 'या' धावमानाः मृगाः दृष्टाः' यह अनुवाद हुआ इसी प्रकार से और भी समझो—तथा नीचे लिखे वाक्यों का अनुवाद बनाओ।

While going home the man found two rupees in the way. We saw boys going to school. You saw Gopal (गोपाल) drinking water in his house. While living in the forest Rama (राम) and Lakshman (लक्ष्मण) destroyed many demons. We two saw tigers coming down from the top of the mountain. The general saw the soldiers running away from the battlefield. The minister went to the king in a carriage drawn by four horses. Rati (रति) looking at the dead body of her husband and remembering his good qualities wept for a long time. Krishna (कृष्ण) while dwelling in the house of Vasudeo (वासुदेव) saw Narada (नारद) descending from the sky. Seeing a lion in the forest Govind mounted his horse and ran away. The hunter, ascending the tree saw many birds on its branches.

Exercise 25

In this extremity the beaten followers of the

captive king fled for help to the Pandavas. For the sake of the honour of the family, and particularly for the protection of the ladies of their house, Arjuna and Bhima with the twins came, by the magnanimous command of Yudhishthira, to the rescue of their kinsmen, and after performing marvellous feats of war obtained the release of the crest-fallen Duryodhana, whose bitterness against his cousins was only increased by this humiliating and never-to-be-forgotten incident.

Exercise 26

The wicked demon carried off his beauteous wife for whom he had conceived an ardent passion and accomplished his purpose with the assistance of मारीच. Several days afterwards Hanumat came to know that she was in Lanka and persuaded Rama to invade the island and kill the ravisher. The monkeys built a bridge across the ocean over which Rama with his numerous troops passed, conquered Lanka, and killed Ravana along with his whole host of demons. Rama, attended by his wife and friends, triumphantly returned to Ayodhya where he was crowned king by Vasishtha. He reigned long and righteously and was succeeded by his son Kusha. Rama is said to be the seventh incarnation of Vishnu.

Exercise 27

In my former birth I was the son of a learned Brahmin and was well versed in Vedas. A prince proficient in the science of the bow was my friend and companion. As a result of constant association I became his equal even in his profession. We once happened to go a-hunting, in the course of which he killed many an animal in the forest. Tempted by his performances I let go an arrow myself, which, ill-lucked as I was, hit an innocent ascetic absorbed in meditation. Pierced through in his very vitals by my unfailing arrow and roused, of a sudden, from his still and sublime blissfulness, he lost control over his feelings and pronounced on me, a curse: "Be a hunter, heartless as you are, and take a low birth." I was soon overcome, dropped on my knees, fell to his feet and poured over him my sorrow so that at length the soft-souled sage recovered tenderness and uttered, by way of relief, a blessing that even in my low birth I should be endowed with the knowledge of self.

Exercise 28

दशरथ, the aged monarch of अयोध्या, had three queens, but no son. He pined for progeny, and his anxiety increased as old age grew upon him. In this extremity, he was advised by his

preceptor वसिष्ठ to perform अश्वमेध. A sacrificial horse, the emblem of unlimited sovereignty was accordingly let loose by orders of the aged king. There was no body to dispute the sovereignty of the great sun-race of अयोध्या; and the horse was brought back to the sacrificial ground at the end of one year.

Excrcise 29

Alone in the vast forests peopled by wild beasts and infested by thieves and म्लेच्छ tribes, poor bewildered दमयन्ती wandered about in quest of नल, asking in her trouble the fierce tiger and the silent mountain to tell her where her lord had gone. After wandering about for three days and three nights, the unfortunate queen came to the delightful asylum of some ascetics, and entering it fearlessly but with great humility, she was welcomed by the holy men, who, struck by her beauty, enquired whether she was the presiding deity of the forest, the mountain or the river. दमयन्ती explained her situation and received from the ascetics most comforting assurances of early reunion with नल and a great future happiness.

Exercise 30

As though to make the lesson more impressive it was given on a field of battle. अर्जुन the

warrior prince, was to vindicate his brother's title and to destory a usurper. It was his duty as prince, as warrior, to fight for the acquisition of his brother's heritage. To make the contest more bitter, loved comrades and friends stood on both sides wringing his heart with personal anguish and producing a conflict of duties as well as physical strife. Could he slay those whom he owed love and duty, and trample on ties of kindred? To break family ties was a sin; to leave his brother's lawful subjects in the bondage of another was a sin. Where was the right way? Justice must be done; else law would be disregarded; but how slay without sin? The answer is the burden of the book. Have no personal interest in the event; carry out the duty imposed by the position in life.

Exercise 31

The lion was dead and all the animals flocked to his den to mourn with the lioness, his widow, who was making the mountains and the forest resound with her roars. Having paid their respects to her, they went on to elect a king, the crown of the deceased lion being set forth in the midst of the assembly. The lion's cub was too young and too weak to take the royal sway over so many high-spirited animals. "Give me time

to grow" said he "I shall know well how to reign and to make myself feared as my father did before me. In the mean-time I will study the history of the great deeds of my father to the end that I may one day equal him in glory."

Exercise 32

Ashvatthama decided to attack the sleeping host of the sons of Pandu, and despite the efforts of Kripa to dissuade him, he went to the entrance of their camp. Entering it at dead of night, he slaughtered his sleeping enemies, Dhrishtadyumna first of all, with the sons of Draupadi. Returning to the dying Duryodhana, with Kripa and Kritavarman, he told him of the destruction of his foes. The agonising king was supremely satisfied and with the word; "Good be to you all! All of us will again meet in heaven," he quietly breathed his last. Yudhishthira, on hearing the grievous news sent for Draupadi, who, broken-hearted took a vow to die if Ashwatthama were not slain, and the gem on his head born with him, were not brought to her.

Exercise 33

A certain blind man who had no property but an earthen pot and a tattered blanket once went to a temple and in sheer despair resolved to end

his weary life by abstaining from food altogether, devoting himself to prayers all the while. There the Deity being pleased showed himself before him and offered to grant him a boon. The blind man shrewdly inquired who he was, and on being told that he was the great God, continued "But how can I believe it unless I see you with my own eyes?" The Deity in a moment restored his sight. He then knelt down and prayed that he should live to see his grandson in the enjoyment of kingly powers. Thus he wisely secured by his one wish sight, long life, and prosperity.

Exercise 34

One day a prince visited the chief prison in the country over which he ruled. He ordered the prisoners to be brought before him and asked them, one by one, how they came to be in prison.

The first said that he had done no wrong, but that the chief witness against him had given false evidence. The second said that the judge had put him in prison, because he owed him a grudge. The third said that he had been found guilty through mistake. The fourth said that he had been taken for some other man. For these reasons they all begged the prince to release them.

The prince then turned to the fifth prisoner and said "And why are you here ?"

"Alas!" He replied "I stole a purse and dare not ask your pardon." Then the prince said "You are not fit company for such honest men as these, who say they have done no wrong." Turning to the jailor, he said, "take off this man's chains, and send him away. He has not added to his crime the sin of telling a lie."

"A fault once denied is twice committed."

Exercise 35

While शिशुपाल was speaking thus, the exalted slayer of मधु thought in his mind of the discus that humbles the pride of असुरs. And as soon as the discus came into his hands, the illustrious one skilled in speech loudly uttered these words "Listen, ye, lords of earth, why this one has been hitherto pardoned by me. Asked by his mother, a hundred offences of his were to be pardoned by me. Even this was the boon she had asked and, even this I granted her. That number, ye kings has become full. I shall now slay him in your presence, ye monarchs." Having said this, the chief of the यदुs, that slayer of all foes, in anger, instantly cut off the head of the ruler of चेदि by means of his discus. And the mighty-armed one fell down like a cliff struck with thunder.

Exercise 36

Fie upon those who wish to afflict others without any advantage to themselves ! Do you know what such men are called ? Bhartrihari says:—"We do not know who they are that spoil others' interest with no gain to themselves." They are like dogs in the manger that would not eat grass themselves, nor allow the cows to eat the same. These human wretches are worse than brutes and deserve to be shunned. They, indeed, are noble whose earnest desire is to do good to others and resemble trees, that give shade to weary travellers and bear the heat of the sun on their own heads. 15

Exercise 37

One day a certain king, riding with his courtiers overtook a dervish (भिक्षु), who called out as they were passing "Give me a hundred pieces of silver, and I will give you a good piece of advice. The company at first paid no attention to this strange demand; but as he continued to follow them repeating the same cry, the king's curiosity was awakened, and turning to the dervish, he asked, "What advice is this, my friend, that you value at so large a sum of money ?" "Sir," he answered, "deign to give me the sum, and you shall hear it. Believe me, you shall never regret

the bargain." The king, expecting to hear something extraordinary, counted out the sum demanded by the dervish, who then uttered this weighty maxim: "Begin nothing without considering what the end may be."

Exercise 38

The courtiers smiled at the dervish, and the apparent simplicity of their master. They expected that the King would either treat the matter as a pleasant jest, or threaten the insolent dervish with punishment. But to their surprise he was neither amused nor angry. Turning to his smiling attendants he said in a serious tone, "Why do you laugh ? I see nothing ridiculous in this good man's advice; on the contrary, it seems to me most wise and salutary. This maxim shall be my rule of conduct in future ; and that it may always be before me, I shall have it engraved upon my plate, and written in distinct characters on every door and wall of my palace.

Exercise 39

One hot night in the moonlight, after going many miles in search of food, a thirsty fox came to a vine-yard full of vines. "Aha !" thought he "now I shall have a nice meal, I am glad I came

as far as this." The grapes were high up in the air, out of reach of the fox. He jumped up and tried to reach them, but could not. He jumped again and again. He jumped twenty times, but could not reach the grapes, they were too high. When the fox saw that it was of no use to try to get the grapes, he said, 'perhaps, after all, the grapes are not ripe. They look sour. So I will not jump any more." He said this because he could not get them. So when a man cannot get something he wants and pretends that he does not care, we say,

'The grapes are sour."

Exercise 40

Having married Shakuntala and having given her his ring in token of his good faith, King Dushyanta returned to his capital, while Shakuntala remained in the hermitage of her father. After this the sage Durvasa visited the hermitage of Kanva, but Shakuntala was so engrossed in thinking of her husband that she was not aware of the approach of the sage. He cursed the damsel 'You shall be forgotten by your husband.' But after a while he took pity on her and said that the curse would end as soon as Dushyant would see the ring. Shakuntala found that she was pregnant and set out for the palace

of her husband. On her way she bathed in a sacred lake when the ring dropped from her finger and was lost in the water. The King could not remember his marriage with her and so he repudiated her. Her mother came.

Exercise 41

At the very moment Harita the son of a great sage, who dwelt in the neighbouring hermitage, came to bathe in the lake. He saw me, and bade his companions take me to the shore of the lake. With his own hands he poured a few drops of water into my mouth and so brought life back to me. Having bathed and duly worshipped the setting sun, he bore me to his father's peaceful hermitage. There was seen the holy sage sitting with his disciples at the foot of a red-flowered Asoka tree. As I mused on the holy peace that seemed to reign even in the hearts of insensate beings in the happy hermitage, Harita, embracing the feet of his father, sat himself down at some little distance and all the sages turned their eyes on me.

Exercise 42

[ध्यान रक्खो The first sentence of the following exercise should be translated as follows:—"यद्यपि गुरवः बहुधा (again and again) कथयन्ति तथापि छात्रा

अद्यत्वे (now-a-days) न पठन्ति। or if Locative case is used it should be:—"गुरूणां बहुधा कथनेऽपि अद्यत्वे छात्रा न पठन्ति" निम्नलिखित सारी exercise का ऊपर लिखे प्रकार से अनुवाद करो।]

Students now-a-days do not study though teachers ask them again and again. People commit sins even when gods see them. Bhima (भीम) drank the blood of Dusshasana (दुःशासन) in the very presence of his brothers. Even when elderly ladies were present in the harem, Dusshasana (दुःशासन) dragged Draupadi (द्रौपदी) by the hair. Thirteen years having passed Yudhisthira (युधिष्ठिर) consulted Shri Krishna (श्रीकृष्ण) and it was decided that he should be sent to Kaurawas as his ambassador. Even when Bhishma (भीष्म), Drona (द्रोण) and other old relations were asking Duryodhan (दुर्योधन) to give five districts to Yudhisthira (युधिष्ठिर) he did not agree. Ashwatthama (अश्वत्थामा) rebuked all warriors who were running away from the battle-field, Dronacharya द्रोणाचार्य) being killed, thus: "When death is certain to fall upon every one of you, why do you spoil your name and fame by a retreat?" He only laughed aloud when they said that his father was dead. The pearl necklace being taken away by that lady, the saint censured the young friend. When I was thinking thus, Cupid (कामदेव) brought him under

control. As soon as I went near him and saluted, his father came.

Exercise 43

(*Use Absolutives in* क्त्वा, *or* ल्यप्)

[ध्यान रक्खो—Seeing the teacher coming into the class, the students observed silence at once. यथा :—(गुरुं श्रेण्यां आगच्छन्तं दृष्ट्वा छात्राः सपदि जोषमभजन्) Translate like this the following sentences]:—Killing my own relations in battle, I see no good coming to me. Hearing the words of Shrikrishna (श्रीकृष्ण) Arjuna (अर्जुन) decided to fight. Leaving the seat of judgment, the king went to the inner apartment. Going through this tunnel by the help of light for about two miles, you will reach a beautiful mansion. Wandering in the forest he arrived at a place where an old man was sitting. Having called all his friends, he held a meeting. Worshipping God Vishnu, muttering His thousand names and reading a chapter from Gita, he takes his food. Binding me by a rope they took me to the prison and calling me a fool they showed me some men, saying, "These are your friends" Taking leave of my parents, I left my village for Benares where I used to study. Beating him with a stick the policeman wounded him. Taking him on my back I can run even a mile. Putting on bark garments, Rama (राम)

went to the forest, taking Sita (सीता) and Laxman (लक्ष्मण) with him. Advising Ravana (रावण) thus Vibhishana (बिभीषण) went out of the court. Burning Lanka by the torch in the form of his tail and going to Sita (सीता) again Maruti (मारुति) saluted her. Hearing what he told her about the welfare of her husband, she was much pleased. Having passed so many days in festivity Dashrath (दशरथ) went to his capital. Throwing away shame, disregarding the advice, he tried to bind Shrikrishna (श्रीकृष्ण).

Exercise 44

Taking their bath in the morning Brahmans perform their adoration. Getting up hastily and pounding Dusshasan (दुःशासन) he roared aloud. Sitting down on his seat he began to lecture because he was far advanced in age. Having consoled the sons of Pandu (पाण्डु) by words of conciliation and promising to return soon, Krishna (श्रीकृष्ण) set out for Dwaraka (द्वारिका). Bringing all his enemies under his control and making them pay tributes he returned to his capital and performed a sacrifice. Having given him help in his studies he made him fit. Having accepted the money offered he abandoned the idea of invading his country. I am just returning, waiting upon Shiva. Fighting with the

demons I have killed them; so now shake off all your apprehensions. Embracing his brother he congratulated him on his success in the examination. Kissing the child lovingly he mounted the horse and disappeared. Having told how Chandraketu (चन्द्रकेतु) and Lava (लव) fought with each other, he kept silence. Having protected us from robbers you have greatly obliged us. Having smelt the flower I asked him the name of it. Cutting off the branch of the tree for making a sacrificial post, he ordered his servants to take it to the hermitage. Finding his lost friend he asked him where he had gone. Coming from a place twelve miles off he seems to be tired; give him food and drink and let him **take rest.**

Exercise 45

(Translate in Active and Passive)

What was said by him when he heard this news ? By whom was this done ? This was already known to me. Rayana (रावण) was killed by Ram (राम) in battle. Lanka was burnt by Hanumat (हनुमत्). I bought. They did this work as they were asked by their teacher. She studies Logic and Philosophy in Benares. He went to Bombay (मोहमयी) last night. The whole city was destroyed by the enemy. He has now

recovered his senses (प्रतिबुद्धम्). Brahmans are protected by kings of the warrior tribe. You have forgotten this story which was formerly told by me. This is said to be the royal road to success. Her husband being dead, she became a nun. A son was born to him whose name was Gopala. He observes a fast every Thursday. They went down to the bank of the river Ganges in order to take a bath. He mounted the horse and ran away. It is the duty of a king to help those citizens who are in calamity. This has fallen upon us all of a sudden. Do you know what should be done now? That is a very old tree. All of them were shrunk with fear when they saw him. He is a friend who does you good especially in an adversity. The king was well guarded by his strong soldiers on all sides and still he was defeated by Somdatta (सोमदत्त). Philosophers say that he, who controls his desires, is not tempted by anything, has studied everything, done everything and achieved the end of life. The ocean was agitated. The jewel was concealed by the robber. Sita (सीता) was abandoned by Rama (राम) even when he believed in her chastity because he did not want to displease his subjects. Rama (राम) got angry with the sea and began to fix his arrow when the sea was seen in a bodily form before him. He had

ecome weary and so he slept. All these fields ave been ploughed by farmers and seeds have een sown; so do not walk on them. This book s not even touched by you. What were you loing ?

Exercise 46

Try to learn something every day You hould memorise a few verses every week. I have old you the story of the greedy dog; now, boys t girls, remember that one should never be reedy. The birds said to the mouse: "Cut our onds and set us free. We have become friends nd you have well tested us." Love and honour our neighbour as you do yourself. You ave learnt your lessons and played your ames; now you may go home. Kings are ery difficult to please. You should never ook upon them as your friends. Serve as est as you can and leave the rest to your ood luck. A very cool, fragrant and gentle reeze is blowing. Soldiers must obey their eneral. Drona (द्रोण) asked him thus "Do you ee the parrot alone on the tree or the trunk, ranches, leaves, flowers and everything?" Write nswers of any five of these. May the Supreme Being protect us all. He is our father and proector. Persons blinded by passions do not strive

to understand themselves. They do not know that the individual soul, and the Supreme Soul are, as a matter of fact, one. God is one without form or quality. The dog is a faithful and useful animal. In old days he was considered unholy. Now also orthodox Brahamans look upon a dog to be unholy. A dog followed Yudhisthira (युधिष्ठिर) upto the top of the Himalaya when his wife and brothers had left him.

Exercise 47

Persons without wealth trouble their minds by hundreds of desires. How can desires be fulfilled if they do not act accordingly. Poverty is a great misery. Poor people are considered to be dead even by their relatives. But know this. It can be removed by industry. Do not be lazy. You two appear to be jealous of me. Urvashi (उर्वशी) with fascinating eyes created love in the mind of the king. He went into a bower of creepers and her elegant form stood before his mental eye. What offence is done by me so that you are observing silence? It is a thing which cannot be expounded. Here stand I eager for union with you, oh beautiful damsel! These mangoes are very delicious and juicy. Thou being defeated, thy soldiers submitted to the conqueror. Thou being a kind protector, how

would thy subjects experience adversity. Oh venerable lady, do not be bewildered. Your maid is not faithless. What is your vocation ? Halt you rascal.

Exercise 48

Fie, upon them who desire to pain others without any advantage to themselves. I do not know what name should be given to such terrible men. Those men are saints who serve others without any self-interest. Those are ordinary who do good to others with some object in view. Those are diabolical who kill the interest of others for their own good. But the poet says : "We know not who they are that spoil others' interest without any gain to themselves. Why are they created at all ?'

Exercise 49

(*Use* नाम, ननु, नूनं, दिष्ट्या)

[*N.B.* नाम = means by name, known as; indeed. I would like to know, it may be that; and pretension, shows anger and wonder, ननु = surely it is; I pray; oh ; be pleased. नूनं = positively ; certainly. दिष्ट्या = thank God, happily ; भवान् दिष्ट्या विजयेन वर्धते = I congratulate your honour upon your success.]

Happily the calamity is removed. I congratulate you upon your success in the degree exami-

nation. Thank God that your son for whom you were so very anxious returned this day after living so long in a foreign country. I am happy to see that he has become stronger than what he was when he left. Will you please do this for me ? Why ? Your honour has already proclaimed that Charudatta (चारुदत्त) is liberated and the king's brother in-law is to be impaled in his place. Dear Sir, you should certainly call me by my name even if I am your king. Because you are an old servant of my revered father. Rati (रति) said to Vasanta (वसन्त), the friend of her husband, thus : "Any husband must be waiting for me. So be pleased to take me to him as early as possible." Oh you fools you do not remember what you were taught by the teacher. Why ! you too also should go with her. How indeed could she be so very beautiful ? There lived a king named Pratap Singh (प्रताप सिंह) in this country. Pretending that he was tired and so he wanted rest. He pretended to be a saint and created many rich persons in the city.

Exercise 50

It is a wonder that even Monkeys are working here as if they are human beings. What you make bold to say this before the king of the city in which you are doing your business ? Oh,

are they proceeding to fight with me who am the son of a warrior ? Let them come and try their bravery. Well, let it be as you like. I do not mind. What may this be ? Do you stand before me pretending to be a scholar of philosophy? Why, you will please look for it in this garden ? You will surely find it It could not have been lost. "How, indeed, shall I get that jewel amongst girls.

Exercise 51

(*Use* वरं *or* न पुनः *or* न तु)

It is better to die than to associate with men who are uneducated. It is better to be thrown down from the peak of a mountain and reduced to pieces on account of falling on rough rocks; better to put one's hand into the m o u t h of a serpent having poissonous teeth; better to throw one's self on the fire and be burnt to ashes; but not to spoil one's character by doing a vicious deed. It is better to observe silence than to tell a lie It is better to have a daughter than a foolish son. Better it is to beg from door to door than to have the joy of enjoying the wealth belonging to others. Better to die than to serve.

Exercise 52

Oh my lord, I have been proud and shameless. I never remembered even in a dream the

advice given by you. This advice you have stored for me in the Vedas. How pure and nectar sweet the words are! But I never attended to these words. I have committed hundreds of sins. And still you are so kind that you take me to be your devotee. You protect me from all calamities. Even my parents do not do this, There is none more compassionate than you. There is none more intoxicated than me. I am bad. I am a vicious worthless fellow. Now from today I shall obey your commands. I shall serve you honestly.

Exercise 53

My father cannot save me, nor can my mother. Let my brother or these boys take this pen. He and I passed the time happily in city of Benares. The king and queen are very pious. I swear by all the gods that this boy is innocent. The boy said that he was going home. Health and wealth make us happy. He and I have done it. You, Sushil and Vipin should try to perform it. Either you or your youngest son can read this book. Riches are a source of innumerable miseries in this world. He who does not acquire learning in his boyhood, becomes a fool for ever. The old man said that he had not seen any deer go by that way. Kekeyi the second wife of King Dashrath asked two boons of him.

Exercise 54

Forgive my first fault, because I have done this out of ignorance. From that time there is no friendship between Ram and Gopal. During my absence she has surely through curiosity, gone out of the cottage; so, let me go soon. Friend, now remember; it was already spoken by me. That merchant being called by a servant came and bowed to the king respectfully. I am not to blame for this, yesterday we came and he too will come tomorrow. What is the use of killing so many animals for nothing? That merchant lived for several days without food or water. Hearing this the king said to him "If so go there without delay, and tell him to come to me soon with his sword; giving him required money and a horse, I shall send him to kill the demon this very day.

SECTION II—HINDI

(अकारान्त तथा इकारान्त शब्द)

अभ्यास १

(हम) ईश्वर को प्रणाम करते हैं। (वह) नगर को जाता है। चोर धन चुराता है। बाघ मनुष्यों को खाता है। लड़के पानी पीते हैं। मुनि जंगल में रहते हैं। भौंरे कमलों में रहते हैं। (मैं) पेड़ पर तोता देखता हूँ। पेड़ से फल गिरते हैं। (तुम) पुस्तक पढ़ते हो। कृष्ण आम खाता है। नौकर पानी ले जाता है। (हम दोनों) संस्कृत पढ़ते हैं। (तुम) घर जाते हो। (हम) दो बन्दरों को देखते हैं।

अभ्यास २

सिंह जंगल में घूमता है। मूर्ख वेदों का भाव नहीं समझते। (तुम) संग्राम में शत्रुओं को जीतते हो। मनुष्य (अपने) पैरों से चलते हैं। देवदत्त मन्त्रों से शिव की पूजा करता है। मूर्ख बुद्धिमानों की निन्दा करते हैं। (हम दोनों) कृष्ण की आज्ञा से घर को छोड़ते हैं। पिता लड़कों को मिठाई देता है। राम नौकरों के साथ गाँव जाता है। (वह) भिक्षुओं को फल देता है। (हम दोनों) फल के लिये प्रातःकाल बाग में जाते हैं। घोड़े सवारों के साथ मैदान में दौड़ते हैं। कृषक (अपना) धन घर में रखता है। मनुष्य अन्न से जीते हैं। आग जंगल को जलाती है।

अभ्यास ३

वृक्ष पहाड़ों पर उगते हैं। बीज खेत में उगता है। (हम) मित्रों को याद करते हैं। (तुम दोनों) दिन में कहाँ ठहरते हो ? सेवक बोझ ले जाता है। पुत्र पिता को बुलाता है। कवि श्लोकों से राजा की प्रशंसा करता है। राजा तलवार से शत्रुओं को जीतता है। राम

(दोनों) हाथों से सूर्य को नमस्कार करता है। योद्धा तलवारों को ढाते हैं। बन्दर पेड़ों पर चढ़ते हैं। नौकर स्वामी के पीछे-पीछे चलते हैं। राम का छोटा भाई पिता को याद करता है। बुद्धिमान् झगड़े को पसन्द नहीं करते। (वह) दोनों सारथियों से कहता है।

अभ्यास ४

मनुष्य धन से सन्तुष्ट नहीं होते हैं। योद्धा शत्रुओं पर क्रोध करते हैं। जंगल में मोर नाचते हैं। ग्रीष्म में तालाब सूख जाते हैं। लड़के धन के लिये लोभ करते हैं। दवा से रोग नष्ट होते हैं। (तुम) लड़कों पर क्यों क्रोध करते हो ? पिता पुत्र पर क्रोध नहीं करता है। (वे दोनों) (अपने) आचरण से नष्ट होते हैं। (तुम दोनों) अधिक धन से भी सन्तुष्ट नहीं होते हो। दण्ड के बिना शत्रु शान्त नहीं होते बसन्त में समुद्र चंचल हो जाता है। राजा की सभा में दो वेश्याएँ नाचती हैं। दुःख से मनुष्य मूर्च्छित हो जाते हैं क्या तुम रोग से मूर्च्छित नहीं होते हो ? पाठशाला में पढ़ने से (हम) थक जाते हैं। ऋषि ईश्वर के ध्यान से नहीं थकते हैं।

अभ्यास ५

पुत्रों के वचन से पिता प्रसन्न होते हैं। दुष्टों के वचन से सज्जन मूर्च्छित होते हैं। वैद्य की दवा से राम की पीड़ा नष्ट होती है। नौकरों पर राजपुत्र क्रोध करता है। मोहन मित्रों पर प्रेम करता है। गोपाल के दोनों छोटे भाई प्रेम करते हैं। क्या हम (अपने) पिता पर प्रेम नहीं करते हैं ? चैत्ररथ अर्जुन को गले लगाता है। (तुम दोनों) मित्रों को गले लगाते हो। क्या हम शत्रुओं को गले नहीं लगाते हैं ? दुष्ट भी उपदेश से शान्त हो जाते हैं। तुम सेवक के अपराध को क्षमा करते हो। चिड़िया (अपने) बच्चों को पालती है। कौआ कोयल के बच्चों को पालते हैं। चोर धनी मनुष्यों के धन के लिये लोभ करते हैं। गर्मी से पेड़ भी सूख जाते हैं। हम लोग दुःख में क्षुब्ध हो जाते हैं।

अभ्यास ६

बादल पेड़ों को सींचते हैं। तुम घर में प्रवेश करते हो। योद्धा शत्रुओं पर बाण फेंकता है। दोनों लड़के मिठाई चाहते हैं। (तुम दोनों) मोक्ष चाहते हो। (हम) धन चाहते हैं। किसान हल से खेत जोतता है। गुरु शिष्यों को उपदेश देते हैं। हम लोग मन्दिर में प्रवेश करते हैं। राम तोते को छोड़ता है। कुम्हार घड़े को बनाता है। ईश्वर संसार को बनाता है। खेल में लड़के पेड़ को छूते हैं। क्या तुम आग को छूते हो? शिष्य संन्यासी से पूछते हैं। क्या (हम दोनों) मित्रों से नहीं पूछते हैं? मोहन (अपने) हाथों से सिर को छूता है। हम आसनों पर बैठते हैं। राजा सेवकों को आज्ञा देता है। गुरु की आज्ञा से विद्यार्थी बैठते हैं।

अभ्यास ७

मनुष्य ईश्वर को पूजते हैं। राजा दुष्टों को दण्ड देता है। लड़के (अपने) हाथों को धोते हैं। चोर धन चुराता है। रोग मनुष्य को सताते हैं। पुत्र पिता को सान्त्वना देता है। तुम फल खाते हो मनुष्य डण्डे से बिलाव को मारते हैं। कवि राजा का वर्णन करते हैं। हम शिव को पूजते हैं। तू चोर को दण्ड देता है। लड़के फल गिनते हैं। व्याध जंगल में मृगों को ढूँढ़ता है। (तुम दोनों) मित्र को सन्त्वना देते हो। पुत्र (अपने) आचरण से पिता को प्रसन्न करता है। विद्यार्थी परिश्रम से गुरु को प्रसन्न करते हैं। मैं राग को नहीं गिनता हूँ। ब्राह्मण अतिथियों को पूजते हैं। मैं पानी से हाथों को धोता हूँ। तुम डण्डे से चोर को मारते हो। वेश्या गहनों से शरीर को सजाती है। कवि श्लोकों से राजा का वर्णन करते हैं।

अभ्यास ८

राम व्याकरण का पढ़ना प्रारम्भ करता है। कृष्ण अपने मित्रों के साथ खेलता है। अर्जुन अपने शत्रुओं से लड़ता है। हम अपने शत्रुओं के अभ्युदय पर आनन्द नहीं मनाते। अच्छे पिता अपने पुत्रों के

कल्याण के लिए यत्न करते हैं। चन्द्रमा का बिम्ब शुक्ल पक्ष में बढ़ता है। हवा के झोंके से पहाड़ नहीं हिलते हैं। साधारणतः बुद्धिमान ज्ञान के लिए यत्न करते हैं। अच्छे सेवक अपने परिश्रम के लिये पुरस्कार पाते हैं। चोर दण्ड के भय से काँपते हैं। सिपाही प्रेम से अपने देश की सेवा करते हैं। सेवक स्वामी की आज्ञा को मानते हैं। कभी-कभी पुत्र अपने पिता से असत्य भाषण करता है। राम का पुत्र अपने भाई के साथ सड़क पर खेलता है। वे गुरु से कर्त्तव्य सीखते हैं। शिक्षक अपने छात्रों से आदर की आशा करता है। आकाश में तारे चमक रहे हैं। वे अपने शत्रु के बाणों से मरते हैं।

अभ्यास ९

मनुष्य अपने परिश्रम का फल पाते हैं। राजभवन के शिखर से कौआ उड़ता है। मुनि अपने शत्रुओं के अपराध को क्षमा करते हैं। तुम दोनों अपने पिता की सेवा करते हो। हम दोनों अपने शिक्षक से नृत्य सीखते हैं। मित्र-मित्र से भलाई की आशा रखते हैं। राजा अपने सेवकों के अपराधों को क्षमा करते हैं। वृक्ष पर फूल हैं। कवि अच्छे राजाओं के गुण की प्रशंसा करते हैं। लड़के मिठाई चखते हैं। वे एक गायक से गीत सीखते हैं। छात्र अपने गुरु की आज्ञा का आदर करते हैं। पिता पुत्र के अभ्युदय पर आनन्द मनाता है। बुद्धिमान् मोक्ष के लिये यत्न करते हैं। सेनापति सैनिकों को आदेश करता है। पक्षी आकाश में उड़ते हैं। भिखारी नगर में भोजन माँगता है। पाप से दुःख उत्पन्न होता है। सैनिक तलवार से अपने शत्रुओं का नाश करते हैं।

(कर्मवाच्य अभ्यास १० तथा ११)

अभ्यास १०

नेवले से एक साँप मारा जाता है। जंगल में हरिण बाघ से देखा जाता है। कवियों से राजा लोग प्रशंसा किये जाते हैं। मोहन से तुम्हारी सेवा की जाती है। ईश्वर से सदा अच्छे मनुष्यों की रक्षा की

जाती है। मित्रों से तुम दोनों की प्रार्थना की जाती है। पुत्र पिता से उपदेश दिये जाते हैं। एक लड़के से बिल्ली ले जाई जाती है। हमारे कार्य सदा ईश्वर से देखे जाते हैं। अलंकारों से घोड़े सजाये जाते हैं। जीवों से नदी का पानी पीया जाता है। राजाओं से चार दण्ड दिये जाते हैं और सत्पुरुष आदृत होते हैं। अध्यापक से विद्यार्थी आज्ञा दिये जाते हैं। बकरियाँ नगर को ले जाई जाती हैं। राम से दो आम खाये जाते हैं। अध्यापक की आज्ञा छात्रों से पाली जाती है। सेनापति से सैनिक आज्ञा दिये जाते हैं। तुम रथ में ले जाये जाते हो। पक्षी व्याध से मारे जाते हैं। आदमी बाघ से खाया जाता है।

अभ्यास ११

लड़के के कुत्ते छोड़े जाते हैं। चिड़ियों से समुद्र का पानी नहीं पिया जाता है। आदमी से फल गिने जाते हैं। मूर्खों से ईश्वर की महिमा नहीं जानी जाती है। लड़ाई में सैनिक तलवार से मारा जाता है। अच्छे व्यवहार के लिये हम दोनों आदर किये जाते हैं। चिड़ियों से बच्चे पाले जाते हैं। स्वामी से सेवक का अपराध क्षमा किया जाता है। न्याय में अध्यापक से दो छात्रों की परीक्षा की जाती है। जंगल में चोरों से यात्री मारे जाते हैं। लड़ाई में मगध के दो राजा हराये जाते हैं। धोबी से कपड़ा धोया जाता है। सेवकों से स्वामी की सेवा की जाती है। तुम दोनों अपने पुत्रों से सेवा किये जाते हो। मिठाई लड़के से खाई जाती है। गोपाल से काम किया जाता है। व्याध से पक्षी पर तीर फेंका जाता है।

(आकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द—अभ्यास १२ तथा १३)

अभ्यास १२

प्रजा स्वामी की आज्ञा मानती है। नारद स्वर्ग की कहानी कहते हैं। युवती अपनी सखियों के साथ क्रीड़ा करती है। राजा के आने का समय ज्ञात नहीं है। स्त्री फूलों से अपने शरीर को सजाती है। दो कन्याएँ

नाच सीखती हैं। यात्रियों से प्रासाद की शोभा देखी जाती है। गुरु की आज्ञा छात्रों से पाली जाती है। सन्दूक में दो मालाएँ हैं। देवदत्त सेवा से माता को प्रसन्न करता है। राम से माता का शोक दूर किया जाता है। दासियाँ प्रेम से रानी की सेवा करती हैं। पिता से पुत्र को सोने के भूषण दिये जाते हैं। तारों से रात शोभित की जाती है। पिता की आज्ञा से नारायण पाठशाला को जाता है। कन्याएँ अग्नि में हव्य छोड़ती हैं।

अभ्यास १३

स्त्री अपने वचन से पति को सन्तुष्ट रखती है। इन्द्राणी इन्द्र की पत्नी है। सीता पार्वती की पूजा के लिये फूल लाती है। रानी अपनी दासी को एक सोने का अलंकार देती है। गोदावरी के पानी में बहुत मछलियाँ हैं। हिमालय की गुफाओं में ऋषि रहते हैं। पति कभी-कभी अपनी स्त्री की धृष्टता को नहीं सहते हैं। दासी रानी की नम्रता की प्रशंसा करती है। दो सखियाँ शकुन्तला के पीछे चलती हैं। सज्जनों के वचन में सदा मिठास रहता है। चाँदनी की शोभा मन को मोह लेती है। राम माता कैकेयी की आज्ञा का पालन करता है। नायक नायिकाओं के साथ चाँदनी में विहार करते हैं। ग्रीष्म में नदियों में राजा लोग अपनी स्त्रियों के साथ विहार करते हैं। वे दोनों वृक्ष की छाया में चट्टान पर बैठते हैं। देवताओं की पूजा से मनुष्य की इच्छाएँ पूरी होती हैं। स्त्रियाँ लता-मंडप में प्रवेश करती हैं। रानी की दो दासियों से सेवा की जाती है।

अभ्यास १४

हम बनारस गये और शिव का मन्दिर देखा। सीताजी ने जंगल में सोने का मृग देखा। गोपाल ने तलवार से साँप को मारा। लड़के ने तीर से एक चिड़िया मारी। यक्ष रामगिरि पहाड़ पर एक वर्ष तक रहा। दूत रथ से अयोध्या पहुँचा। क्या तुमने तलवार लिये हुए आदमी को

देखा ? रानी ने दासी को दो सोने के गहने दिये। लड़का घर से कब वापस आया ? क्या वह मेरी पुस्तक नहीं लाया ? राम का अपने गुणों के कारण सब जगह आदर किया गया। प्राचीन काल में राजा अपनी तलवार से प्रजा की रक्षा करते थे। कालिदास ने अपनी कविता द्वारा रघु के गुणों की प्रशंसा की। इन्द्र से अर्जुन ने बहुत वर पाया। राजा की आज्ञा से चोर पीटा गया। कृष्ण की कृपा से अर्जुन ने अपने शत्रुओं को जीता। हम दोनों ने पुस्तकालय में समाचार-पत्र पढ़े। रात में एक चोर घर में घुस गया। अभिमन्यु ने सैनिकों पर बाण छोड़े।

अभ्यास १५

ईश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा और तारे बनाये। चूड़ामणि ने बहुत दिनों तक सूर्य की आराधना की। कण्व ने अपने शिष्यों के साथ शकुन्तला को पति के घर भेजा। दुष्यन्त ने शकुन्तला को नहीं पहचाना और कहा कि तुम मेरी स्त्री नहीं हो। गोपाल ने एक दिन अपने घर से प्रयाग को प्रस्थान किया। शेर कुएँ में पड़ा और मर गया। राजा ने महल से एक सुन्दर स्त्री को देखा। बन्दरों ने राक्षसों से लड़ाई की। हमारे मित्रों ने हम दोनों की प्रशंसा की। दो परीक्षकों ने न्याय में एक लड़के की परीक्षा ली। लक्ष्मण अयोध्या के दर्शन से आनन्दित हुए। तुम दोनों ने पुस्तक की इच्छा की, और तुमको पुस्तकें दी गई। अपने अच्छे व्यवहार से तुमने पिता को प्रसन्न किया। पेड़ से दो बन्दर पृथ्वी पर गिर पड़े। चन्द्रगुप्त ने मगध देश के राज्य के लिये यत्न किया और उसको पाया। लक्ष्मण ने सीता को जंगल में छोड़ दिया। दो दासियाँ रानी के पीछे-पीछे गईं। तुमने उस दुष्ट को क्यों नहीं दण्ड दिया ? बाघ विन्ध्याचल के जंगल में मारा गया।

अभ्यास १६

एक समय में एक जंगल में गया और बहुत-सी झीलें देखीं। प्राचीन काल में लोग रात्रि के समय लड़ाई नहीं करते थे। उस सैनिक ने संग्राम

में अपने प्राण दिये। चन्द्रगुप्त ने सब राजाओं को जीत लिया। व्याध पेड़ पर चढ़ गया और घोंसलों में बहुत तोते देखे। जब मैंने उस भयंकर मनुष्य को देखा तो मेरे हाथ-पैर काँप गये और मेरा मुँह सूख गया। उसने अपने हाथ चारों ओर फैलाये। शंकर ने अपनी तीसरी आँख की अग्नि से कामदेव को जला दिया। काशी में एक संन्यासी से मेरे पुत्र ने न्याय पढ़ा। दर्शन-शास्त्र पढ़ने के लिये उसके मित्र काशी में रहते थे। ईश्वर ने सब संसार बनाया। मैं तुम्हारे मधुर-गान से प्रसन्न हुआ। सीता और लक्ष्मण के साथ रामचन्द्रजी चौदह वर्ष तक जंगल में रहे। सीता रावण से लंका ले जाई गई और एक वाटिका में रखी गई। कृष्ण गोपियों से घिरे थे। बलराम ने मित्रों ने साथ नदी में विहार किया। यज्ञ के समय शिशुपाल ने श्रीकृष्णजी की निन्दा की।

(आज्ञा—लोट् अभ्यास १७ से १९ तक)

अभ्यास १७

लड़को, वाटिका जाओ और फूल ले आओ। ईश्वर तुमको दुःखों से बचावें। हम लोग आज पुस्तक पढ़ें। वे नाव से गंगा को पार करें। शिकारी जंगल में मृग को न मारें। तुम अपने परिश्रम के लिये पुरस्कार पाओ। लड़के अपने मित्रों के साथ खेलें। अपने कपड़े दीन को दे दो। लड़को, अपने हाथ-पैर धोओ और यहाँ आओ। वे तलवार से अपने शत्रुओं से लड़ें। हम पैतृक सम्पत्ति के लिये अपने भाइयों से न लड़ें। हम अपने मित्रों के दोषों को क्षमा करें। तुम्हारी गोद से बच्चा न गिरे। अपनी माँ को ठंडे पानी से अपना हाथ धोने दो। हम बाणों से संग्राम में अपने शत्रुओं को जीतें। उस आदमी को अपने घर में दस दिन रहने दो। आपके आशीर्वाद से राजा को पुत्र होवे। लड़के अपनी धृष्टता के लिये दण्ड पावें। लड़के अपने माता-पिता को प्रसन्न करें। वह अपने गुरु को फूलों का उपहार दे। कृष्ण के घर का मार्ग मुझे दिखलाओ।

अभ्यास १८

ईश्वर की आज्ञा का मनुष्य पालन करें। वे दोनों गायें गाँव को लाई जायँ। तुम्हारे शत्रु लड़ाई में मारे जायँ। लड़को, अपनी जीभ से मिठाई को चखो। आपके गुणों का सूर्य सदा प्रकाशित रहे। चिड़ियों को घोंसले से उड़ने दो। चोर अपनी दुष्टता के लिये दण्ड दिये जायँ। अपने मित्र के अभ्युदय पर सदा प्रसन्न रहो। मनुष्य सदा सच बोलें। धनी दीनों को चावल दें। तुम्हारा भाई अपने नौकरों को क्षमा कर दे। प्रजा अपने राजा के कल्याण के लिये प्रार्थना करे। काशी से दूत बुलाया जाय। यहाँ पेड़ की छाया में चट्टान पर बैठो। सेवक घड़े को पानी से भरें। अपनी आँख बन्द न करो, इन चित्रों को देखो। तुम दोनों परीक्षा में उत्तीर्ण होओ। द्वारपाल तोते को राजा के पास ले जावे। मनुष्य धन पावें और सुखी होवें। लड़को फलों और पुस्तकों को गिने। कृपया अपने ही हाथ से पुस्तकों को दीजिये।

अभ्यास १६

राजा के पुत्र अपने पराक्रम से संग्राम में सुशोभित होवें। गायक को गीत प्रारम्भ करने दो। राजा अपनी प्रजा की भलाई के लिए कष्टों को सहें। पिता विवाह के समय कन्याओं को आभूषण दें। शिव की पूजा के लिए उस वाटिका से कुछ फूल ले आओ। तुम बहुत दिन तक जीवित रहो और प्रसन्न रहो। कृपया क्षमा करें, यदि मैंने आपको कष्ट दिया हो। चलो, प्रयाग चलें, और गंगा के पवित्र जल में स्नान करें। युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा, "तालाब पर जाओ और पानी ले आओ, हम लोग प्यासे हैं।" मनुष्यों की भलाई के लिए यत्न करो। उसने सब वेद पढ़ लिये हैं। आओ, हम सब उसकी पूजा करें और आदर करें। इस पेड़ की छाया में ये लड़के आनन्द मनावें। हम सीता के शील की प्रशंसा करें। हम सदा ईश्वर से प्रार्थना करें और अभीष्ट पदार्थ पावें। ईश्वर के महत्व का ध्यान करो। प्रिय बालक, यहाँ आओ, हम तुम्हें

जो चाहते हो दें। इस छात्र को तर्कशास्त्र के सिद्धान्तों की शिक्षा दो। संसार का रक्षक विष्णु हम लोगों को दुःख से बचावे।

(विधि लिङ् अभ्यास २० तथा २१)

अभ्यास २०

मनुष्य को चाहिये कि अपने मित्रों को उनकी विपत्ति में न भूलें। गोविन्द को बाजार जाना चाहिए और पुस्तक लानी चाहिए। तुमको अग्नि की पूजा करनी चाहिए। प्रातःकाल सबको उठना चाहिए और कुछ पढ़ना चाहिए। कंचुकी सूचित करते हैं कि आज रात सबको दीपक जलाना चाहिए। तुमको अपने कार्य पर ध्यान देना चाहिए। अपनी भुजाओं के बल से क्षत्रियों को सबकी रक्षा करनी चाहिए। तुमको अपने अध्यापक तथा बड़ों का सम्मान करना चाहिए। तुमको कभी कोई वस्तु चुरानी न चाहिये। सुख में ईश्वर को हमें भूलना न चाहिए। अपने मित्रों की भलाई के लिए तुम दोनों को सदा यत्न करना चाहिए। अपने अध्यापक से हम दोनों को तर्कशास्त्र पढ़ना चाहिए। दूसरों को नष्ट करके किसी को अपनी प्रशंसा की इच्छा न करनी चाहिए। वह बहुत दिनों तक साधु-संगति करे। निष्कारण तुम्हें घबड़ाना नहीं चाहिए। घर आने पर मनुष्य को अपने हाथ-पैर धोने चाहिए। तुमको धैर्य रखना चाहिए और शत्रुओं से लड़ना चाहिए। अपने अच्छे आचरण से लड़के अपने माता-पिता को प्रसन्न रक्खें।

Correct the folloing and illustrate the mistakes.

१. अरण्येऽधिवस्तु ं यतय इच्छन्ति ।
२. संन्यासी बहवो दिनान्येकस्थाने नावसेत् ।
३. यद्रामादन्तरेणायोध्या शून्या दृश्यते तत्कैकेयीवचनस्य परिणामः ।
४. अस्य गिरेरभितो बहवोऽश्मानः सन्ति ।
५. अस्य वर्त्मनः परितः पलाशवृक्षाः दृश्यन्ते ।
६. हा धिङ् मेऽन्यायाचरणं कुर्वते ।
७. स एवं विचारयन् सकला रात्रिर्व्यतीयाय ।
८. दुर्योधनः पाण्डवान्नास्निह्यत् ।
९. शत्रवे बाणानहं क्षिपामि स तु मह्यं दृषदो मुंचति ।
१०. मम वचनं स न विश्वसिति ।
११. सर्वेभ्यः पुत्रेभ्यो गोपालः पितु प्रेष्ठः ।
१२. सर्वाभ्यो नदीभ्यो भागीरथी द्राघिष्ठा ।
१३. स भोजनादनु बहिरगच्छन् ।
१४. संसारसुखानि केवलं दुःखस्थानमस्तीति साधोरन्तरेण को जानाति
१५. इयं नगरी त्रयः क्रोशा आयता ।
१६. धनिनं द्रव्यं याचितं भिक्षुकैः ।
१७. अंभोनिधिं सुधा ममंथे देवैः ।
१८. तेषां मे च सख्यमस्ति ।
१९. अयं वित्तसंयमस्त एव ।
२०. हे जगन्नाथ मे सर्वाणि पापानि क्षमस्व ।
२१. ताः स्त्रिय आत्मानो निन्दन्ति ।
२२. सा युवतिरात्मानं हतप्रायाममन्यत ।
२३. क्रुद्धः पुरुषः शिलायामपि अधिशेते ।
२४. गोपालो वा रामोहं वा त्वं तत्कार्यं करिष्यथेति मां भाति ।
२५. पथिक उत्थिते सति तस्य सार्धमहमगच्छम् ।
२६. समागतेषु बालेषु तान्फलानि दातुमारभस्व ।

२७. तस्मिन् राजनि वसुधामीशाने न कोऽपि सामन्तस्तमभिभवितुं येते ।
२८. अजासु क्षेत्रं नीयमानासु ताः शस्यमखादयत् ।
२९. भार्याया आक्रोशन्त्याः सा भर्त्रा प्रतिषिद्धा ।
३०. दंभश्च पैशुन्यं च सदा गर्हणीयौ ।
३१. रूपवती भार्या सदा प्रीतिपात्रा भवति ।
३२. पिता च माता च वार्द्धक्ये परिपालनीयः ।
३३. यत्स एवमुवाय तत्तस्य दोष एव ।
३४. यत्क्रौर्यमित्याचक्षते तत्प्रकृतिरेव खलानाम् ।
३५. अन्यषां पुत्राणां राम एव पितुः प्रेयानासीत् ।
३६. त्वं मम प्राणानामपि प्रियतरा अतस्त्वां सर्वं कथयामि ।
३७. अहं तत्र गन्तुं न शक्नोमि हि मध्य नद्यायातवती ।
३८. वरं भिक्षां याचितुं न तु परसेवाविधिम् ।
३९. अहं वा त्वं तच्चकार ।
४०. स गृहं प्रत्यागतो वा नेति मां सत्वरं निवेदय ।
४१. राज्ञापराधिनं शता रूपका दंड्याः ।
४२. इंद्र स्वयशः किन्नरमिथुनैर्गाययामास ।
४३. प्रासादस्य परितोऽमात्यं भिक्षुकान् स्थापयति राजा ।
४४. क्षुधितेन वत्सेन पयः पायय तमन्नं वा खादय ।
४५. राज्ञो वनात्पुष्पाणि दासीरानाययत् ।
४६. अहं मम मित्रं मा पारितोषिकमदापयम् ।
४७. गुणिषु पूजास्थानं गुणा एवास्ति न लिंगं वा न वयः ।
४८. तस्या नार्या अवलोकनस्य पात्रं ते नरा वभूव ।
४९. अत्र विषये ईश्वरो न दोषास्पद ।
५०. सा तपस्विनी मत्कृपापात्रं जातम् ।
५१. गोविन्दस्तस्य भार्या च स्तुत्यचरिते स्नः ।
५२. तपो दयो निःस्पृहता च सर्वे अमी यतिषु प्रशस्याः ।
५३. ऋते रामं जनकः कमपि नृपं शिवधनुर्भञ्जयितुं न शशाक ।

५४. अयं पर्वतोऽस्य ग्रामस्योत्तरः ।
५५. रामस्य पूर्वं गोविन्द आगच्छतु ।
५६. तं दिवसमारभ्य मम मनः पर्याकुलं जातम् ।
५७. पुत्रविवाहस्यानन्तरं पिता ग्रामस्य बहिरावसथेऽध्युवास ।
५८. स शिष्येणोपनिषदं वेदयामास ।
५९. स्वामिना भृत्येन धेनुं पयो दोह्यते ।
६०. भिक्षुकं श्रेष्ठिनं धनं याचयति ।
६१. स नरः पादस्य खंजः अयं तु नयनस्य काणः ।
६२. स जंबुद्वीपं नावि गतः शकटे च प्रत्यागतः ।
६३. यज्ञदत्तः कुण्डिन पुराय प्रेषितः स मासद्वये प्रत्यागमिष्यति ।
६४. रथस्थ एव बहु शोभसे तत्कृतमत्यादरस्य ।
६५. हिरण्यकशिपुश्चग्रीवस्य प्राणा आसन् ।
६६. गोविन्दो यूयं च तदकुरुताम् ।
६७. अहं ते वीराश्च शत्रून पराजयन् ।
६८. त्वमहं गोपालसूनवश्च तत्कृत्यं कुर्युः ।
६९. अयं बटुस्ते ब्राह्मणा वा ग्रामं गच्छतु ।
७०. यूयं वयं वा नदीं गमिष्यथ ।
७१. अतस्त्वां दूरादेव नमः ।
७२. इमां वार्तामहं वयस्यं कथयामि ।
७३. यदि स त्वया पाठं नाध्यापयति तर्हि मा तन्निवेदय ।
७४. देवाः स्वभङ्कारणं ब्रह्माणमाचरन्युः ।
७५. तस्मै अहं दूतं प्रहितवान्, किन्तु पाटलीपुत्राय न कोप्यद्यापि विसृष्टः ।
७६. अयं नरश्चौराणामतीव बिभेति ।
७७. मम गमनस्य प्रागेव स गतः ।
७८. अलं तं बहु ताडयितुं सोऽत्यशक्तः ।
७९. अस्य पुस्तकास्य रामाय प्रयाजनं नास्ति ।
८० ये यतयोऽरण्येऽधिवसन्ति तेभ्यो नृपानुग्रहस्य क उपयोगः ।

८१. भक्तिं देवो रोचते ।
८२. अहं देवदत्तस्य शता रूपकं धारयामि ।
८३. स मयि द्रुह्यति नाहं तस्मा अपिद्रुह्यामि ।
८४. न किमपि त्वामधुना प्रत्याशृणोमि ।
८५. राजस्योपरि चण्डवर्मा शास्ति ।
८६. अहं शत्रुं हत्वा स प्रत्याजगाम ।
८७. रामो रावणं हत्वा विभीषणो लंकाराज्ये स्थापितः ।
८८. त्वया प्रातरेव गां पयो दोग्धव्यमिति तयादिशन् रामोऽत्रगातवान्।
८९. गोतमीं वर्जं सर्वे निष्क्रान्ताः ।
९०. अस्मभिर्घातं स शत्रुभिर्हतः ।
९१. रामाय द्वौ पुत्रावास्ताम् ।
९२. प्रभवति निजाय कन्यकाजनाय महाराजः ।
९३. वासुकिः पातालतलस्येष्टे ।
९४. मामग्रे किं तिष्ठसि ।
९५. अस्य पर्वतस्य पूर्वं महावापी वर्तते ।
९६. अहं ह्यः पथि महान्तं भुजंगं ददर्श ।
९७. अत्र विषये तव सन्देहो माऽभूत ।
९८. मा चौरान भैष्ट
९९. मय्यहं तत्र वभूव तदा त्वं भ्रातुः साध मा कलहमकृथा इति तमख्यम् ।
१००. स्वपुत्रं यथा अन्येषां पुत्रेभ्योऽपि प्रीतिः कर्तव्या ।
१०१. अशीतिदिवसा यावत्स भृत्यो मामसेविष्ट ।
१०२. यत्वद्धनमीश्वरेणास्मान् दीयते तस्मिन्सन्तोषो मान्यः ।
१०३. ते रथे कुसुमपुराय यातवन्तः ।
१०४. सा मृतवतीत्याकर्ण्याहं दुःखितो जातवान् ।
१०५. शिशुना भाषितं स्मितं च पित्रोरानन्दोत्पादकम् ।
१०६. अयं मम चिरन्तनो वयस्यो भवितव्य ।
१०७. त्वय्यस्मान्शासति कथमस्माभिरभिभूतं भाव्यम् ।

१०८. कुमन्त्रिणा नृपसभा न प्रवेष्टव्यम् ।
१०९. गोपालो नाम वयस्येन सहागच्छम् ।
११०. जितोसौ मया षोडशसहस्राणां रूपकाणाम् ।
१११. कांची नाम नगर्यां धनमित्रनाम वणिगवसत् ।
११२. सुवर्णपुरं नाम नगरे द्वौ कौलिकौ वयस्यभावेन आवसतः ।
११३. रामेतिनामा दशरथस्य पुत्र आसीत् ।
११४. तव च मे च सख्यमस्ति ।
११५. अश्वमारोढुं मे रोचते ।
११६. त्वामवस्थातुं कथमहमनुमंस्ये ।
११७. अहं त्वामेतत्कर्तुमिच्छामि ।
११८. इमं ग्रन्थं वाचयितुं न शक्यते ।
११९. इममाम्रवृक्षमधः पातयितुं न साम्प्रतम् ।
१२०. वरं देशमपि त्यक्तुं न तु नीचसेवां विधातुम् ।
१२१. दशरथाय त्रिभार्याभ्यः पुत्रचतुष्टयमुदपादि ।
१२२. विजयतु भवान् य स्वं जनानानन्दयः ।
१२३. एतां भवने अनुरक्तां किं निष्कारणेन त्यजसि ।
१२४. इमं दिवसमारभ्य मासाद्विजयादशमी भवति ।
१२५. वाङ् मनोतीताय ब्रह्मणे नमः ।
१२६. वाक्स्तम्भन मन्त्रोऽस्माभिर्जाप्यः ।
१२७. स्त्री पुंसोः स्नेह एवं सर्वसुखेभ्यो विशिष्यते ।
१२८. सकुटुम्बाय ते स्वस्ति ।
१२९. यो राजा शत्रुं न विजिगीषति सकातर इत्युच्यते ।
१३०. नौ देहि पुस्तकमेतत् ।
१३१. एषा दश दिवसानन्तरं पुत्रं प्रसोष्यते ।
१३२. योऽद्य विहरति स एव तदाऽपि अविहरत् ।
१३३. एतस्य भूषणं मुष्णीहीति माऽवोचः ।
१३४. भवान् कदानी यास्यति मयातु परश्वो गमिष्यते
१३५. रे क्रोष्टः किमिति रोरवीषि ।

१३६. चिररात्राय लालन पालन तत्परौ मातृ पितरौ कोन सुस्मूर्षति ।
१३७. युष्माकं गृहा जीर्णाः सन्ति, अनयोर्गृहौ तु नूतनौ स्तः ।
१३८. कैषाप्सरा नृत्यति गान सक्ता ।
१३९. किमित्यस्यावधो: केशेषु मत्वीमसता विभाव्यते ।
१४०. आर्यावर्ते, स्त्रियः प्रायशः स्वपत्या समं बहिर्न पर्यटन्ति ।
१४१. एतेजम्बूफलानि विक्रीणन्ते
१४२. भवानेतानि किमिति न परिक्रीणाति ।
१४३. भवता पश्यताम् पाठशालायां छात्राः पठन्ति ।
१४४. एते छात्राविशद संस्कृत बोधं बिभ्रन्ति ।
१४५. सुतरां शास्त्राणि पाठं पाठं कः को न सुखमविभ्रत् ।
१४६. पटोलस्य फलं मूलं छदं च रोग मावहन्ति ।
१४७. यस्तव गृहं परिष्करोति स एवं मद् गृह मपि परिश्चकार ।
१४८. स द्वौ श्लोकौ विरच्य प्रेषितवान् ।
१४९. सूर्यः सदैवोष्णीभूतो भ्राम्यति
१५०. सन्दिहानः समापृच्छञ्छिष्यो गुरुणा बोधयितव्यः
१५१. इदमस्मद् व्याचिख्यासितं विषयं पण्डिता विदाङ्कुर्वन्तु मूर्खाः कथं विदाङ्क रिष्यन्ति ।
१५२. दिने सूर्यः प्रकाश कर्त्ता रात्रौ चाग्निसोमौ ।
१५३. एव महिष वच्छयामो गौः कूलं चिखण्डयिषति ।
१५४. अस्मिन्विले नकुल कुलानि विशन्ति, निर्विशन्ति च तस्मिन् मूषकाः ।
१५५. अस्मिन् कुशासनेऽध्युषितः सुप्रजो राजा धैर्यधारिधौरेयोऽस्ति ।
१५६. सुमेधसां सङ्गेन मन्दमेधसोऽपि पूज्या मेधाविनो भवन्ति ।
१५७. विरोचन मरीचि माहात्म्यादन्धतमसं प्रणष्टम् ।
१५८. प्राचीनपुस्तकानि पठन पाठनाद्यगोचरीभूय लुप्तानि ।
१५९. संश्रृणुमहे रावण सेनाया चतुर्मूर्द्धान त्रिमूर्द्धानश्चदैत्या आसन् ।
१६०. एष केवलं रूपवद्भार्यः सतु रसिक भार्यः सरस सुभाषिता ऽऽनन्देन यामिनीगंमयति ।

१६१. आवयोरेव विरोषो यत्त्वमकेश पलीकोऽहञ्च सुकेश पलीकोऽस्मि।
१६२. पिकशाव: काकाभि: पाल्यते न तु काकशावः पिकै:।
१६३. मूर्खाश्चतु:कृत्व: पञ्चकृत्वश्चापदिष्टा अपि ग्रन्था अभिप्रायं नाधि गच्छन्ति।
१६४. को न मधुर गानं शुश्रूषति श्रुतिमान्।
१६५. तस्याचरणं बाधश्च प्रशस्यौ स्त:।
१६६. देवदत्तं प्रति शुश्रूषति यत् एषोऽनुजिज्ञासति।
१६७. देवी खड्गेन शुम्भस्य शिरोऽप्रहरत् सचममार।
१६८. परमेतां दुराचारामवगत्यैतद्भिर्नरितं न काप्यादद्दाति।
१६९. कथमेष आदत्त बहुधन आस्यं व्याददाति।
१७०. अहोऽधुना राजा प्रतिष्ठासति शत्रून् विजिगीषया।
१७१. एष शुनको नित्यं भोजन समये उपतिष्ठति।
१७२. यथा भवान् स्वकेशान्स्तैलादिभि: संस्करोति तथाऽहमपि निजकेशान् सश्चिकीर्षामि।
१७३. एव महिषी पदेन हतो न तथा व्यथितो यथा मृगीपदेन ताडित:।
१७४. पादोपहतो विभीषणो रामं सेवयाम्बभूव।
१७५, गो गोपगिलोऽघासुर: कृष्णेन व्यापादयाम्बभूवे।
१७६. काविमौ समान रूपावाजिगमिषत:।
१७७. स ऋक् सामनी अधीतवान् एषतु ऋग्यजुषी
१७८. विद्वत्सभायां धर्मोपदेशो भवति खल: सभासु च पापोपदेश:।
१७९. किमिति नृपसभां निन्दसि न कदाप्यवलोकिता त्वया राजसभा
१८०. मेघा वर्षन्तु मेघावर्षन्तु इति सम्प्रवदन्ति कृषीवला:।
१८१. मामनाराध्य विद्याधिगमस्तेन भविष्यति।
१८२. इदमत्यन्त मशुद्धं वाक्यम् एनंवैयाकरणोऽपिनवेत्ति।
१८३. खलानां संसर्गात्कोन विरिरंसते।
१८४. कम्पमानान् वृक्षान् दृष्ट्वा किमिहकम्पसे, वायुरेतान् कम्पयते।
१८५. अहं सावधानतया वारंवारमुवाच, न भवन्त: शृण्वन्ति।
१८६. किमिति भोजयते भवानस्मान्, नाहं लशुनं कदापि दस्पर्श।

१८७. व्यापार मिषेण गौरमुखा आर्यावर्तं समाजग्मुः।
१८८. भो बालाः पठत, एवं स्म गुरु रुवाच।
१८९. हा धिक्! अपिमातरमताडयत् भवान्।
१९०. अहो किं जातु वेश्यामभियास्यति भवान।
१९१. न श्रद्दधे किङ्किल त्वं वेश्यां स्निह्यसि।
१९२. यत् त्वं ब्राह्मणः सुरां सेवसे, यच्च शूद्री मुखं चुम्बसि अन्याय्यं तत्।
१९३. चित्रं यच्च वैष्णवो मत्स्यमांस मभुनक्।
१९४. हरिभक्तो भूमिस्थोऽपि वासवं हसति।
१९५. अध्यापक-ब्राह्मणाः शिष्यान् पिपाठयिष्यन्ति।
१९६. अनयोरेकः सुरापी अन्यश्च क्षीरपी।
१९७. एष संदेशहर एव भारहरतामङ्गीकरिष्यति।
१९८. एष कर्मकरः सच कलहकरः उभावपि निशाकरं नावलोकयतः।
१९९. क्लेशापहो दुर्जनश्च सुखापहो भवति।
२००, जगत्कर्त्ता नित्योऽनित्यो वेत्यस्य समाहितिः कार्य्या।
२०१. एष मूकस्तृषां द्योतयितुं मुखं व्याददन् पानीयं याचते।
२०२. अस्मिन् वृक्षे द्वे फलेऽतितरां सशोभते।
२०३. गुरुम्प्रार्थयित्वा गृहं गच्छत।
२०४. भोगणक! अस्य कुक्कुटचण्डकस्य क्षेत्रफलं दिश।
२०५. लज्जावती नवोढ़ा विलसद्भ्यां दृग्भ्यां वीक्षते।
२०६. अहो आनन्दम्, यद्राजा प्रजावत्सलतामूरीकरोति।
२०७. एषां नदी उच्छलद्भिरद्भिरिमं नीवृद्भागं रुन्धतिस्म।
२०८. स श्वेतैर्मुक्ताफलैर्भ्रातारं स्वसारं च भूषयति।
२०९. हन्त! कष्टं यद्वयं संस्कृतभाषां परित्यज्य यवनभाषमधीयिमहे।
२१०. भवान् स्वपुत्रस्य नाम कदा करिष्यति।
२११. त्वया अहिनकुलयोर्वृत्तान्तः समगामि।
२१२. एष वीरः शत्रूनाहन्ति, शत्रुपत्न्यश्च स्वमेव शिरोवक्षश्चाघ्नन्ति।
२१३. एते बुभुक्षिता विद्यार्थिनः पाकपात्राण्युत्तपन्ति, स तु शीतार्त्तः स्वं पाणिमेवोत्तपति।

२१४ अग्निं सन्तप्तमयोऽपि दहिष्यति ।

२१५. यद्येवं न दास्यसि चेत्तर्हि राजनियमान्निग्राह्य गृहीष्यामि ।

२१६. सर्वेऽपि 'न्यायदर्शनम्' क्व मिलति इति पप्रच्छुः ।

२१७. यः पठेन्नातियत्नेन न स विद्यां लभेत् कचित् ।

१९४. दातारः स्वं प्राणं वर्ष्माणि च ददन्ति ।

१९५ क्लेशितो बाल उच्चैं रुरादिषति ।

१९६. विषयी दरिद्राति त्यागिनस्तु न दरिद्रान्ति ।

१९७. स नस्य गुणानजीगणन्, मदग्रे च अचीकथन् ।

१९८. धन्या गोपकन्या या वन्यापि कृष्णमनः समचुचोरन् ।

१९९. शीघ्रं पठनमारभनीयम्, ज्ञानं च लभनोयम् ।

२००. कृष्णे जाते कंसप्रहरिमण्डल असुस्वपन् ।

२०१. पञ्जरस्थोऽपि व्याघ्रो देवदत्तं भाषयति स च तत्कथाख्यानैरपरान् भीषयते ।

२०२. उत्तरस्यां, दक्षिणस्यां च ध्रुवौ स्तः, पूर्वस्यां पश्चिमस्यां च रवेरुदयास्तौ ।

२०३. अस्माहृशो युष्माहृशं न सिषेविषति ।

२०४. अहे भवन्तं रणाजिरं सनाथयितुमुत्सिषाहयिषामि ।

२०५. क्रीडन्तं बालं दृष्ट्वा माता अहासीत् ।

२०६. बालकः फलानि विहाय मृत्तिकामबिभक्षत् ।

२०७. जननीदुग्धेन बालस्य कण्ठमार्द्रं बभूव ।

२०८. सुरापानेषु देशेषु ब्राह्मणा न यान्ति ।

२०९. कर्तृगामिनि क्रियापदे आत्मनेपदम् ।

२१०. सा आर्द्रगोमयेण माषकुम्भावापेण च गृहं भूष्यति !

२११. "नन्दप्राङ्गणसंस्थितो हरिरसौ सानन्दमाक्रीडति" ।

श्लोकाः ।

(For Correction)

त्वयि त्रातरि भो कृष्ण! दुखं नोऽत्राऽस्ति किञ्चन ।
इयं सहप्रणतिना कृता ते चरणेऽञ्जलिः ॥ १ ॥

हितैषां जगतो धत्सि लक्ष्मी ते पादपीडका ।
नित्यस्ते मे च सम्बन्धो पिता त्वं ते सुतोऽस्म्यहम् ॥ २ ॥

तन्त्री करे यस्य सस्त्वां सदा गायति नारदः ।
ऋषिभिर्महिमा दिव्या ते सदा ब्रूयते मुदा ॥ ३ ॥

यस्य ध्वजायां गरुड़ो भुजायां स्वर्णकङ्कणः ।
कण्ठे च कौस्तुभं भाति स मय्यनुगृहीष्यति ॥ ४ ॥

त्वां याचितं मया यद् यद् देहि तन् मां लघु प्रभो ।
हे नाथ ! मेऽखिलान् पापान क्षमस्व जगदीश्वर ॥ ५ ॥

जगत्यस्मिन महद्घोरं गुरौ दुःखप्रदातरि ।
निरालम्बोऽस्मि पतितः, काऽस्ति ते चरणं तरिः ॥ ६ ॥

त्वमेवाऽत्र समागच्छ मा वा त्वन्निकटे नय ।
अहं देव ! त एवाऽस्मि दुःखसङ्घात् प्रमोचय ॥ ७ ॥

न कोऽपि मित्रस्त्वद्दते यो गापयति नादरम् ।
त्वमेव प्रीतिपात्रोऽसि मा भैः कस्ते विना वदेत् ॥ ८ ॥

जाजप्यन्ते नाम तव सर्वोपनिषदः सदा ।
स्मृतीतिहासास्तेष्वेव चार्च्यन्ते बुधोदिताः ॥ ९ ॥

पद्मगन्धं मुखं दृष्ट्वा बाहू चाजानु लम्बिते ।
तवैव शरणं यामि दयस्व यदि रोचते ॥ १० ॥

The following nouns, pronouns and adjectives occur frequently and their declensions must be committed to memory by students.

राम

	एक वचन	द्वि वचन	बहु वचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	,,	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	,,	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	,,	,,
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	,,	रामेषु
सम्बोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

हरि

हरिः	हरी	हरयः
हरिम्	,,	हरीन्
हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
हरये	,,	हरिभ्यः
हरेः	,,	,,
,,	हर्योः	हरीणाम्
हरौ	,,	हरिषु
हे हरे	हे हरी	हे हरयः

सखि

प्र०	सखा	सखायौ	सखायः
द्वि०	सखायम्	,,	सखीन
तृ०	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः

च०	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पं०	सख्युः	,,	,,
ष०	,,	सख्योः	सखीनाम्
स०	सख्यौ	,,	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः

गुरु

प्र०	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वि०	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृ०	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
च०	गुरवे	,,	गुरुभ्यः
पं०	गुरोः	,,	,,
ष०	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
स०	गुरौ	,,	गुरुषु
सम्बो०	हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः

कर्तृ

प्र०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
द्वि०	कर्तारम्	,,	कर्तॄन्
तृ०	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
च०	कर्त्रे	,,	कर्तृभ्यः
पं०	कर्तुः	,,	,,
ष०	,,	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
स०	कर्तरि	,,	कर्तृषु
सम्बो०	(हे) कर्तः	कर्तारौ	कर्तारः

पितृ

प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि०	पितरम्	,,	पितॄन्

तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
च०	पित्रे	,,	पितृभ्यः
प०	पितुः	,,	,,
ष०	,,	पित्रोः	पितृणाम्
स०	पितरि	,,	पितृषु
सम्बो०	(हे) पितः	पितरौ	पितरः

गो

प्र०	गौः	गावौ	गावः
द्वि०	गाम्	,,	गाः
तृ०	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
च०	गवे	,,	गोभ्यः
पं०	गोः	,,	,,
ष०	,,	गवोः	गवाम्
स०	गवि	,,	गोषु
सम्बो०	(हे) गौः	गावौ	गावः

भगवत्

प्र०	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वि०	भगवन्तम्	,,	भगवतः
तृ०	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
च०	भगवते	,,	भगवद्भ्यः
पं०	भगवतः	,,	,,
ष०	,,	भगवतोः	भगवताम्
स०	भगवति	,,	भगवत्सु
सम्बो०	(हे) भगवन्	भगवन्तौ	भगवन्तः

करिन्

प्र०	करी	करिणौ	करिणः
द्वि०	करिणाम्	,,	,,
तृ०	करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
च०	करिणे	,,	करिभ्यः
पं०	करिणः	,,	,,
ष०	,,	करिणोः	करिणाम्
स०	करिणि	,,	करिषु
सम्बो०	(हे) करिन	करिणौ	करिणः

राजन्

	एक वचन	द्वि० वचन	बहु वचन
प्र०	राजा	राजानौ	राजानः
द्वि०	राजानम्	,,	राज्ञः
तृ०	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
च०	राज्ञे	,,	राजभ्यः
पं०	राज्ञः	,,	,,
ष०	,,	राज्ञोः	राज्ञाम्
स०	राज्ञि	,,	राजे
सम्बो०	हे (राजन्)	राजानौ	रा

(स्त्रीलिंग) रमा

प्र०	रमा	रमे	रमाः
द्वि०	रमाम्	,,	,,
तृ०	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
च०	रमायै	,,	रमाभ्यः
पं०	रमायाः	,,	,,
ष०	,,	रमयोः	रमाणाम्

स०	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बो०	(हे) रमे	रमे	रमाः

मति०

प्र०	मतिः	मती	मतयः
द्वि०	मतिम्		मतीः
तृ०	मत्या	- भ्याम्	मतिभिः
च०	मत्यै, मतये,	,	मतिभ्यः
पं०	मत्याः, मतेः	,	,,
ष०	,, ,,	:	मतीनाम्
स०	मत्याम्, मतौ	,,	मतिषु
सम्बो०	हे (मते)	मती	मतयः

नदी

	एक वचन	द्वि० वचन	बहु वचन
प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	नदीम्	,,	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	,,	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	,,	,,
ष०	,,	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	,,	नदीषु
सम्बो०	(हे) नदि	नद्यौ	नद्यः

वधू

प्र०	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वि०	वधूम्	,,	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम	वधूभिः
च०	वध्वै	,,	वधूभ्यः
पं०	वध्वाः	,,	,,

पं०	वध्वा	वध्वो:	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	वध्वो:	वधूषु
सम्बो०	(हे) वधु	वध्वौ	वध्व:

वाच्

प्र०	वाक्, वाग्	वाचौ	वाच:
द्वि०	वाचम्	,,	,,
तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भि:
च०	वाचे	,,	वाग्भ्य:
पं०	वाच:	,,	,,
ष०	,,	वाचो:	वाचाम्
स०	वाचि	,,	वाक्षु
सम्बो०	(हे) वाक	वाचौ	वाच:

स्त्री

	एक वचन	द्वितीय वचन	बहु वचन
प्र०	स्त्री:	स्त्रियौ	स्त्रिय:
द्वि०	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रिय:, स्त्री:
तृ०	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभि:
च०	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्य:
पं०	स्त्रिया:	,,	,,
ष०	,,	स्त्रियो:	स्त्रियाम्
स०	स्त्रियाम्	,,	स्त्रीषु
सम्बो०	(हे) स्त्रि	स्त्रियौ	स्त्रिय:

नपुंसक गृह

प्र०	गृहम्	गृहे	गृहाणि
द्वि०	गृहम्	,,	,,
सम्बो०	(हे) गृह	,,	,,

शेष रूप पुल्लिंग (राम) के समान हैं ।

वारि (जल)

वारि	वारिणी	वारीणि
,,	,,	,,
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभि
वारिणे	,,	वारिभ्य:
वारिण:	,,	,,
,,	वारिणो:	वारीणाम्
वारिणि:	,,	वारिषु
(हे) वारे, वारि	वारिणी	वारीणि:

दधि

दधि	दधिनी	दधीनि
,,	,,	,,
दध्ना	दधिभ्याय	दधिनि:
दध्ने	,,	दधिभ्य:
दध्न	,,	,,
,,	दध्नो	दध्नाम्
दध्नि, दधनि	,,	दधिपु
(हे) दधे, दधि	दधिनी	दधीनि

पयस्

पय:	पयसी	पयांसि
,,	,,	,,
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभि:
पयसे	,,	पयोभ्य:
पयस:	,,	,,
,,	पयसो:	पयसाम्
पयसि	,,	पयस्सु
(हे) पय:	पयसी	पयाँसि

शर्मन

प्र०	शर्म	शर्मणी	शर्माणि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभिः इत्यादि

जगत्

प्र०	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
च०	जगते	,,	जगद्भ्यः
पं०	जगतः	,,	,,
ष०	,,	जगता	जगदाम्
स०	जगति	,,	जगत्सु
सम्बो०	(हे) जगत्	जगती	जगन्ति

नामन्

प्र०	नाम	नाम्नी-नामनी	नामनि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
च०	नाम्ने	,,	नामभ्यः
पं०	नाम्नः	,,	,,
ष०	,,	नाम्नोः	नाम्नाम्
स०	नामनि-नाम्नि	,,	नामानि
सम्बो०	(हे) नाम, नामन	नाम्नी, नामनी	नामानि।

(सर्वनाम) सर्व (पुलिंग)

प्र०	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वि०	सर्वम	,,	सर्वनि
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः

सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
सर्वस्मात्	”	”
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सर्वस्मिन्	”	सर्वेषु

सर्व (नपुंसकलिंग)

सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
”	”	”

शेषविभक्तियों में पुल्लिंग की तरह जानो।

सर्व (स्त्रीलिंग)

सर्वा	सर्वे	सर्वाः
सर्वाम्	”	सर्वाः
सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
सर्वस्यै	”	सर्वाभ्यः
सर्वस्याः	”	”
”	सर्वयोः	सर्वासाम्
सर्वस्याम्	”	सर्वासु

तद् (पुलिंग)

स	तौ	ते
तम्	तौ	तान्
तेन	ताभ्याम्	तैः
तस्मै	”	तेभ्यः
तस्मात्	”	”
तस्य	तयोः	तेषाम्
तस्मिन्	तयोः	तेषु

तद् (नपुंसकलिंग)

तद्	ते	तानि
”	”	”

शेष पुल्लिंग के समान जानो।

तद् (स्त्रीलिंग)

प्र०	ता	ते	ताः
द्वि०	ताम्	ते	ताः
तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च०	तस्यै	,,	ताभ्यः
पं०	तस्याः	,,	,,
ष०	,,	तयोः	तासाम्
स०	तस्याम्	,,	तासु

यद् (पुल्लिंग)

	एक वचन	द्वितीय वचन	बहु वचन
प्र०	यः	यौ	ये
द्वि०	यम्	यौ	यान्
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	,,	येभ्यः
पं०	यस्मात्	,,	,,
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
स०	यस्मिन्	,,	येषु

यद् (नपुंसक लिंग)

प्र०	यद्	ये	यानि
द्वि०	,,	,,	,,

(शेष पुल्लिंग के समान)

यद् (स्त्रीलिंग)

प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	ये	याः
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
च०	यस्यै	,,	याभ्यः

पं०	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
ष०	,,	ययोः	यासाम्
स०	यस्याम्	,,	यासु

किम् (पुल्लिंग)

प्र०	कः	कौ	के
द्वि०	कम्	कौ	कान्
तृ०	केन	काभ्याम्	कैः
च०	कस्मै	,,	केभ्यः
पं०	कस्मात्	,,	,,
ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
स०	कस्मिन्	,,	केषु

किम् (नपुंसक लिंग)

	एक वचन	द्वितीय वचन	बहु वचन
प्र०	किम्	के	कानि
द्वि०	,,	,,	,,

(शेष पुल्लिगवत्)

किम् (स्त्रीलिंग)

प्र०	का	के	काः
द्वि०	काम्	के	काः
तृ०	कया	काभ्याम्	काभिः
च०	कस्यै	,,	काभ्यः
पं०	कस्याः	,,	,,
ष०	,,	कयोः	कासाम्
स०	कस्याम्	,,	कासु

युष्मद्

प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम्, त्वा	,, वाम्	युष्मान्-वः
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च०	तुभ्यम्, ते	,, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पं०	त्वत्	,,	युष्मत्
ष०	तव, ते	युवयोः वाम्	युष्माकम्, वः
स०	त्वयि	,,	युष्मासु

अस्मद्

प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम्, मा	,, नौ	अस्मान्, नः
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम्, मे	,, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पं०	मत्	,,	अस्मत्
ष०	मम, मे	आवयोः नौ	अस्माकम्, नः
स०	मयि	,, ,,	अस्मासु

इदम् (पुल्लिंग)

	एक वचन	द्वितीय वचन	बहु वचन
प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम्, एनम्	,, एनौ	इमान् एनान्
तृ०	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	,,	एभ्यः
पं०	अस्मात्	,,	,,
ष०	अस्य	अनयोः एनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	,, ,, ,,	एषु

स्त्रीलिंग इदम्

	इयम्	इमे	इमाः
	इमाम्, एनाम्	,, एने	,, एनाः
	अनया, एनयो	आभ्याम्	आभिः
	अस्यै	,,	आभ्यः
	अस्याः	,,	,,
	,,	अनयोः एनयोः	आसाम्
	अस्याम्	,, ,,	आसु

नपुंसक

प्र०	इदम्	इमे	इमानि
द्वि०	,,	,,	,,

शेष पुंवत्

अदस् (वह) पुल्लिङ्ग शब्द

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्त्ता	अमौ	अमू	अमी
कर्म	अमुम्	,,	अमून्
करण	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
सम्प्रदान	अमुष्मै	,,	अमीभ्यः
अपादान्	अमुष्मात्	,,	,,
सम्बन्ध	अमुष्यः	अमुयोः	अमीषाम्
अधिकरण	अमुष्मिन्	,,	अमीषु

अदस् शब्द (वह) नपुंसकलिङ्ग

	एक	द्वि०	बहु०
कर्त्ता	अदः	अमू	अमूनि
कर्म	,,	,,	,,

शेष पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

अदस् शब्द स्त्रीलिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्वि०	बहु०
कर्ता	असौ	अमू	अमूः
कर्म	अमूम्	अमू	अमूः
करण	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
सम्प्रदान	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
अपादान	अमुष्या	,,	,,
सम्बन्ध	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
अधिकरण	अमुष्याम्	,,	अमूषु

एक

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसक
	ए० व०	ए० व०	ए० व०
प्र०	एकः	एका	एकम्
द्वि०	एकम्	एकाक	,,
तृ०	एकेन	एकया	एकेन
च०	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पं०	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
ष०	एकस्ये	,,	एकस्य
स०	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

द्वि

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसक
	ए० व०	ए० व०	ए० व०
प्र०	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	,,	,,	,,
पं०	,,	,,	,,
ष०	द्वयोः	द्वयाः	द्वयो
स०	,,	,,	,,

त्रि

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुसंक
	ए० व०	ए० व०	ए० व०
प्र०	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वि०	त्रीन्	„	„
तृ०	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
च०	त्रिभ्यः	„	त्रिभ्यः
पं०	„	„	„
ष०	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
स०	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर

प्र०	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि०	चतुरः	„	„
तृ०	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पं०	„	„	„
ष०	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स०	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

नोट—पाँच से लगाकर अठारह तक शब्दों के रूप केवल बहुवचनों में और तीनों लिंगों में समान होते हैं।

	पञ्चन	षष	सप्तन
	ब० व०	ब० व०	ब० व०
प्र०	पञ्च	षट्	सप्त
द्वि०	„	„	„
तृ०	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः
च०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
पं०	„	„	„

ष०	पञ्चानाम्	षटाणाम्	सप्तानाम्
स०	पञ्चसु	षटसु	सप्तसु
	(अष्टन्)	(नवन्)	(दशन्)
	ब०व०	ब०व०	ब०व०
प्र०	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
द्वि०	,, ,,	,,	,,
तृ०	अष्टभिः, अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
च०	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पं०	,, ,,	,,	,,
ष०	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
स०	अष्टसु, अष्टासु	नवसु	दशसु

Some essential verbs

(Symbols or Suffixes)

लट्—वर्तमान काल (Present Time)

के चिह्न—(जिनके जोड़ने से वर्तमान काल की क्रिया बनती है)

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	अन्य पु०	म० पु०	उत्तम पु०	अ० पु०	म० पु०	उ० पु०
ए० व०	ति	सि	मि	ते,	से,	इ
द्वि० व०	तः	थः	वः,	आते इते,	आथे इथे,	वहे
ब० व०	अन्ति	थ	मः	अते अन्ते,	ध्वे	महे

लोट् अनुज्ञा (लोट के चिह्न)

ए० व०	तु,	हि	आनि,	ताम्,	स्व,	ऐ
द्वि० व०	ताम्	तम्	आव,	ए (आ) ताम्,	आथाम्,	आवहै
ब० व०	अन्तु,	त	आम	अताम अन्ताम्,	ध्वम्,	आमहै

लृट्—सामान्य भविष्यत् (लृट् के चिह्न)

ए० व०	स्यति	स्यसि	स्यामि,	स्यते,	स्यसे,	स्ये
द्वि० व०	स्यतः	स्यथः	स्यावः	स्येते,	स्येथे,	स्यावहे
ब० व०	स्यन्ति	स्यथ:	स्यामः	स्यन्ते,	स्यध्वे,	स्यामहे

लङ्—भूतकाल (लङ् के चिह्न)

एक व०	त्	अः	अम्,	त,	थाः	ए
द्वि० व०	ताम्	तम्,	व,	ए (आ) ताम्,	ए (आ) थाम्	आवहि
ब० व०	अन्,	त,	म,	अत, अन्त,	ध्वम	आमहि

भ्वादिगण (1st. Conjugation)

भू होना (to be) परस्मैपदी

लट्

	3rd. p.	2nd. p.	1st. p.
ए० व०	भवति	भवसि	भवामि
द्वि० व०	भवतः	भवथः	भवावः
ब० व०	भवन्ति	भवथ	भवामः

लोट्

एक व०	भवतु	भव	भवानि
द्वि० व०	भवताम्	भवतम्	भवाव
ब० व०	भवन्तु	भवत	भवाम

विधिलिङ्

ए० व०	भवेत्	भवेः	भवेयम्
द्वि० व०	भवेताम्	भवेतम्	भवेव
ब० व०	भवेयुः	भवेत	भवेम

लङ्

ए० व०	अभवत्	अभवः	अभवम्
द्वि० व०	अभवताम्	अभवतम्	अभवाव
ब० व०	अभवन्	अभवत	अभवाम

लृट्

एक व०	भविष्यति	भविष्यसि	भविष्यामि
द्वि० व०	भविष्यतः	भविष्यथः	भविष्यावः
ब० व०	भविष्यन्ति	भविष्यथ	भविष्यामः

पच् (To Cook) परस्मैपदी

लट्—पचति इत्यादि ।

लोट्—पचतु इत्यादि ।

विधिलिङ्—पचेत्, पचेताम, पचेयुः इत्यादि ।

लङ्—अपचत, अपचताम्, अपचन् इत्यादि ।

लृट्—पक्ष्यति, पक्ष्यतः, पक्ष्यन्ति, पक्ष्यसि, पक्ष्यथः, पक्ष्यथ, पक्ष्यामि, पक्ष्यावः पक्ष्यामः इत्यादि ।

नम् (To salute, to bend) (परस्मैपदी)

लट्—नमति, नमतः, नमन्ति इत्यादि ।

लोट्—नमतु नमताम् नमन्तु ।

विधिलिङ्—नमेत् नमेताम् नमेयुः, नमेः नमेतम् नमेत, नमेयम् नमेव नमेम ।

लङ्—अनमत् अनमताम् अनमन् ।

लृट्—नंस्यति नंस्यतः नंस्यन्ति; नंस्यसि; नंस्यथः नंस्यथ; नंस्यामि, नंस्यावः नंस्यामः ।

गम् (To go) परस्मैपदी

लट्—गच्छति, गच्छतः गच्छन्ति इत्यादि ।

लोट्—गच्छतु गच्छताम् गच्छन्तु ,, ।

विधिलिङ्—गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः।
लिङ्—अगच्छत्, अगच्छताम्, अगच्छन्।
लृट्—गमिष्यति, गमिष्यतः, गमिष्यन्ति; गमिष्यसि, गमिष्यथः, गमिष्यथ; गमिष्यामि, गमिष्यामः, गमिष्यामः।

दृश् (To see) परस्मैपदी

लट्—पश्यति पश्यतः पश्यन्ति।
लोट्—पश्यतु पश्यताम् पश्यन्तु।
विधिलिङ्—पश्येत् पश्येताम् पश्येयुः।
लङ्—अपश्यत्, अपश्यताम अपश्यन्।
लृट्—द्रक्ष्यति द्रक्ष्यतः द्रक्ष्यन्ति; द्रक्ष्यसि द्रक्ष्यथः द्रक्ष्यथ; द्रक्ष्यामि, द्रक्ष्यावः द्रक्ष्यामः।

सद् (To sit, To be dejected or low spirited, To decay or perish, To go) परस्मैपदी

लट्—सीदति सीदतः सीदन्ति; सीदसिः सीदथ सीदथ, सीदामि सीदावः सीदाय।
लोट्—सीदतु सोदताम् सीदन्तु; सोद सीदतम् सीदत सीदानि सीदाव सीदाम।
विधिलिङ्—सीदेत् सीदेताम् सीदेयुः, सीदेः सीदेतम् सीदेत; सीदेयम् सीदेव सीदेम।
लङ्—असीदत् असीदताम् असीदन्; असीदः असीदतम् असीदत, असीदम् असीदाव असीदाम।
लट्—सत्स्यति सत्स्यतः सत्स्यन्ति; सत्स्यसि सत्स्यथः सत्स्यथ, सत्स्यामि सत्स्याव सत्स्याम।

स्था (तिष्ठ) (To stay) परस्मैपदी

लट्—तिष्ठति तिष्ठतः तिष्ठन्ति।
लोट्—तिष्ठतु तिष्ठताम् तिष्ठन्तु।

विधिलिङ्—तिष्ठेत् तिष्ठेताम् तिष्ठेयुः ।
लङ्—अतिष्ठत् अतिष्ठताम् अतिष्ठन् ।
लृट्—स्थास्यति स्थास्यतः स्थास्यन्ति; स्थास्यसि स्थास्यथ; स्थास्यथ; स्थास्यामि स्थास्यावः स्थास्यामः ।

पा (पिब) पीना (To drink) परस्मैपदी

लट्—पिबति पिबतः पिबन्ति;
लोट—पिबतु पिबताम् पिबन्तु;
विधिलिङ्—पिबेत् पिबेताम् पिबेयु;
लङ्—अपिबत् अपिबताम् अपिबन्
लृट्—पास्यति पास्यतः पास्यन्ति, पास्यसि पास्यथः पास्यथ, पास्यामि इत्यादि ।

जि—जीतना (To conquer) परस्मैपदी

लट्—जयति जयतः जयन्ति
लोट्—जयतु जयताम् जयन्तु;
विधिलिङ्—जयेत, जयेताम्, जयेयुः
लङ्—अजयत् अजयताम् अजयन्;
लृट—जेष्यति जेष्यतः जेष्यन्ति; जेष्यसि जेष्यथः जेष्यथ; जेष्यामि जेष्याव जेष्यामः ।

सेव—सेवा करना (To serve) आत्मनेपदी

लट्—सेवते सेवेते सेवन्ते; सेवसे सेवथे सेवध्वे; सेवे सेवावहे सेवामहे ।
लोट्—सेवताम् सेवेताम् सेवन्ताम्; सेवस्व सेवेथाम् सेवध्वम्; सेवे सेवावहे सेवामहै ।
विधिलिङ्—सेवेत सेवेयाताम सेवेरन्; सेवेथाः सेवेथाम् सेवेध्वम्; सेवेय सेवेवहि सेवेमहि ।
लङ्—असेवत असवेताम्, असेवन्त, असेवथाः असेवेथाम् असेवध्वम्, असेवे असेवावहि असेवामहि ।
लृट्—सेविष्यते सेविष्येते सेविष्यन्ते;

लभ—पाना (To gain) आत्मनेपदी

लट्—लभते लभेते लभन्ते; लभसे लभेथे लभध्वे; लभे लभावहे लभामहे।
लोट्—लभताम् लभेताम् लभन्ताम्, लभस्व लभेथाम् लभध्वम्, लभै-लभावहै लभामहै।
विधिलिङ्—लभेत लभेयाताम् लभेरन् लभेथाः लभेयाथाम् लभेध्वम्; लभेय लभेवहि लभेमहि।
लङ्—अलभत अलभेताम् अलभन्त; अलभथाः अलभेथाम् अलभध्वम्. अलभे अलभावहि अलभामहि
लृट—लप्स्यते लप्स्येते लप्स्यन्ते; लप्स्यसे लप्स्येथे लप्स्यध्वे; लप्स्ये; लप्स्यावहे लप्स्यामहे।

वृध—बढ़ना (To grow) आत्मनेपदी

लट्—वर्द्धते वर्द्धेते वर्द्धन्ते, वर्द्धसे वर्द्धेथे वर्द्धध्वे, वर्द्धे वर्द्धावहे वर्द्धामहे।
लोट्—वर्द्धताम् वर्द्धेताम् वर्द्धन्ताम्, वर्द्धस्व वर्द्धेथाम वर्द्धध्वम्; वर्द्धै वर्द्धावहै वर्द्धामहै।
विधिलिङ्—वर्द्धेत वर्द्धेयाताम् वर्द्धेरन्, वर्द्धेथाः वर्द्धेयाथाम् वर्द्धेध्वम्; वर्द्धेय वर्द्धेवहि वर्द्धेमहि।
लङ्—अवर्द्धत अवर्द्धेताम अवर्द्धन्त, अवर्द्धथा; अवर्द्धेथाम् अवर्द्धध्वम्; अवर्द्धे अवर्द्धावहि अवर्द्धामहि।
लृट्—वर्द्धिष्यते वर्द्धिष्येते वर्द्धिष्यन्ते, वर्द्धिष्यसे वर्द्धिष्येथे वर्द्धिष्यध्वे वर्द्धिष्ये वर्द्धिष्यावहे वर्द्धिष्यामहे।

मुद्—प्रसन्न होना (to be glad) आत्मनेपदी

लट्—मोदते मोदेते मोदन्ते, मोदसे मोदेथे मोदध्वे, मोदे मोदावहे मोदामहे।
लोट्—मोदताम् मोदेताम् मोदन्ताम्, मोदस्व मोदेथाम् मोदध्वम्, मोदै मोदावहै मोदामहै।
विधिलिङ्—मोदेत मोदेयाताम् मोदेरन्, मोदेथाः मोदेयाथाम् मोदेध्वम्, मोदेय मोदे मोदेवहि मोदेमहि।

लङ्—अमोदत अमोदेताम् अमोदन्त, अमोदथाः अमोदेथाम् अमोदध्वम्, अमोदे अमोदावहि अमोदामहि ।

लृट्—मोदिष्यते मोदिष्येते मोदिष्यन्ते, मोदिष्यसे मोदिष्येथे मोदिष्यध्वे, मोदिष्ये मोदिष्यावहे ।

सह्—सहना (To bear) आत्मनेपदी

लट्—सहते सहेते सहन्ते, सहसे सहेथे सहध्वे, सहे सहावहे सहामहे ।

लोट्—सहताम् सहेताम् सहन्ताम्, सहस्व सहेथाम् सहध्वम, सहै सहावहै सहामहै ।

विधिलिङ्—सहेत सहेयाताम् सहेरन्, सहेथाः सहेयाथाम् सहेध्वम्, सहेय सहेवहि सहेमहि ।

लङ्—असहत असहेताम् असहन्त, असहथाः असहेथाम् असहध्वम्, असहे असहावहि असहामहि ।

लृट्—सह्यते सह्येते सह्यन्ते, सहिष्यसे सह्यसे सह्येथे सह्यध्वे सह्ये सह्यावहे सह्यामहे । (कभी-कभी सहिष्यते भी) ।

याच्—माँगना (To beg) उभयपदी

परस्मैः लट्—याचति ।

लोट्—याचतु ।

विधिलिङ्—याचेत् ।

लङ्—अयाचत् ।

लृट्—याचिष्यति ।

आत्मने-लट्—याचते याचेते याचन्ते ।

लोट्—याचताम् याचेताम् याचन्ताम् ।

विधिलिङ्—याचेत्, याचेयाताम् याचेरन् ।

लङ्—अयाचत् अयाचेताम् अयाचन्त, अयाचामहि ।

लृट्—आचिष्यते, याचिष्येते याचिष्यन्ते ।

नी—ले चलना, ले जाना (To lead or to Carry) उभयपदी

आत्मने० लट्—नयते नयेते नयन्ते ।
लोट्—नयताम् नयेताम् नयन्ताम् ।
विधिलिङ्—नयेत नयेयाताम् नयेरन् ।
लङ्—अनयत अनयेताम् अनयन्त ।
लृट्—नेष्यते नेष्येते नेष्यन्ते ।

अदादि गण (Second Conjugation)

अदादि गण की धातुओं के आगे अ (शप्) का लुक् हो जाता है ।

अद्—खाना (To eat) परस्मैपदी

लट् वर्तमान काल (Present Time)

	अ० पु० 3rd P.	म० पु० 2nd P.	उ० पु० 1st P.
एक व०	अत्ति	अत्सि	अद्मि
द्वि० व०	अत्तः	अत्थः	अद्वः
ब० व०	अदन्ति	अत्थ	अद्मः

लोट्—अनुज्ञा

एक व०	अत्तु	अद्धि	अदानि
द्वि० व०	अत्ताम्	अत्तम्	अदाव
ब० व०	अदन्तु	अत्त	अदाम

विधिलिङ्

एक व०	अद्यात्	अद्याः	अद्याम्
द्वि० व०	अद्याताम्	अद्यातम्	अद्याव
ब० व०	अद्युः	अद्यात	अद्याम

लङ्—भूत काल

ए० व०	आदत्	आदः	आदम्
द्वि० व०	आत्ताम्	आत्तम्	आद्व
व० व०	आदन्	आत्त	आद्म

लृट् सामान्य भविष्यत

एक व०	अत्स्यति	अत्स्यसि	अत्स्यामि
द्वि० व०	अत्स्यतः	अत्स्यथः	अत्स्यावः
व० व०	अत्स्यन्ति	अत्स्यथ	अत्स्यामः

अस्—होना (To be) परस्मैपदी

लट्—अस्ति स्तः सन्ति; असि स्थः स्थ; अस्मि स्वः स्मः।

लोट—अस्तुस्ताम् सन्तु; एधिस्तम् स्त; असानि असाव आसाम।

विधिलिङ्—स्यात् स्याताम् स्युः; स्याः स्यातम् स्यात्; स्याम् स्याव स्याम्।

लङ्—आसीत् आस्तान् आसन्; आसीः आस्तम् आस्त; आसम् आस्व आस्म।

लट्—भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति; भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ; भविष्यामि भविष्यावः भविष्यामः।

ब्रू—(To say) कहना परस्मैपदी

लट्—ब्रवीति ब्रूतः ब्रुवन्ति; ब्रवीषि, ब्रूथः ब्रूथ; ब्रवीमि ब्रूवः ब्रूमः।

लोट—ब्रवीतु ब्रूताम् ब्रुवन्तु; ब्रूहि ब्रूतम् ब्रूत; ब्रवाणि ब्रवाव ब्रवाम।

विधिलिङ्—ब्रूयात ब्रूयाताम् ब्रूयुः; ब्रूयाः ब्रूयातम ब्रूयात; ब्रूयाम ब्रूयाव ब्रूयाम।

लङ्—अब्रवीत् अब्रूताम अब्रुवन्; अब्रवीः अब्रूतम् अब्रूत अब्रवम् अब्रूव अब्रूम।

लृट्—वक्ष्यति वक्ष्यतः वक्ष्यन्ति; वक्ष्यसि वक्ष्यथः वक्ष्यथ; वक्ष्यामि वक्ष्यावः वक्ष्यामः।

दुह—दुहना (To milk) परस्मैपदी

लट्—दोग्धि दुग्धः दुहन्ति, धोक्षि दुग्धः दुग्ध; दोह्मि दुह्वः दुह्मः ।
लोट्—दोग्धु दुग्धाम् दुहन्तु; दुग्धि दुग्धम् दुग्ध; दोहानि दोहाव दोहाम
विधिलिङ्—दुह्यात् दुह्यातास दुह्युः; दुह्याः दुह्यातम् दुह्यात; दुह्याम् दुह्याव दुह्याम ।
लङ्—अधोक् अदुग्धाम् अदुहन; अधोक् अदुग्धम् अदुग्ध; अदोहम् अदुह्व अदुह्म ।
लृट्—धोक्ष्यति धोक्ष्यतः धोक्ष्यन्ति; धोक्ष्यसि धोक्ष्यथः धोक्ष्यथ, धोक्ष्यामि धोक्ष्यावः धोक्ष्यामः ।

स्वप्—सोना (To sleep) परस्मैपदी

लट्—स्वपिति स्वपितः स्वपन्ति; स्वपिषि स्वपिथः स्वपिथ; स्वपिमि स्वपिवः स्वपिमः ।
लोट्—स्वपितु स्वप्ताम् स्वपन्तु; स्वपिहि स्वप्तम् स्वप्त; स्वपानि स्वपाव स्वपाम ।
विधिलिङ्—स्वपेत् स्वपेताम् स्वपेयुः; स्वपेः स्वपेतम् स्वपेत; स्वपेयम् स्वपेव स्वपेम ।
लङ्—अस्वपत् अस्वपताम् अस्वपन; अस्वपः अस्वपतम् अस्वपत; अस्वपम् अस्वयाव अस्वयाग ।
लृट्—स्वप्स्यति स्वप्स्यत; स्वप्स्यन्ति; स्वप्स्यसि स्वप्स्यथः स्वप्स्यथा; स्वप्स्यामि स्वप्स्यावः स्वप्स्यामः ।

हन्—मारना (To kill) परस्मैपदी

लट्—हन्ति हतः घ्नन्ति, हसिहथः हथ, हन्मि हन्वः हन्मः ।
लोट्—हन्तु हताम् घ्नन्तु; जहि हतम् हत; हनानि हनाव हनाम ।
विधिलिङ—हन्यात् हन्याताम् हन्युः; हन्याः हन्यातम् हन्यात; हन्याम् हन्याव हन्याम ।
लङ्—अहन् अहताम् अघ्नन्, अहन् अहतम् अहत्; अहनम् अहन्व अहन्म ।

लृट्—हनिष्यति हनिष्यतः हनिष्यन्ति; हनिष्यसि हनिष्यथः हनिष्यथ; हनिष्यामि हनिष्यावः हनिष्यामः ।

इ (इण)—जाना (To go) परस्मैपदी

लट्—एति इतः यन्ति; एषि इथः इथ; एमि इवः इमः ।

लोट् एतु इताम् यन्तु; इहि इतम् इत; अयानि अयाव अयाम ।

विधिलिङ्—इयात् इयाताम् इयुः; इयाः इयातम् इयात; इयाम् इयाव इयाम ।

लङ्—ऐत ऐताम् आयन्; ऐः ऐतम् ऐत; आयम् ऐव ऐम ।

लृट्–एष्यति एष्यतः एष्यन्ति; एष्यसि एष्यथः एष्यथ; एष्यामि एष्यावः एष्यामः ।

आस—बैठना (To sit) आत्मनेपदी

लट्—आस्ते आसाते आसते; आस्से आसाथे आध्वे; आसे आस्वहे आस्महे ।

लोट्–आस्ताम् आसाताम् आसताम्; आस्व आसाथाम् आध्वम्; आसै आसावहै आसामहै ।

विधिलिङ्—आसीत आसीयाताम् आसीरन्; आसीथाः आसीयाथाम् आसीध्वम्; आसीय आसीवहि आसीमहि ।

लङ्—आस्त आसाताम् आसत; आस्था आसाथाम् आध्वम् आसि आस्वहि आस्महि ,

लृट्—आसिष्यते आसिष्येते आसिष्यन्ते; आसिष्यसे आसिष्येथे आसिष्यध्वे; आसिष्ये आसिष्यावहे आसिष्यामहे ।

शी (शीङ्)—सोना (To sleep) आत्मनेपदी

लट्—शेते शयाते शेरते, शेषे शयाथे शेध्वे; शये शेवहे शेमहे ।

लोट्–शेताम् शयाताम् शेरताम्; शेष्व शयाथाम् शेध्वम्; शयै शयावहै शयामहै ।

विधिलिङ्—शयीत शयीयाताम् शयीरन्; शयीथाः शयीयाथाम् शयीध्वम्, शयीय शयीवहि शयीमहि ।

लङ्—अशेत अशयातम् अशेरत, अशेथाः अशयाथाम् अशेध्वम्; अशयि अशेवहि अशेमहि।

लृट्—शयिष्यते शयिष्येते शयिष्यन्ते ; शयिष्यसे शयिष्येथे शयिष्यध्वे, शयिष्ये शयिष्यावहे शयिष्यामहे।

जुहोत्यादिगण (Third Conjugation)

जुहोत्यादिगण की धातुओं के शप् के स्थान में श्लु होता है श्लु संज्ञा भी प्रत्यय के अदर्शन की होती है। इस कारण शप का लोप होजाता है श्लु होने से इस गण की धातुओं के पहले स्वर या व्यञ्जन युक्त पहले स्वर के द्वित्व हो जाता है।

हु—अग्नि आदि देवताओं के लिए हवि देना है
(To sacrifice) परस्मैपदी

लट—वर्तमान (Present tence)

	अन्य पुरुष 3rd P.	म० पु० 2nd P.	उ० पु०
एक वचन	जुहोति	जुहोषि	जुहोमि
द्वि वचन	जुहुतः	जुहुथः	जुहुवः
बहुवचन	जुह्वन्ति	जुहुथ	जुहुमः

लोट्—अनुज्ञा

ए० व०	जुहोतु	जुहुधि	जुहवानि
द्वि० व०	जुहुताम्	जुहुतम्	जुहवाव
ब० व०	जुह्वतु	जुहुत	जुहवाम

विधिलिङ्

	अ० पु०	म० पु०	उ० पु०
ए० व०	जुहुयात्	जुहुयाः	जुहुयाम्
द्वि० व०	जुहुयाताम्	जुहुयातम्	जुहुयाव
ब० व०	जुहुयुः	जुहुयात	जुहुयाम

लङ्

ए० व०	अजुहोत्	अजुहोः	अजुहवम्
द्वि० व०	अजुहुताम्	अजुहुतम्	अजुहुव
ब० व०	अजुहवुः	अजुहुते	अजुहुम

लृट्

ए० व०	होष्यति	होष्यसि	होष्यामि
द्वि० व०	होष्यतः	होष्यथः	होष्यावः
ब० व०	होष्यन्ति	होष्यथ	होष्याम्

भी डरना (To fear) परस्मैपदी

लट्—विभेति विभीतः (विभितः) विभ्यति; विभेषि विभीथः (विभिथः) विभीथ (विभिथः); विभेमि विभीवः (विभव) विभीमः (विभिमः)।

लोट्—विभेतु विभीताम् (विभिताम्) विभ्यतु; विभीहि (विभिहि) विभितम् (विभीतम्) विभीत (विभित) विभयानि विभयाव विभयाम।

विधिलिङ्—विभीयात् (विभियात्) विभीयाताम् (विभियाताम्) विभीयुः (विभियुः); विभीयाः (विभियाः) विभीयातम् (विभियातम) विभीयात विभियात; विभीयात् (विभियाम्) विभीयाव (विभियःव) विभीयाम (विभियाव)।

लङ्—अविभेत् अविभीताम् (अविभिताम्) अविभयुः अविभेः अविभीतम् (अविभितम्) अविभीत (अविभित); अविभयम् अविभीव (अविभिव) अविभीम (अविभिम)।

लृट—भेष्यति भेष्यतः भेष्यन्ति; भेष्यासि भेष्यथः भेष्यथः; भेष्यामि भेष्यावः भेष्यामः।

दा—देना (To give) परस्मैपदी

लट्—ददाति दत्तः ददति; ददासि दत्थः दत्थ; ददामि दद्वः दद्मः।

लोट्—ददातु दत्ताम् ददतु: देहि दत्तम् दत्त; ददानि ददाव ददाम।

विधिलिङ्—दद्यात् दद्याताम् दद्युः; दद्याः दद्यातम् दद्यात; दद्याम दद्याव दद्याम।

लङ्—अददात् अदत्ताम अददुः; अददाः अदत्तम अदत्त; अददाम अदद्व अदद्म.।

लृट्—दास्यति दास्यतः दास्यन्ति; दास्यसि दास्यथः दास्यथ; दास्यामि दास्यावः दास्यामः।

दिवादिगण (Forth Conjguation)

दिवादिगण की धातुओं के आगे य (श्यन्) जुड़ता है।

दिव्—खेलना, चमकना, प्रशंसा करना, प्रसन्न होना (To play, shine, praise, rejoice) परस्मैपदी

लट्—दीव्यति दीव्यतः दीव्यन्ति; दीव्यसि दीव्यथः दीव्यथ; दीव्यामि दीव्यावः दीव्यामः।

लोट्—दीव्यतु दीव्यताम् दीव्यन्तु; दीव्य दीव्यतम् दीव्यत; दीव्यानि दीव्याव दीव्याम।

विधिलिङ्—दीव्येत् दीव्येताम् दीव्येयुः, दीव्येः दीव्येतम् दीव्येत; दीव्येयम् दीव्येव दीव्येम्।

लङ्—अदीव्यत् अदीव्यतात् अदीव्यन्; अदीव्यः अदीव्यतम् अदीव्यत; अदीव्यम् अदीव्याव अदीव्याम।

लृट्—देविष्यति देविष्यतः देविष्यन्ति; देविष्यसि देविष्यथः देविष्यथ; देविष्यामि देविष्यावः देविष्यामः।

नृत्—नाचना (To dance) परस्मैपदी

लट्—नृत्यति नृत्यतः नृत्यन्ति; नृत्यसि नृत्यथः नृत्यथ; नृत्यामि नृत्यावः नृत्यामः ।

लोट्—नृत्यतु नृत्यताम् नृत्यन्तु; नृत्य नृत्यतम् नृत्यत, नृत्यानि नृत्याव नृत्याम ।

विधिलिङ्—नृत्येत् नृत्येताम् नृत्येयुः नृत्येः नृत्येतम् नृत्येत, नृत्येयम् नृत्येव नृत्येम ।

लङ्—अनृत्यत् अनृत्यताम् अनृत्यन्; अनृत्यः अनृत्यतम् अनृत्यत; अनृत्यम् अनृत्याव अनृत्याम ।

लृट्—नर्तिष्यति नर्तिष्यतः नर्तिष्यन्ति ; नर्तिष्यसि नर्तिष्यथः नर्तिष्यथ; नर्तिष्यामि नर्तिष्यावः नर्तिष्यामः ।

या

नर्त्स्यति नर्त्स्यतः नर्त्स्यन्ति; नर्त्स्यसि नर्त्स्यथः नर्त्स्यथ, नर्त्स्यामि नर्त्स्याव नर्त्स्यामः ।

नश्—नाश होना (To perish) परस्मैपदी

लट्—नश्यति नश्यतः नश्यन्ति; नश्यसि नश्यथः नश्यथः; नश्यामि नश्यावः नश्यामः ।

लोट्—नश्यतु नश्यताम् नश्यन्तुः नश्य नश्यतम् नश्यत; नश्यानि नश्याव नश्याम ।

विधिलिङ्—नश्येत् नश्येताम् नश्येयु; नश्येः नश्येतम् नश्येत; नश्येयम् नश्येव नश्येम ।

लङ्—अनश्यत् अनश्यताम् अनश्यन्, अनश्यः अनश्यतम् अनश्यत, अनश्यम् अनश्याव अनश्याम ।

लृट्—नशिष्यति नशिष्यतः नशिष्यन्ति; नशिष्यसि नशिष्यथः नशिष्यथ; नशिष्यामि नशिष्यावः नशिष्यामः ।

या

नंद्यति नंद्यतः नंद्यन्ति; नंद्यसि नंद्यथः नंद्यथ; नंद्यामि नंद्यावः नंद्यामः ।

भ्रम—घूमना (To roam about) परस्मैपदी

लट्—भ्राम्यति भ्राम्यतः भ्राम्यन्ति; भ्राम्यसि भ्राम्यथः भ्राम्यथ; भ्राम्यामि भ्राम्यावः भ्राम्यामः ।

लोट—भ्राम्यतु भ्राम्यताम् भ्राम्यन्तु; भ्राम्य भ्राम्यतम् भ्राम्यत; भ्राम्यानि भ्राम्याव भ्राम्याम ।

विधिलिङ—भ्राम्येत् भ्राम्येताम् भ्राम्येयुः; भ्राम्येः भ्राम्येतम् भ्राम्येत; भ्राम्येयम् भ्राम्येव भ्राम्येम ।

लङ्—अभ्राम्यत् अभ्राम्यताम् अभ्राम्यन्; अभ्राम्यः अभ्राम्यतम् अभ्राम्यत, अभ्राम्यम् अभ्राम्याव अभ्राम्याम ।

लृट्—भ्रमिष्यति भ्रमिष्यतः भ्रमिष्यन्ति; भ्रमिष्यसि भ्रमिष्यथः भ्रमिष्यथ; भ्रमिष्यामि भ्रमिष्याव भ्रमिष्यामः ।

युध—युद्ध करना (To fight) आत्मनेपदी

लट्—युध्यते युध्येते युध्यन्ते; युध्यसे युध्येथे युध्यध्वे; युध्ये युध्यावहे युध्यामहे ।

लोट्—युध्यताम् युध्येताम् युध्यन्ताम्; युध्यस्व युध्येथाम् युध्यध्वम्; युध्यै युध्यावहै युध्यामहै ।

बिधिलिङ—युध्येत युध्येयाताम् युध्येरन्; युध्येथाः युध्येयाथाम् युध्येध्वम्: युध्येव युध्येवहि युध्येमहि ।

लङ्—अयुध्यत अयुध्येताम् अयुध्यन्त, अयुध्यथाः अयुध्येथाम्, अयुध्यध्वम्, अयुध्ये अयुध्यावहि अयुध्यामहि ।

लृट्—योत्स्यते योत्स्येते योत्स्यन्तेः योत्स्यसे योत्स्येथे योत्स्यध्वे, योत्स्ये योत्स्यावहे योत्स्यामहे ।

जन्—पैदा होना (To be born) आत्मनेपदी

लट्—जायते जायेते जायन्ते; जायसे जायेथे जायध्वे; जाये जायावहे जायामहे।

लोट्—जायताम् जायेताम् जायन्ताम्; जायस्व जायेथाम् जायध्वम्; जायै जायावहै जायामहै।

विधिलिङ्—जायेत जायेयाताम् जायेरन्; जायेथाः जायेयाथाम्, जायेध्वम्; जायेय, जायेवहि जायेमहि।

लङ्—अजायत अजायेताम् अजायन्त; अजायथाः अजायेथाम् अजायध्वम्; अजाये अजायावहि अजायामहि।

लृट्—जनिष्यते जनिष्येते जनिष्यन्ते; जनिष्यसे जनिष्येथे जनिष्यध्वे; जनिष्ये जनिष्यावहे जनिष्यामहे।

स्वादिगण (Fifth Conju.) उभयपदी

सु (षुञ्) स्नान करना राज्याभिषेक करना या रस निकालना (To bathe, To anoint, To press out juice) परस्मैपदी

लट्—सुनोति सुनुतः सुन्वन्ति; सुनोषि सुनुथः सुनुथ; सुनोमि सुनुवः (सुन्वः) सुनुमः (सुन्मः)।

लोट्—सुनोतुसुनुताम् सुन्वन्तु; सुनु सुनुतम् सुनुत; सुनवानि सुनवाव सुनवाम

विधिलिङ्—सुनुयात् सुनुयाताम् सुनुयुः; सुनुयाः सुनुयातम् सुनुयात; सुनुयाम् सुनुयाव सुनुयाम।

लङ्—असुनोत् असुनुताम् असुन्वन्; असुनोः असुनुतम् असुनुत, असुनुवम् असुनुव (असुन्व) असुनुम (असुन्म)।

लृट्—सोष्यति सोष्यतः सोष्यन्ति; सोष्यसि सोष्यथः सोष्यथ, सोष्यामि सोष्यावः सोष्यामः।

आत्मने० लट्—सुनुते सुन्वाते सुन्वते; सुनुषे सुन्वाथे सुनुध्वे; सुन्वे सुनुवहे (सुन्वहे) सुनुमहे (सुन्महे)।

लोट्—सुनुताम् सुन्वाताम् सुन्वताम्; सुनुष्व सुन्वथाम् सुनुध्वम्; सुनवै सुनवावहै सुनवामहै ।

विधिलिङ्—सुन्वीत सुन्वीयाताम् सुन्वीरन्; सुन्वीथाः सुन्वीयाथाम् सुन्वीध्वम्; सुन्वीय सुन्वीवहि सुन्वीमहि ।

लङ्—असुनुत असुन्वाताम् असुन्वत; असुनुथाः असुन्वाथाम् असुनुध्वम्: असुन्वि असुनुवहि (असुन्वहि) असुनुमहि (असुन्महि)

लृट्—सोष्यते सोष्येते सोष्यन्ते; सोष्यसे सोष्येथे सोष्येध्वे, सोष्ये सोष्यावहे सोष्यामहे ।

आप—पाना (To get) परस्मैपदी

लट्—आप्नोति आप्नुतः आप्नुवन्ति; आप्नोषि आप्नुथः आप्नुथ; आप्नोमि आप्नुवः आप्नुमः ।

लोट्—आप्नोतु आप्नुताम् आप्नुवन्तु; आप्नुहि आप्नुतम् आप्नुत; आप्नवानि आप्नवाव आप्नवाम ।

विधिलिङ—आप्नुयात् आप्नुयाताम् आप्नुयुः, आप्नुयाः आप्नुयातम् आप्नुयात; आप्नुयाम् आप्नुयाव आप्नुयाम् ।

लङ् आप्नोत् आप्नुताम् आप्नुवन्; आप्नोः आप्नुतम् आप्नुत; आप्नुवम् आप्नुव आप्नुम ।

लृट्—आप्स्यति आप्स्यतः आप्स्यन्ति, आप्स्यसि आप्स्यथः आप्स्यथ; आप्स्यामि आप्स्यावः आप्स्यामः ।

शक—समर्थ होना (To be able) परस्मैपदी

लट् शक्नोति शक्नुतः शक्नुवन्ति; शक्नोषि शक्नुथः शक्नुथ; शक्नोमि शक्नुवः शक्नुमः ।

लोट्—शक्नोतु शक्नुताम् शक्नुवन्तु, शक्नुहि शक्नुतम् शक्नुत; शक्नवानि शक्नवाव शक्नवाम् ।

विधिलिङ्—शक्नुयात् शक्नुयाताम् शक्नुयुः; शक्नुयाः शक्नुयातम् शक्नुयात; शक्नुयाम् शक्नुयाव शक्नुयाम ।

लङ्—अशक्नोत् अशक्नुताम् अशक्नुवन्; अशक्नोः अशक्नुतम् अशक्नुत; अशक्नुवम् अशक्नुव अशक्नुम।

लृट्—शक्ष्यति शक्ष्यतः शक्ष्यन्ति; शक्ष्यसि शक्ष्यथः शक्ष्यथ; शक्ष्यामि शक्ष्यावः शक्ष्यामः।

तुदादिगण—(Sixth Conjug.)

तुदादिगण की धातुओं के आगे अ (श) प्रत्यय जुड़ता है।

तुद् (चुभाना, घायल करना) To strike To wound **परस्मैपदी**

लट्—तुदति तुदतः तुदन्ति; तुदसि तुदथः तुदथ, तुदामि तुदाव तुदाम।

लोट्—तुदतु तुदताम् तुदन्तु; तुद तुदतम् तुदत; तुदानि तुदाव तुदाम।

विधिलि०—तुदेत् तुदेताम् तुदेयुः; तुदेः तुदेतम् तुदेत; तुदेयम् तुदेव तुदेम

लङ्—अतुदत् अतुदताम् अतुदन्; अतुदः अतुदतम् अतुदत; अतुदम् अतुदाव अतुदाम।

लृट्—तोत्स्यति तोत्स्यतः तोत्स्यन्ति; तोत्स्यसि तोत्स्यथः तोत्स्यथ; तोत्स्यामि तोत्स्यावः तोत्स्यामः।

इष—इच्छा करना (To wish) परस्मैपदी

लट्—इच्छति इच्छतः इच्छन्तिः इच्छसि इच्छथः इच्छथ; इच्छामि इच्छावः इच्छामः।

लोट्—इच्छतु इच्छताम् इच्छन्तु; इच्छ इच्छतम् इच्छत; इच्छानि इच्छाव इच्छाम।

विधिलिङ्—इच्छेत् इच्छेताम् इच्छेयुः; इच्छेः इच्छेतम् इच्छेत; इच्छेयम् इच्छेव इच्छेम।

लङ्—ऐच्छत् ऐच्छताम् ऐच्छन्; ऐच्छः ऐच्छतम् ऐच्छत; ऐच्छम् ऐच्छाव ऐच्छाम।

लट्—एषिष्यति एषिष्यतः एषिष्यन्ति; एषिष्यसि एषिष्यथः एषिष्यथ; एषिष्यामि एषिष्यावः एषिष्यामः।

स्पृश्—छूना (To touch) परस्मैपदी

लट्—स्पृशति स्पृशतः स्पृशन्ति; स्पृशसि स्पृशथः स्पृशथ; स्पृशामि स्पृशावः स्पृशामः ।

लोट्—स्पृशतु स्पृशताम् स्पृशन्तु; स्पृश स्पृशतम् स्पृशत; स्पृशानि स्पृशाव स्पृशाम ।

विधिलिङ्—स्पृशेत्; स्पृशेताम् स्पृशेयुः; स्पृशेः स्पृशेतम् स्पृशेत; स्पृशेयम् स्पृशेव स्पृशेम ।

लङ्—अस्पृशत् अस्पृशताम् अस्पृशन्; अस्पृशः अस्पृशतम् अस्पृशत; अस्पृशम् अस्पृशाव अस्पृशाम ।

लृट्—स्प्रक्ष्यति स्प्रक्ष्यतः स्प्रक्ष्यन्ति; स्प्रक्ष्यसि स्प्रक्ष्यथः स्प्रक्ष्यथ; स्प्रक्ष्यामि स्प्रक्ष्यावः स्प्रक्ष्यामः ।

पृच्छ्—पूछना (To ask) परस्मैपदी

लट्—पृच्छति पृच्छतः पृच्छन्ति; पृच्छसि पृच्छथः पृच्छथ; पृच्छामि पृच्छावः पृच्छामः ।

लोट्—पृच्छतु पृच्छताम् पृच्छन्तु; पृच्छ पृच्छतम् पृच्छत; पृच्छानि पृच्छाव पृच्छाम ।

विधिलिङ्—पृच्छेत् पृच्छेताम् पृच्छेयुः; पृच्छेः पृच्छेतम् पृच्छेत; पृच्छेयम् पृच्छेव पृच्छेम ।

लङ्—अपृच्छत् अपृच्छताम् अपृच्छन्; अपृच्छः अपृच्छतम् अपृच्छत; अपृच्छम् अपृच्छाव अपृच्छाम ।

लृट्—प्रक्ष्यति प्रक्ष्यतः प्रक्ष्यन्ति; प्रक्ष्यसि प्रक्ष्यथः प्रक्ष्यथ; प्रक्ष्यामि प्रक्ष्यावः प्रक्ष्यामः ।

मृ—मरना (To die) आत्मनेपदी

लट्—म्रियते म्रियेते म्रियन्ते, म्रियसे म्रियेथे म्रियध्वे, म्रिये म्रियावहे म्रियावहे ।

लोट्—म्रियताम् म्रियेताम् म्रियन्ताम् ; म्रियस्व म्रियेथाम् म्रियध्वम् ; म्रियै म्रियावहै म्रियामहै ।

विधिलिङ्—म्रियेत म्रियेयाताम् म्रियेरन् , म्रियेथाः म्रियेयाथाम् म्रियेध्वम् ; म्रियेय म्रियेवहि म्रियेमहि ।

लङ्—अम्रियत अम्रियेताम् अम्रियन्त; अम्रियथाः अम्रियेथाम् अम्रियध्वम् ; अम्रिये अम्रियावहि अम्रियामहि ।

लृट्—मरिष्यति मरिष्यतः मरिष्यन्ति; मरिष्यसि मरिष्यथः मरिष्यथ; मरिष्यामि मरिष्यावः मरिष्यामः ।

N. B.—मृधातु लृट् लकार में (Future tense) में परस्मैपदी हो जाता है ।

मुच—छोड़ देना (To setfree) उभयपदी

परस्मै-लट्—मुञ्चति मुञ्चतः मुञ्चन्ति; मुञ्चसि मुञ्चथः मुञ्चथ; मुञ्चामि मुञ्चावः मुञ्चामः ।

लोट्—मुञ्चतु मुञ्चताम् मुञ्चन्तु; मुञ्च मुञ्चतम् मुञ्चत; मुञ्चानि मुञ्चाव मुञ्चाम ।

विधिलिङ्—मुञ्चेत् मुञ्चेताम् मुञ्चेयुः; मुञ्चेः मुञ्चेतम् मुञ्चेत; मुञ्चेयम् मुञ्चेव मुञ्चेम ।

लङ्—अमुञ्चत् अमुञ्चताम् अमुञ्चन् ; अमुञ्चः अमुञ्चतम् अमुञ्चत, अमुञ्चम् अमुञ्चाव अमुञ्चाम ।

लृट्—मोक्ष्यति मोक्ष्यतः मोक्ष्यन्ति, मोक्ष्यसि मोक्ष्यथः मोक्ष्यथ; मोक्ष्यामि मोक्ष्यावः मोक्ष्यामः ।

आत्मने० लट्—मुञ्चते मुञ्चेते मुञ्चन्ते; मुञ्चसे मुञ्चेथे मुञ्चध्वे; मुञ्चे मुञ्चावहे मुञ्चामहे ।

लोट्—मुञ्चताम् मुञ्चेताम् मुञ्चन्ताम् ; मुञ्चस्व मुञ्चेथाम् मुञ्चध्वम् ; मुञ्चै मुञ्चावहै मुञ्चामहै ।

विधिलिङ्—मुञ्चेत मुञ्चेयाताम् मुञ्चेरन् ; मुञ्चेथाः मुञ्चेयाथाम् मुञ्चेध्वम् ; मुञ्चेय मुञ्चेवहि मुञ्चेमहि ।

लङ्—अमुञ्चत अमुंचेताम् अमुञ्चन्त; अमुञ्चथाः अमुञ्चेथाम् अमुञ्चध्वम्; अमुञ्चे अमुञ्चावहि अमुञ्चामहि।

लृट्—मोक्ष्यते मोक्ष्येते मोक्ष्यन्ते; मोक्ष्यसे मोक्ष्येथे मोक्ष्यध्वे; मोक्ष्ये मोक्ष्यावहे मोक्ष्यामहे।

रुधादिगण (Seventh Conjug.)

रुधागदिगण की धातुओं मध्य में न (श्नम्) लगता है।

रुध (रुधिर्)—घेरना, रोकना, ढकलेना (To besiege, to prevent, to cover or to shut up.) **उभयपदी**

परमै० लट्—रुणद्धि रुन्द्धः रुन्धन्ति; रुणत्सि रुंद्धः रुन्ध; रुणध्मि रुन्ध्वः रुन्ध्मः।

लोट्—रुणद्धु रुन्द्धाम् रुन्धन्तु; रुन्धि रुन्द्धम् रुन्ध; रुणधानि रुणधाव रुणधाम।

विधिलिङ्—रुन्ध्यात् रुन्ध्याताम् रुन्ध्युः रुन्ध्याः रुध्यातम् रुन्ध्यात; रुन्ध्याम् रुन्ध्याव रुन्ध्याम।

लङ्—अरुणत् अरुन्धाम् अरुन्धन; अरुणः (अरुणत्) अरुन्धम् अरुन्ध, अरुणधम् अरुन्ध्व अरुन्ध्म।

लृट—रोत्स्यति रोत्स्यतः रोत्स्ययन्ति; रोत्स्यसि रोत्स्यथ रोत्स्यथ; रोत्स्यामि रोत्स्याव; रोत्स्यामः

आत्मने० लट्—रुन्धे रुन्धाते रुन्धते; रुन्त्से रुन्त्धाथे रुन्ध्वे; रुन्धे रुन्ध्वहे रुन्ध्महे।

लोट्—रुन्धाम् रुन्धाताम् रुन्धताम्; रुन्त्स्व रुन्धाथाम् रुन्धध्वम रुन्धे रुन्ध्वहे रुन्ध्महे।

लोट्—रुन्धाम रुन्धाताम् रुन्धताम्; रुन्त्स्व रुन्धाथाम् रुन्ध्वम्; रुणधै रुणधावहै रुणधामहै।

विधिलिङ्—रुन्धीत रुन्धीयाताम् रुन्धीरन्; रुन्धीथाः रुन्धीयाथाम् रुन्धीध्वम्; रुन्धीय रुन्धीवहि रुन्धीमहि।

लङ्—अरुन्ध अरुन्धाताम् अरुन्धत; अरुन्धाः अरुन्धाथाम् अरुन्ध्वम्; अरुन्धि अरुन्ध्वहि अरुन्ध्महि।

लृट्—रोत्स्यते रोत्स्येते रोत्स्यन्ते; रोत्स्यसे रोत्स्येथे रोत्स्यध्वे; रोत्स्ये रोत्स्यावहे रोत्स्यामहे।

भुज—रक्षा या भोग करना, (To protect) उभयपदी

परस्मै० लट्—भुनक्ति भुङ्क्तः भुञ्जन्तिः भुनक्षि भुङ्क्थः भुङ्क्थ; भुनज्मि भुञ्ज्वः भुञ्ज्मः।

लोट्—भुनक्तु भुङ्क्ताम् भुञ्जन्तु; भुङ्ग्धि भुङ्क्तम् भुङ्क्त; भुनजानि भुनजाव भुनजाम।

विधिलिङ्—भुञ्ज्याम् भुञ्ज्यात; भुञ्ज्याम् भुञ्ज्याव भुञ्ज्याम।

लङ्—अभुनक् अभुङ्क्ताम अभुञ्जन्; अभुनः (अभुनक) अभुङ्क्तम् अभुङ्क्त अभुनजम् अभुञ्ज्व अभुञ्ज्म।

लृट्—भोक्ष्यति भोक्ष्यतः भोक्ष्यन्ति; भोक्ष्यसि भोक्ष्यथः भोक्ष्यथ; भोक्ष्यामि भोक्ष्यावः भोक्ष्यामः।

(आत्मनेपद में To eat खाना)

आत्मनेपद लट्—भुङ्क्ते भुञ्जाते भुञ्जते; भुङ्क्षे भुञ्जाथे भुङ्ग्ध्वे, भुञ्जे भुञ्ज्वहे भुञ्ज्महे।

लोट्—भुङ्क्ताम् भुञ्जाताम् भुञ्जताम्; भुङ्क्ष्व भुञ्जाथाम् भुङ्ग्ध्वम्; भुनजै भुनजावहै भुनजामहै।

विधिलिङ्—भुञ्जीत भुञ्जीयाताम् भुञ्जीरन्; भुञ्जीथाः भुञ्जीयाथाम् भुञ्जीध्वम्; भुञ्जीय भुञ्जीवहि भुञ्जीमहि।

लङ्—अभुङ्क्त अभुञ्जाताम् अभुञ्जत; अभुङ्क्थाः अभुञ्जाथाम् अभुङ्ग्ध्वम्; अभुञ्जि अभुञ्ज्वहि अभुञ्ज्महि।

लृट्—भोक्ष्यते भोक्ष्येते भोक्ष्यन्ते; भोक्ष्यसे भोक्ष्येथे भोक्ष्यध्वे; भोक्ष्ये भोक्ष्यावहे भोक्ष्यामहे।

तनादिगण (Eighth Conj.)

को धातुओं के आगे "उ" प्रत्यय लगता है।

तन (तनु)—फैलाना (To spread) उभयपदी

परस्मै० लट्—तनोति तनुतः तन्वन्ति ; तनोषि तनुथः तनुथ; तनोमि तनुवः (तन्वः) तनुमः (तन्मः) ।

लोट्—तनोतु तनुताम् तन्वन्तु; तनु तनुतम् तनुत; तनवानि तनवाव तनवाम ।

विधिलिङ्—तनुयात् तनुयाताम् तनुयुः ; तनुयाः तनुयातम् तनुयात; तनुयाम् तनुयाव तनुयाम ।

लङ्—अतनोत् अतनुताम् अतन्वन् ; अतनोः अतनुतम् अतनुत; अतनवम् अतनुव (अतन्व) अतनुम (अतन्म) ।

लृट्—तनिष्यति तनिष्यतः तनिष्यन्ति; तनिष्यसि तनिष्यथः तनिष्यथ; तनिष्यामि तनिष्यावः तनिष्यामः ।

आत्मने० लट्—तनुते तन्वाते तन्वते; तनुषे तन्वाथे तनुध्वे; तन्वे तनुवहे (तन्वहे) तुनुमहे (तन्महे) ।

लोट्—तनुताम् तन्वाताम् तन्वताम्; तनुष्व तन्वाथाम् तनुध्वम् ; तनवै तनवावहै तनवामहै ।

विधिलिङ्—तन्वीत तन्वीयाताम् तन्वीरन् ; तन्वीथाः तन्वीयाथाम् तन्वीध्वम् ; तन्वीय तन्वीवहि तन्वीमहि ।

लङ्—अतनुत अतन्वाताम् अतन्वत; अतनुथाः अतन्वाथाम् अतनुध्वम् ; अतन्वि अतन्वहि अतन्महि ।

लृट्—तनिष्यते तनिष्येते तनिष्यन्ते तनिष्यसे तनिष्येथे तनिष्यध्वे; तनिष्ये तनिष्यावहे तनिष्यामहे ।

कृ—करना (To do) उभयपदी

परस्मै० लट्—करोति कुरुतः कुर्वन्ति; करोषि कुरुथः कुरुथ; करोमि कुर्वः कुर्मः।

लोट्—करोतु कुरुताम् कुर्वन्तु; कुरु कुरुतम् कुरुत; करवाणि करवाव करवाम।

विधिलिङ्—कुर्यात् कुर्याताम् कुर्युः; कुर्याः कुर्यातम् कुर्यात; कुर्याम् कुर्याव कुर्याम।

लङ्—अकरोत् अकुरुताम् अकुर्वन्; अकरोः अकुरुतम् अकुरुत; अकरवम् अकुर्व अकुर्म।

लृट्—करिष्यति करिष्यतः करिष्यन्ति; करिष्यसि करिष्यथः करिष्यथ; करिष्यामि करिष्याव करिष्यामः।

आत्मनेपद लट्—कुरुते कुर्वाते कुर्वते; कुरुषे कुर्वाथे कुरुध्वे; कुर्वे कुर्वहे कुर्महे।

लोट्—कुरुताम् कुर्वाताम् कुर्वताम्; कुरुष्व कुर्वाथाम् कुरुध्वम्; करवै करवावहै करवामहै,

विधिलिङ्—कुर्वीत कुर्वीयाताम् कुर्वीरन्; कुर्वीथाः कुर्वीयाथाम् कुर्वीध्वम्; कुर्वीय कुर्वीवहि कुर्वीमहि।

लङ्—अकुरुत अकुर्वाताम् अकुर्वत, अकुरुथाः अकुर्वाथाम् अकुरुध्वम्; अकुर्वि अकुर्वहि अकुर्महि।

लृट्—करिष्यते करिष्येते करिष्यन्ते; करिष्यसे करिष्येथे करिष्यध्वे करिष्ये करिष्यावहे करिष्यामहे।

क्रयादिगण (Ninth Conjug.)

की धातुओं के आगे ना (श्ना) प्रत्यय होता है।

क्री—मोल लेना (To buy) उभयपदी

परस्मै० लट्—क्रीणाति क्रीणीतः क्रीणन्ति; क्रीणासि क्रीणीथः क्रीणीथ; क्रीणामि क्रीणीवः क्रीणीमः।

लोट्—क्रीणातु क्रीणीताम् क्रीणन्तु; क्रीणीहि क्रीणीतम्; क्रीणीत; क्रीणानि क्रीणाव क्रीणाम।

विधिलिङ्—क्रीणीयात् क्रीणीयाताम् क्रीणीयुः क्रीणीयाः क्रीणीयातम् क्रीणीयात; क्रीणीयाम् क्रीणीयाव क्रीणीयाम।

लङ्—अक्रीणात् अक्रीणीताम् अक्रीणन्; अक्रीणाः अक्रीणीतम् अक्रीणीत; अक्रीणाम् अक्रीणीव अक्रीणीम।

लृट्—क्रेष्यति क्रेष्यतः क्रेष्यन्ति; क्रेष्यसि क्रेष्यथः क्रेष्यथ; क्रेष्यामि क्रेष्याव क्रेष्यामः।

आत्मनेपद लट्—क्रीणीते क्रीणाते क्रीणते; क्रीणीषे क्रीणाथे क्रीणीध्वे; क्रीणे क्रीणीवहे क्रीणीमहे।

लोट्—क्रीणीताम् क्रीणाताम् क्रीणताम्; क्रीणीष्व क्रीणाथाम् क्रीणीध्वम्; क्रीणै क्रीणावहै क्रीणामहै।

विधिलिङ्—क्रीणीत क्रीणीयाताम् क्रीणीरन्; क्रीणीथाः क्रीणीयाथाम् क्रीणीध्वम्; क्रीणीय क्रीणीवहि क्रीणीमहि।

लङ्—अक्रीणीत अक्रीणाताम् अक्रीणत; अक्रीणीथाः अक्रीणाथाम् अक्रीणीध्वम्; अक्रीणि अक्रीणावहि अक्रीणामहि।

लृट्—क्रेष्यते क्रेष्येते क्रेष्यन्ते; क्रेष्यसे क्रेष्येथे क्रेष्यध्वे क्रेष्ये क्रेष्यावहे क्रेष्यामहे।

ग्रह—लेना (To take) उभयपदी

परस्मै० लट्—गृह्णाति गृह्णीतः गृह्णन्ति; ।
लोट्—गृह्णातु गृह्णीताम् गृह्णन्तु; ।
विधिलिङ्—गृह्णीयात् गृह्णीयाताम् गृह्णीयुः;
लङ्—अगृह्णात् अगृह्णीताम् अगृह्णन्; ।
लृट्—ग्रहीष्यति ग्रहीष्यतः ग्रहीष्यन्ति;
आत्मने०लट्—गृह्णीते गृह्णाते गृह्णते; गृह्णीषे गृह्णाथे गृह्णीध्वे; गृह्णे गृह्णीवहे गृह्णीमहे।

लोट्—गृह्णीताम् गृह्णाताम् गृह्णताम्; गृह्णीष्व गृह्णाथाम् गृह्णीध्वम्; गृह्णै गृह्णावहै गृह्णामहै ।

विधिलि०—गृह्णीत गृह्णीयाताम् गृह्णीरन्; गृह्णीथाः गृह्णीयाथाम् गृह्णीध्वम्; गृह्णीय गृह्णीवहि गृह्णीमहि ।

लङ्—अगृह्णीत अगृह्णाताम् अगृह्णत; अगृह्णीथाः अगृह्णाथाम् अगृह्णीध्वम्; अगृह्णि अगृह्णीवहि अगृह्णीमहि ।

लृट—ग्रहीष्यते ग्रहीष्येते ग्रहीष्यन्ते ग्रहीष्यसे ग्रहीष्येथे ग्रहीष्यध्वे: ग्रहीष्ये ग्रहीष्यावहे ग्रहीष्यामहे ।

ज्ञा—जानना (To know) उभयपदी

परस्मै० लट्—जानाति जानीतः जानन्ति; जानासि जानीथः जानीथ; जानामि जानीवः जानीमः ।

लोट्—जानातु जानीताम् जानन्तु; जानीहि जानीतम् जानीत; जानानि जानाव जानाम ।

विधिलिङ्—जानीयात् जानीयाताम् जानीयुः, जानीयाः जानीयातम् जानीयात: जानीयाम् जानीयाव जानीयाम ।

लङ्—अजानात् अजानीताम् अजानन्; अजानाः अजानीतम् अजानीत, अजानाम् अजानीव अजानीम ।

लृट्—ज्ञास्यति ज्ञास्यतः ज्ञास्यन्ति; ज्ञास्यसि ज्ञास्यथः ज्ञास्यथ, ज्ञास्यामि ज्ञास्यावः ज्ञास्यामः ,

आत्मने०लट—जानीते जानाते जानते; जानीषे जानाथे जानीध्वे, जाने जानीवहे जानीमहे ।

—जानीताम् जानाताम् जानताम्; जानीष्व जानाथाम् जानीध्वम्; जानै जानावहै जानामहै ।

विधिलिङ—जानीत जानीयाताम् जानीरन्; जानीथाः जानीयाथाम् जानीध्वम्; जानीय जानीवहि जानीमहि ।

लङ्—अजानीत अजानाताम् अजानत; अजानीथाः अजानाथाम् अजानीध्वम्; अजाने अजानीवहि अजानीमहि ।

लृट—ज्ञास्यते ज्ञास्येते ज्ञास्यन्ते; ज्ञास्यसे ज्ञास्येथे ज्ञास्यध्वे; ज्ञास्ये ज्ञास्यावहे ज्ञास्यामहे।

चुरादिगण (Tenth Conju.)

की धातुओं के आगे अय् (णिच्) जुड़ता है तथा धातु के प्रथम स्वर को गुण हो जाता है।

चुर—चुराना (To steal) उभयपदी

परस्मै०लट्—चोरयति चोरयतः चोरयन्ति; चोरयसि चोरयथः चोरयथ; चोरयामि चोरयाव चोरयामः।

लोट्—चोरयतु चोरयताम् चोरयन्तु; चोरय चोरयतम् चोरयत, चोरयाणि चोरयाव चोरयाम।

विधिलिङ्—चोरयेत् चोरयेताम् चोरयेयुः चोरयेः चोरयेतम् चोरयेत; चोरयेयम् चोरयेव चोरयेम।

लङ्—अचोरयत् अचोरयताम् अचोरयन्; अचोरयः अचोरयतम् अचोरयत; अचोरयम् अचोरयाव अचोरयाम।

लृट—चोरयिष्यति चोरयिष्यतः चोरयिष्यामि; चोरयिष्यसि चोरयिष्यथः चोरयिष्यथ; चोरयिष्यामि चोरयिष्आवः चोरष्यियामः।

आत्मने०लट्—चोरयते चोरयेते चोरयन्ते; चोरयसे चोरयेथे चोरयध्वे; चोरये चोरयावहे चोरयामहे।

लोट्—चोरयताम चोरयेताम् चोरयन्ताम्; चोरयस्व चोरयेथाम् चोरयध्वम्; चोरयै चोरयावहै चोरयामहै।

विधिलिङ्—चोरयेत चोरयेयाताम् चोरयेरन्; चोरयेथाः चोरयेयाथाम् चोरयेध्वम्; चोरयेय चोरयेवहि चोरयेमहि।

लङ्—अचोरयत अचोरयेताम् अचोरयन्त; अचोरयथाः अचोरयेथाम् अचोरयध्वम्; अचोरये अचोरयावहि अचोरयामहि।

लृट्—चोरयिष्यते चोरयिष्येते चोरयिष्यन्ते; चोरयिष्यसे चोरयिष्येथे चोरयिष्यध्वे; चोरयिष्ये चोरयिष्यावहे चोरयिष्यामहे।

चिन्त्—सोचना (To think) उभयपदी

परस्मै० लट्—चिन्तयति ।
लोट्—चिन्तयतु ।
विधिलिङ—चिन्तयेत् ।
लङ्—अचिन्तयत् ।
लृट्—चिन्तयिष्यति ।
आत्मने० लट्—चिन्तयते चिन्तयेते चिन्तयन्ते ।
लोट्—चिन्तयतात्, चिन्तयेताम् चिन्तयन्ताम् ।
विधिलिङ्—चिन्तयेत चिन्तयेयाताम् चिन्तयेरन ।
लङ्—अचिन्तयत अचिन्तयेताम् अचिन्तयत ।
लृट्—चिन्तयिष्यते चिन्तयिष्येते चिन्तयिष्यन्ते । इत्यादि

नोट—इसी प्रकार कथ्, गण्, पाल् (रक्षा) रक्ष् भोज्, गम्, आदि धातुओं के causative में रूप चलाओ। इनसे कर्मवाच्य होने पर जो रूप "कथ्यते, गण्यते" आदि बनते हैं वे पृ० ४८ पर लिखे जा चुके हैं ।

इतिशम्

INTER SECTION

Some Grammatical Notes
for Inter classes

कृदन्त—जो प्रत्यय (suffix) धातु से लगकर संज्ञा या Participle बनाते हैं वे कृदन्त कहलाते हैं।

१—Participles—संस्कृत व्याकरण में प्रायः प्रत्येक काल के Participles होते हैं। जैसे—

(i) Imperative Participle—जिनको संस्कृत में कृत्य कहते हैं।

(ii) Present Participl.

(iii) Past Participle. इसे संस्कृत वैयाकरण 'निष्ठा' कहते हैं।

(iv) Future Particípl.e

इनको सामान्य संज्ञा 'कृदन्त' से ही पुकारते हैं।

Imperative Participle:—तव्य, अनीयर्, यत्

नियमः १—विधिलिङ् के अर्थ में धातु से यह तीन प्रत्यय लगते हैं। इनके लगने पर धातु में परिवर्तन होता है जो निम्नलिखित नियमानुसार है:—

२—यह प्रत्यय सदा कर्मवाच्य या भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं; अतः इनके प्रयोग में कुछ परिवर्तन होता है—कर्त्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा विभक्ति होना आवश्यक है।

धातु-परिवर्तनः—

(i) तव्य और अनीयर् प्रत्यय लगाने पर धातु के अन्त में यदि 'इ' 'उ' 'ऋ' हो तो उनका क्रम से 'ए' 'ओ' 'अर्' गुण हो जाता है।

प्रयोग—(i) कृ + तव्य = कर्तव्य।

(ii) जि + अनीयर् (अनीय) = जयनीय।

(iii) हु + तव्य = होतव्य।

(iv) हु + अनीयर् = हवनीय।

(ii) नियमः—

यदि उपधा में भी यह अक्षर 'इ' 'उ' 'ऋ' हो तो भी इन प्रत्ययों के लगने पर यह ही परिवर्तन होते हैं।

टिप्पणि—अन्तिम अक्षर से पहिले अक्षर को 'उपधा' कहते हैं।

प्रयोगः—(i) भिद् + तव्यत् = भेत्तव्य।
(ii) छिद् + अनीयर् = छेदनीय।
(iii) इष् + तव्यत् = एष्टव्य।
(iv) क्रुश + अनीयर् = क्रोशनीय।

'यत्':—

धातुओं से इसी अर्थ को व्यक्त करने को 'यत्' प्रत्यय भी लगता है।

धातु-परिवर्तनः—

१—'यत्' प्रत्यय लगाने पर आकारान्त धातुओं के 'आ' का 'ए' हो जाता है।

उदाहरणः—(i) गा + यत् = गेय।
(ii) मा + यत् = मेय।
(iii) पा + यत् = पेय।
(iv) हा + यत् = हेय।

२—इकारान्त तथा ईकारान्त धातु के बाद यदि 'यत्' प्रत्यय लगता है तब भी 'इ' या 'ई' का 'ए' ही होता है।

उदाहरणः—(i) जि + यत् = जेय।
क्री (ii) + यत् = क्रेय।

अपवादः—

परन्तु 'जि' तथा 'क्षि' धातु से 'यत्' लगाने पर 'ए' को 'अय' भी विकल्प से कर देते हैं।

उदाहरणः—(i) जि + यत् = जय्य।
(ii) क्षि + यत् = क्षय्य।

अन्तरः—१. जेयः—जेतुं योग्यः (may)

२. जय्यः—जेतुं शक्यः (can)

३—दीर्घ ॠकारान्त धातुओं से 'यत्' प्रत्यय लगाने से 'ॠ' का 'ईर्' होता है।

उदाहरणः—१. कॄ + यत् = कीर्य ।

२. जॄ + यत् = जीर्य ।

अपवादः—

परन्तु यदि जॄ धातु के पहिले निषेधार्थक 'अ' लगा हो तो 'ॠ' का 'ईर्' न होकर 'अर्' होगा ।

यथा—अजॄ + यत् = अजर्य ।

टिप्पणीः—

इस शब्द का प्रयोग विशेषण की तरह होता है जबकि इसका विशेष्य केवल 'संगति' मेल, (Union) होता है ।

क्यप् (य)

धातुओं से इसी अर्थ में 'क्यप्' प्रत्यय भी लगता है ।

धातु-परिवर्तनः—

१—ह्रस्व स्वरान्त धातुओं से यदि 'क्यप्' जोड़ा जाय तो धातु और प्रत्यय के बीच में तुक् (त्) का आगम अवश्य होगा ।

उदाहरणः—कृ + क्यप् = कृत्य ।

स्तु + क्यप् = स्तुत्य ।

इ + क्यप् = इत्य ।

इसके अतिरिक्त 'शास्' धातु से 'क्यप्' लगाने पर धातु का रूप 'शिष्' हो जाता है। अतः शास् + क्यप् = शिष्य—शासितुं योग्यः ।

Imperative अर्थ को छोड़ कर 'भू' 'हन्' से भाववाच्य में भी क्यप् प्रत्यय लगता है। 'हन्' धातु का 'न्', 'त्' में बदल जाता है ।

उदाहरणः—हन् + क्यप् = हत्य + टाप् = हत्या ।

भू + क्यप् = भूय ।

३. ण्यत् (य)

केवल ऋकारान्त तथा व्यञ्जनान्त धातुओं से ही 'ण्यत्' प्रत्यय लगता है। 'ण्यत्' प्रत्यय धातु से लगने पर, धातु की उपधा में यदि 'अ' हो तो 'आ' हो जाता है और इसी प्रकार ऋकारान्त धातुओं के 'ऋ' की 'आर्' वृद्धि हो जाती है।

उदाहरण:—(i) कृ + ण्यत् = कार्य।
(ii) हृ + ण्यत् = हार्य।

Present Participles:—शतृ, शानच्।

१—परस्मैपदी धातुओं से 'शतृ' तथा आत्मनेपदी धातुओं से शानच् लगता है। 'शतृ' का 'अत्' तथा शानच् का 'आन' शेष रहता है।

'शतृ'

धातु-परिवर्तन:—

१—धातु का परिवर्तन वर्तमान काल के समान होता है, अर्थात्, वर्तमान काल के प्रत्ययों को हटा कर यदि वर्तमान काल के विकृत (परिवर्तित) रूप के आगे 'अत्' लगादें तो शत्रन्त रूप बनता है।

उदाहरण:—(i) गम् + शतृ = गच्छत्। (गच्छ् + अत्)
(ii) स्था + शतृ = तिष्ठत्।
(iii) दृश् + शतृ = पश्यत्।
(iv) पा + शतृ = पिबत्।
(v) घ्रा + शतृ = जिघ्रत्।

२—participles का प्रयोग संस्कृत में विशेषण की भाँति होता है। उनका कोई स्वतन्त्र लिङ्ग नहीं अतः वे विशेष्य के लिङ्ग को स्वीकार करते हैं।

शत्रन्त शब्द पुल्लिङ्ग में 'गायन्' 'गायन्तौ', 'गायन्तः' की भाँति चलेगा।

यथा;—गच्छन् रामः । पश्यन् कृष्णः ।

३—यदि विशेष्य स्त्रीलिंग हो तो शत्रन्त शब्दों के प्रयोग में विशेष सावधानी की अपेक्षा है क्योंकि स्त्रीलिङ्ग बोधक 'ई' जोड़ते समय किन्हीं शत्रन्त शब्दों के अन्त में केवल 'त्' तथा कहीं 'न्त' रखते हैं इस हेतु निम्नलिखित नियम सहायक हैं।

(i) यदि वर्तमान काल में धातु और प्रत्यय के बीच में 'अ' या 'आ' सुनाई देता हो तो स्त्रीलिङ्ग विशेषण बनाने के लिए शत्रन्त शब्दों में 'न्त' व 'ई' जोड़े जायँगे। जैसेः—

(i) पश्यति से 'पश्यन्ती'

(ii) याति से 'यान्ती'

नोटः—'पश्यति', 'पश्यत':, 'पश्यन्ति' में पश्यत्' के 'पश्य' से 'न्त' 'ई' जोड़ा जायगा।

(ii) यदि वर्तमान काल के रूपों में धातु और प्रत्यय के बीच में 'अ' से अतिरिक्त अन्य स्वर सुनाई दे तो केवल 'त्' 'ई' के साथ जोड़ा जायगा।

यथाः—(i) करोति (कुरु) से कुर्वती।

(ii) शृणोति (शृणु) से शृण्वती।

अपवादः—

अभ्यस्त (जिन धातुओं का प्रथम अक्षर दो बार बोला जाता है।) धातुओं से 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर 'न' कभी नहीं लगता, चाहे पुल्लिङ्ग हो या स्त्रीलिङ्ग।

यथाः—(i) दा + शतृ = ददत् (पुँल्लिंग)

(ii) दा + शतृ = ददती (स्त्रीलिङ्ग)

४—'शतृ' प्रत्ययान्तों के स्त्रीलिङ्ग में रूप 'नदी' के अनुरूप होते हैं।

५—'शतृ' प्रत्ययान्तों के नपुंसकलिङ्ग में रूप 'जगत्', 'जगती' 'जगन्ति के अनुरूप होते हैं।

शानच् (आन)

आत्मेनपदी धातुओं से Present Participle बनाने के लिए धातु के आगे 'शानच्' प्रत्यय लगाते हैं।

धातु-परिवर्तन:—

१—धातु और प्रत्यय के बीच में वर्तमान काल में यदि 'अ' सुनाई देता हो तो 'शानच' के 'आन' से पहिले 'म्' और लगकर 'मान' हो जाता है। इसे संस्कृत वैयाकरण "मुक् का आगम" कहते हैं।

उदाहरण—(i) एधते + शानच् = एधमान।
(ii) वर्धते + शानच् = वर्धमान।
(iii) भाषते + शानच् = भाषमाण।
(iv) कुरु ते + शानच् = कुर्वाण।

२—'शानच्' प्रत्ययान्तों का प्रयोग विशेष्य के अनुसार पुल्लिङ्ग में 'राम' स्त्रीलिङ्ग में 'लता' तथा नपुंसक लिङ्ग में 'फल' के अनुरूप होते हैं।

यथा— (i) वर्धमानः बालः — पुलिङ्ग।
(ii) वर्धमाना लता — स्त्रीलिङ्ग।
(iii) वर्धमानं वनम् — नपुंसकलिङ्ग।

नोट:—Passive voice के Present Part. बनाने के लिए केवल 'शानच्' ही प्रयोग में आता है 'शतृ' नहीं। इसका कारण यह है कि कर्मवाच्य में धातु से कभी भी परस्मैपद नहीं होता; सदा आत्मनेपद ही होता है।

कर्मवाच्य में धातु के प्रयोग के साधारण नियम

१—सामान्यत: धातु के आगे 'य' लगाकर आत्मनेपद में प्रयोग कर दिया जाता है। कर्मवाच्य में अधिकतर धातु शुद्ध ही रहती हैं, उनका विकृत रूप नहीं।

जैसे—√गम् से गम्यते—गम्यमान: Passive part.

२—कुछ धातुओं से थोड़ा-सा परिवर्तन कर्मवाच्य में अवश्य होता है।

(i) यदि धातु आकारान्त हो तो उसके 'आ' का कर्मवाच्य में 'ई' हो जाता है।

यथा:—(i) दा से दीयते—दीयमानः।
(ii) पा से पीयते—पीयमानः।
(iii) मा से मीयते—मीयमानः।
(iv) गा से गीयते—गीयमानः।

(ii) यदि धातु का प्रथमाक्षर मिला हुआ हो तब यह नियम नहीं लगता (स्था धातु को छोड़कर।)

यथा—(i) ध्मा से ध्मायते—ध्मायमानः।
(ii) ग्ला से ग्लायते—ग्लायमानः।
परन्तु (iii) स्था से स्थीयते—स्थीयमानः।

(iii) धातु के अन्त में यदि ह्रस्व 'ऋ' हो तो 'रि' और दीर्घ 'ॠ' हो तो 'ईर्' में बदल जाता है।

यथा—(i) कृ से क्रियते—क्रियमाणः।
(ii) मृ से म्रियते—म्रियमाणः।
(iii) दॄ से दीर्यते—दीर्यमाणः।
(iv) कॄ से कीर्यते—कीर्यमाणः।

(iv) धातु के अन्त में ह्रस्व 'इ' या 'उ' हो तो दीर्घ हो जाता है।

यथा—(i) इ से ईयते—ईयमानः।
(ii) कु से कूयते—कूयमानः।
(iii) पु से पूयते—पूयमानः।
(iv) धु से धूयते—धूयमानः।

Future Participles.

१—धातु के भविष्यत् काल को लेकर, यदि परस्मैपद हो तो 'शतृ' जिसको 'स्यत्' कहेंगे और आत्मनेपदी हो तो 'शानच्' जिसका भविष्यत् में 'स्यमान' होता है लगा देते हैं।

यथा—१. गमिष्यति से गमिष्यन्
२. वद्यति से वद्यन्
३. भाषिष्यते से भाषिष्यमाणः
४, वद्श्यति से वद्यन्

टिप्पणी—शेष सब नियम वही हैं जो वर्तमान काल के Participle में लिख आए हैं।

Past Participles.

१—भूत अर्थ में दो Participles लगाए जाते हैं।

(i) 'क्त' जिसको हम Passive Past Participle कहते हैं।

(ii) 'क्तवतु' जिसे Active Past participle कहते हैं।

नोट—संस्कृत वैयाकरण दोनों के लिए 'निष्ठा' शब्द का प्रयोग करते हैं अतः आगे के प्रकरण में परिवर्तन विषयक नियमों में दोनों प्रत्ययों के लिए हम भी सामान्य शब्द 'निष्ठा' प्रयोग करेंगे।

प्रयोग—निष्ठा लगाने पर धातु में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं यह जानने से पूर्व निष्ठान्त शब्दों का प्रयोग जान लेना अत्यावश्यक है क्योंकि 'निष्ठान्त' शब्दों का प्रयोग प्रायः क्रियादि (के लिए) भी होता है। 'निष्ठान्त' शब्दों के प्रयोग में निम्नलिखित सावधानी की आवश्यकता है।

१—यदि 'क्त' प्रत्यान्त का प्रयोग हो तो कर्त्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा विभक्ति लिखनी चाहिए।

यथा—रामेण बाणेन हतो बाली।

२—परन्तु जो धातुएँ सकर्मक नहीं हैं या जो 'जाना' अर्थकी हैं

उनके साथ 'क्त' प्रत्यय लगाने पर उपर्युक्त नियम नहीं लगता। इनके साथ 'क्त' प्रत्यय Active voice में ही रहता है।

यथा—अहं गतः, अहं जातः, अहं भूतः (अकर्मक)

३—'क्तवतु' प्रत्यय लगाने पर अन्त में केवल 'तवत्' शब्द रह जाता है और उसके साथ कर्त्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया Active voice के ही अनुसार रहती है।

यथा—रामः बालिनं हतवान्।

४—'क्त' प्रत्ययान्तों का प्रयोग विशेष्य या कर्म के अनुसार पुल्लिङ्ग में 'राम', स्त्रीलिङ्ग में 'लता' तथा नपुंसक लिङ्ग में 'फल' के अनुसार होता है।

'क्तवतु' प्रत्ययान्त के शब्द के रूप कर्त्ता के अनुसार पुल्लिङ्ग में 'भवान्', 'भवन्तौ', 'भवन्तः' स्त्रीलिङ्ग में 'तवती' लगाकर 'नदी' तथा नपुंसक में 'जगत्', 'जगती', 'जगन्ति' के अनुरूप होते हैं।

यदि सेट् धातु से निष्ठा लगाया जाता है तो कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता परन्तु यदि अनिट् धातु से निष्ठा लगता है तब उसमें अनेक परिवर्तन होते हैं।

नोट—जिन धातुओं और प्रत्ययों के बीच कभी-कभी 'इ' लगता है वे धातुएँ सेट् कहलाती हैं और जिनसे यह 'इ' नहीं लगता वे अनिट् कही जाती हैं।

१—अनुनासिकान्त (अनिट्) धातुओं से निष्ठा लगाने पर उनके अन्त्य अक्षर का लोप हो जाता है।

जैसे—१. हन्+क्त या क्तवतु=हत्, हतवत्।
२. गम्+क्त या क्तवतु=गत्, गतवत्।
३. नम्+क्त या क्तवतु=नत, नतवत्।
४. यम्+क्त या क्तवतु=यत्, यतवत्।
५. र+क्त या क्तवतु=रत्, रतवत्।

६. मन् + क्त या क्तवतु = मत्, मतवत्।
७ तन् + क्त या क्तवतु = तत्, ततवत्।

२—जन् और खन् धातुओं से निष्ठा लगाने पर अन्त्य अनुनासिक का लोप तो होता ही है परन्तु साथ ही अनुनासिक से पहिला स्वर दीर्घ भी हो जाता है।

यथा—१. जन् + क्त या क्तवतु = जात, जातवत्।
२. खन् + क्त या क्तवतु = खात, खातवत्।

३—दीर्घ ऋकारान्त धातुओं के आगे निष्ठा के 'त' का 'न' हो जाता है और धातु का 'ॠ' 'ईर्' में बदल जाता है।

यथा—१. कॄ + क्त या क्तवतु = कीर्ण, कीर्णवत्।
२. गॄ + ,, ,, ,, = गीर्ण, गीर्णवत्।
३. दॄ + ,, ,, ,, = दीर्ण, दीर्णवत्।
४. जॄ + ,, ,, ,, = जीर्ण, जीर्णवत्।
५. शॄ + ,, ,, ,, = शीर्ण, शीर्णवत्।

४ इसी प्रकार से यदि धातु के अन्त में द हो तो भी 'निष्ठा' के 'त', को 'न' में बदल देते हैं जिसके कारण सन्धि नियम से फिर धातु के भी 'द्' को 'न' कर दिया जाता है।

जैसे—१. खिद् + क्त या क्तवतु = खिन्न, खिन्नवत्।
२. छिद् + ,, ,, ,, = छिन्न, छिन्नवत्।
३. भिद् + ,, ,, ,, = भिन्न, भिन्नवत्।
४. नुद् + ,, ,, ,, = नुन्न, नुन्नवत्।
५. सद् + ,, ,, ,, = सन्न, सन्नवत्।
६. पद् + ,, ,, ,, = पन्न, पन्नवत्।

५—कुछ यकारादि और वकारादि धातुएँ क्रम से इकारादि और उकारादि हो जाती हैं। इस परिवर्तन को व्याकरण में सम्प्रसारण कहते हैं।

उदाहरण (i) √ वच् + क्त या क्तवतु = उक्त, उक्तवत्।
(ii) √ वद् + क्त या क्तवतु = उदित, उदितवत्।

६—जकारान्त धातुओं के 'ज' का निष्ठा लगाने पर 'ष' हो जाता है।

उदाहरण—(i) ✓ यज् + क्त या क्तवतु = इष्ट, इष्टवत्।

(ii) ✓ भ्रस्ज + क्त या क्तवतु = भ्रष्ट, भ्रष्टवत्।

७—जिन धातुओं के अन्त में तालव्य 'श' होता है वह भी निष्ठा लगाने पर मूर्धन्य 'ष' हो जाता है।

(i) ✓ विश् + क्त या क्तवतु = विष्ट, विष्टवत्।

(ii) ✓ दिश् + क्त, क्तवतु = दिष्ट, दिष्टवत्।

८—हकारान्त धातुओं से निष्ठा लगाने पर धातु का 'ह', 'ग' में तथा निष्ठा का 'न', 'ध' में बदल जाता है।

(i) ✓ दह् + क्त; क्तवतु = दग्ध, दग्धवत्।

(ii) ✓ दिह् + क्त, क्तवतु = दिग्ध, दिग्धवत्।

Imp. परन्तु यदि हकारान्त धातु के पहिले 'य', 'र', 'ल' 'व' में से या कवर्ग ('क', 'ख', 'ग', 'घ') में से कोई अक्षर हो तो निष्ठा के 'त' को 'ढ' में बदल देते हैं और धातु का अन्त्य अक्षर लुप्त हो करके उससे पहिले स्वर को दीर्घ हो जाता है।

(i) ✓ ऊह् + क्त, क्तवतु = ऊढ़, ऊढ़वत्।

(ii) ✓ रुह् + क्त, क्तवतु = रूढ़, रूढ़वत्।

(iii) ✓ लिह् + क्त, क्तवतु = लीढ़, लीढ़वत्।

(iv) ✓ गुह् + क्त, क्तवतु = गूढ़, गूढ़वत्।

नोट—सह् धातु से निष्ठा लगाने पर वह विकल्प से सेट् होती है। जब सेट् होती है तब तो उसके साधारणतया सहित, सहितवत् रूप बनते हैं परन्तु जब अनिट् होती है तब उससे भी आगे निष्ठा के 'त' को 'ढ' करके, 'ह' का लोप करते हैं और उससे पूर्व 'स' के 'अ' को दीर्घ न करके उसके स्थान पर 'ओ' कर देते हैं।

✓सह् + क्त, क्तवतु = सोढ, सोढवत्।

'लु' (To cut) और 'क्षि' (To destroy) से आगे निष्ठा के 'त' का 'न' हो जाता है और धातु का स्वर दीर्घ हो जाता है।

√लु + क्त, क्तवतु = लून, लूनवत्।

√क्षि + ,, ,, = क्षीण, क्षीणवत्।

अकारान्त धातुओं से निष्ठा लगाने पर धातुओं में तरह-तरह के परिवर्तन होते हैं।

१—सामान्य नियम—

प्रायः आकारान्त धातुएँ दीर्घ ईकारान्त हो जाती हैं।

√ पा + क्त, क्तवतु = पीत, पीतवत्।

√ गा + क्त, ,, = गीत, गीतवत्।

२—कुछ आकारान्त धातुओं के 'आ' को 'ई' न करके 'इ' करते हैं।

√मा + क्त, क्तवतु = मित, मितवन्

√स्था + ,, ,, = स्थित, स्थितवन्

३—अधिकतर आकारान्त धातुएँ ऐसी हैं जिनमें कोई परिवर्तन नहीं होता।

√या + क्त, क्तवतु = यान, यानवत्।

√वा + ,, ,, = वात, वातवत्।

४—संयोगादि धातुओं से आगे निष्ठा के 'त' का 'न' हो जाता है।

√ग्ला + क्त, क्तवतु = ग्लान, ग्लानवत्

५—'हा' धातु से निष्ठा के 'त' का 'न' हो जाता है। यह 'हा' धातु आकारान्त धातुओं के प्रथम वर्ग की है। अर्थात् इसके 'आ' का 'ई' हो जाता है।

√हा + क्त, क्तवतु = हीन, हीनवत्।

1mp. ६—'धा' 'धातु' से निष्ठा लगाने पर "धा" को 'हि' आदेश हो जाता है।

√धा + क्त, क्तवतु = हित, हितवत्।

७—'दा' धातु' से निष्ठा लगाने पर 'दा' को 'दत्' हो जाता है।

√दा + क्त, क्तवतु = दत्त, दत्तवत्।

1mp. कभी-कभी अजन्त उपसर्गों से आगे 'दा' धातु का प्रयोग करके निष्ठा लगाने पर 'दत्' का भी पूर्व 'द्' चला भी जाता है।

प्र + √दा + क्त, = प्रत्त, या प्रदत्त।

उप + आ + √दा + क्त, उपात्त, उपादत्त (गृहीत)

८—'शुष्' धातु से निष्ठा के 'त' को 'क' होता है।

√शुष् + क्त, क्तवतु + शुष्क, शुष्कवत्।

९—√पच् से आगे निष्ठा लगाने पर निष्ठा के 'त' को 'व' और धतु के 'च्' को 'क्' हो जाता है।

√पच् + क्त, क्तवतु = पक्व, पक्ववत्।

१०—'क्षै' (Reduce) के आगे निष्ठा के 'त' को 'म' हो जाता है तथा धातु के 'ऐ' को 'आ' हो जाता है।

√क्षै + क्त, क्तवतु = क्षाम, क्षामवत्।

११—भकारान्त धातुओं के आगे निष्ठा के 'त' को 'ध' और धातु के 'भ' को 'ब' हो जाता है।

√आ + रभ् + क्त, क्तवतु = आरब्ध, आरब्धवत्

लभ् + ,, ,, = लब्ध, लब्धवत्

ण्वुल्, तृच्

किसी धातु से कर्तृवाच्य संज्ञा बनाने को धातु से ण्वुल् और तृच् प्रत्यय होते हैं।

१ ण्वुल्—इस प्रत्यय का केवल 'वु' शेष रह जाता है जो कि 'अक' में परिवर्तित हो जाता है। उस प्रत्यय के लगाने पर धातुओं से निम्नप्रकार के परिवर्तन होते हैं।

१—धातु की उपधा में यदि 'अ' हो तो वह दीर्घ हो जाता है।

√पठ् + ण्वुल् = पाठकः

२—यदि धातु के अन्त में 'इ' 'ई' 'उ' 'ऊ' 'ऋ' हों तो इस प्रत्यय के लगने पर क्रम से 'ऐ' 'औ' व 'आर्' आदेश हो जाते हैं।

√नी + ण्वुल् = नायः

√पु + ,, = पावकः

√कृ + ,, = कारकः

३—यदि धातुओं की उपधा में उपर्युक्त अक्षर हो तो "अक" प्रत्यय के लगने पर क्रम से 'ए' 'ओ' और 'अर्' आदेश होंगे।

उप + √दिश् + ण्वुल् = उपदेशकः

उप = √रुध् + ,, = उपरोधकः

√दृश् + ,, = दर्शकः

४—अन्य प्रकार की धातुओं से विशेष परिवर्तन नहीं होते (केवल धातु के आगे ण्वुल का परिवर्तित रूप 'अक' देने से ण्वुलन्त संज्ञा बन जाती है।

तृच् (तृ)

जो धातुएँ प्रायः परम्परा से सेट् हैं वे 'तृच्' प्रत्यय लाने पर भी सेट् रहती हैं। ऐसी धातुओं में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता। केवल उस परिवर्तन को छोड़कर जो धातुओं से 'इट' लगाने पर होता है।

अविट् धातुओं से कुछ सामान्य परिवर्तन होते हैं। वे निम्नलिखित हैं।

१—यदि धातु के अन्त में 'इ' 'उ' और 'ऋ' हों तो वे क्रम से 'ए' 'ओ' 'अर्' हो जाते हैं।

√जी + तृच् = जेतृ (जेता, जेतारौ, जेतारः।

अधि + √इ + तृच् = अध्येतृ – अध्येता, (रूप)

√कृ + तृच् = कर्तृ—कर्त्ता,

२—इसी प्रकार उपधा के 'इ' 'उ' को 'ए' 'ओ' कर देते हैं परन्तु 'ऋ' 'अर्' के रूप में न होकर 'र्' के रूप में बदल दी जाती है।

√विद् + तृ = वेत्तृ—वेत्ता।

√गुप + ,, = गोप्तृ—गोप्ता।

३—हकारान्त धातुओं से आगे 'तृच्' लगाने पर धातु के 'ह्' और प्रत्यय के 'त' में वही परिवर्तन होते हैं जो कि इन धातुओं के विषय में निष्ठा प्रकरण में लिखे गए हैं।

√दुह् + तृच् = दोग्धा
√वह् + ,, = वोढा।
√सह् + ,, = सोढा।

ल्युट् 'यु' अन—

धातु से भाववाच्य संज्ञा बनाने के लिए ल्युट् प्रत्यय होता है जिसमें से केवल 'यु' शेष रहता है और जो 'अन' के रूप में बदल जाता है। इस प्रत्यय के लगाने पर धातु के अन्त या उपधा में 'इ' 'उ' 'ऋ' हों तो वे क्रम से 'ए' 'ओ' 'अर्' हो जाते हैं।

√नी + ल्युट् = ने + अन = नयन = नयनम्
√दिश् + ल्युट् = देशनम्
√गुप् + ल्युट् = गोपनम्
√लू + ,, = लवनम्
√कृ + ,, = करणम्।
√दृश् + ,, = दर्शनम्

नोट—ऐसी संज्ञाएँ सदा नपुंसकलिंग में ही प्रयुक्त होती है।

यही 'ल्युट्' प्रत्यय करण और अधिकरण के अर्थ में भी संज्ञाएँ बनाता है।

करणं = क्रियते अनेन इति तत्।

भवनम् = भवन्ति यस्मिन् तत्।

कभी कभी भाव वाचक संज्ञाएँ बनाने के लिए 'क्त' प्रत्यय लगता है। उसके लगने से वही परिवर्तन होते है जो निष्ठा में लिख चुके हैं। इस अर्थ में 'क्त' प्रत्यय से बनी हुई संज्ञाएँ नपुंसकलिंग में ही होगी।

जीवितम् = जीवनम्

'घञ्' और 'घ' (अ)

धातु से संज्ञार्थ 'घञ्' और 'घ' प्रत्यय लगते हैं।

यह प्रत्यय जहाँ लगे होते हैं वह संज्ञा पुल्लिंग में प्रयुक्त होती है।

'घञ् प्रत्यय प्रायः अधिकरण में और कभी कभी करण में संज्ञा बनाता है।

'घञ् प्रत्यय लगाने पर धातु की उपधा में यदि 'अ' हो तो 'आ' और यदि धातु के अन्त में 'इ' 'उ' 'ऋ' हों तो 'ऐ' 'औ' 'आर्' हो जाते हैं और धातु के अन्त का 'च' 'क' में तथा 'ज' 'ग' में बदल जाता है।

√रम् + घञ् = रामः
√यम् + ,, = यामः
नि + √ इ + घञ् = न्यायः
अधि + √ इ + ,, = अध्यायः
√ कृ + घञ् = कारः

घ—जहाँ पर 'घ' होता है वहाँ धातु की उपधा में 'इ' और 'उ' हों तो उनको गुण हो जाता है।

√खिद् + घञ् = खेदः

नोट—वस्तुतः 'घञ्' और 'घ' में कोई विशेष अन्तर नहीं है सिवाय इसके कि घञ् अधिकरण तथा करण में और 'घ' धातु के अर्थ (भाव) में होता है तथा 'घञ् के आगे होने पर जो वृद्धि होती है वह 'घ' के लगाने पर नहीं होती।

Important—घञन्त शब्द आगे होने पर इकारान्त उपसर्गों को जो उनसे पहिले लगे हों विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे—

परिहासः, परीहासः
प्रतिकारः, प्रतीकारः

'क' (अ)

१. आकारान्त धातुओं से पूर्व कोई उपपद लगा हो तो 'क' प्रत्यय हो जाता है।

२. 'क' प्रत्यय के होने पर धातु का 'आ' लुप्त हो जाता है उपपद के आगे द्वितीया विभक्ति लुप्त होती है।

धनदः = धनं ददाति इति, धन + √दा + क

गोदः = गां ददाति इति, गो + √दा + क

३. परन्तु 'स्था' धातु के पहिले उपपद के आगे सप्तमी लुप्त होती है—गृहस्थः = गृहे तिष्ठति इति। गृह + √स्था + क।

अण् (कृदन्त) (अ)

१. द्वितीयान्त उपपद के पूर्व में होने पर धातु से अण् प्रत्यय हो जाता है।

२. धातु के अन्त के 'इ' 'उ' व 'ऋ', 'ऐ' 'औ' 'आर्' में, और उपधा का 'अ' 'आ' हो जाते हैं।

कुम्भकारः = कुम्भं करोति इति = कुम्भ + √कृ + अण्

'अप्' (अ)

१. जिन धातुओं के अन्त में 'ऋ' या 'उ' हों उनसे संज्ञा बनाने को 'अप्' प्रत्यय लगाया जाता है।

२. 'अप्' लगने पर धातु की 'ऋ' 'अर' और 'उ' 'ओ' में बदल जाता है।

√कृ + अप् = करः

√जु + अप् = जवः

तुमुन् (तुम्)

१. Infinitive mood—के अर्थ में धातु से 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है।

२. यदि धातु 'सेट्' है तब कोई परिवर्तन नहीं होता है। धातु का रूप वैसा ही बदल जाता है जैसा कि सेट् होने पर बदलना चाहिए।

√पठ् + तुमुन् = पठितुम्।
√भू + ,, = भवितुम्।

अनिट् धातु—१. यदि धातु के अन्त में 'ह्' हो और आदि में 'य' 'र' 'ल' 'व' 'श' 'ष' 'स' को छोड़ कोई अन्य अक्षर हो तो धातु के 'ह्' को 'ग' और तुमुन् के 'त्' को 'ध्' हो जाता है।

२. धातु के अन्त में 'ऋ' को तथा उपधा के और अन्त के 'इ' 'उ' को गुण हो जाता है। (सामान्य नियम)

√दुह् + तुमुन् = दोग्धुम्।
√दिह् + ,, = देग्धुम्।

३. यदि हकारान्त धातुओं का आदि अक्षर 'य' 'र' 'ल' 'व' 'श' 'ष' हों तो 'ह्' का लोप तथा तुमुन के 'त' का 'ढ' हो जायगा।

√लिह् + तुमुन् = लेढुम्।
√रुह् + ,, = रोढुम्।

नोट—'वह्' और 'सह्' धातु से तुमुन् प्रत्यय लगाने पर उपर्युक्त परिवर्तनों के साथ साथ 'व' और 'स' के 'अ' को 'ओ' हो जाता है।

√वह् + तुमुन् = वोढुम।
√सह् + ,, = सोढुम्।

क्त्वा (त्वा)

१. पूर्वकालिक अर्थ ('कर' लगा हो) प्रकट करने के लिए धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय लगता है।

२. धातु से 'त्वा' लगाने पर विशेष परिवर्तन नहीं होते। कुछ आकारान्त धातुओं के 'आ' का ई हो जाता है।

√पा + त्वा = पीत्वा

कुछ आकारान्त धातुओं के 'आ' को ह्रस्व 'इ' होता है।

√स्था + त्वा = स्थित्वा।

√मा + ,, = मित्वा।

कुछ आकारान्त धातुएँ वैसी ही रहती हैं।

√हा + त्वा = हात्वा।

'दा' धातु से 'त्वा' प्रत्यय करने पर 'दा' को 'दत्' हो जाता है।

दा + त्वा = दत्त्वा

यहाँ गुण नियम प्रवृत्त नहीं होता।

कृ + त्वा = कृत्वा

दृश् + ,, = दृष्ट्वा

Important.—यदि धातु के पहिले कोई उपसर्ग लगा हो तो पूर्वकालिक अर्थ प्रकट करने को 'त्वा' के स्थान में ल्यप् (य) हो जाता है। ल्यप् प्रत्यय लगने पर अनुनासिकान्त धातुओं के अनुनासिक को 'त' विकल्प से हो जाता है।

प्र + √नम् + ल्यप् = प्रणम्य, प्रणत्य।

आ + √गम् + ,, = आगम्य, आगत्य।

वि + √तन् ,, वितन्य, वितत्य।

'त्वा' प्रत्यय के सम्बन्ध में जिन धातुओं के (आ) को 'इ' 'ई' का परिवर्तन लिख आए हैं, उनमें 'स्था' को छोड़ सबको 'ल्यप्' आगे होने पर बड़ा 'ई' ही होता है।

नि + √पा + ल्यप् = निपीय।

अनु + √मा + ,, = अनुमीय।

शेष धातुएँ वैसी ही रहेगी अर्थात् उनमें कोई परिवर्तन नहीं होगा

प्रदा + ल्यप् = प्रदाय
वि + √हा + ल्यप् = विहाय

यदि ह्रस्व स्वरान्त धातुओं से आगे 'ल्यप्' होगा तो धातु और प्रत्यय के बीच में तुक् (त्) का आगम हो जायगा।

वि + √जि + ल्यप् = विजित्य
अलं + √कृ + ल्यप् = अलंकृत्य

Important. नोटः—यदि धातु के पहिले कोई उपसर्ग या अव्यय होगा तो 'त्व' नहीं 'ल्यप्' होगा और यदि उसके पहिले कुछ नहीं होगा तो उसी अर्थ में 'त्वा' रहेगा। यदि धातु के पहिले 'न' अर्थात् 'अ' लगा हो तो उससे पूर्वकालिक अर्थ में ल्यप् नहीं होगा; 'त्वा' ही रहेगा।

न - √कृ + त्वा = अकृत्वा

'त्वा' 'तुमुन्' और 'ल्यप्' प्रत्ययान्त सभी अव्यय कहाते हैं।

One more rule about निष्ठा

१२—कुछ मकारान्त धातुएँ ऐसी हैं कि जिनके अनुनासिक का लोप नहीं होता। इनकी उपधा को दीर्घ हो जाती है और सन्धि नियम से निष्ठा के 'त' के आगे रहने पर धातु का 'म्' 'न्' में बदल जाता है।

√शम् + क्त, क्तवतु = शान्त शान्तवत्
√दम् + ,, ,, = दान्त, दान्तवत्
√भ्रम् + ,, ,, = भ्रान्त, भ्रान्तवत्
√क्लम् + ,, ,, = क्लान्त, क्लान्तवत्
√श्रम् + ,, ,, श्रान्त, श्रान्तवत्
√कम् + ,, ,, = कान्त, कान्तवत्, (चाहा हुआ)

समासों का विशेष विवरण

समास का संक्षिप्त विवरण गत पृष्ठ संख्या ८ व ९ पर आप पढ़ चुके हैं। कुछ विशेष बातें यहाँ लिखी जाती हैं।

नीचे लवेम्न   ·यीभाव समास होता है

उदाहरण: –

विभक्ति—अधिहरि=हरौ इति अधिहरि,

अधिलोकं=लोके इति अधिलोकम्,

यह समासान्त 'टच् विभक्तार्थ में विकल्प से हो जाता है। अध्यात्मं or अध्यात्म। उपचर्मं या उपचर्म।

अधि + आत्मन् + टच् = अध्यात्मम् (आत्मनि इति विग्रहः)

उप + चर्मम + टन् = उपचर्मम् (चर्मणि इति—यह विग्रह है)

समीप—उपगंगम्=गंगायाः समीपे इति उपगंगम्,

नोट्—अव्ययीभाव समास के अन्त में आनेवाले दीर्घ ईकारान्त या आकारान्त ह्रस्व हो जाते हैं। नदी, पौर्णमासी, अग्रहायणी इन शब्दों को भी अव्ययीभाव समास में विकल्प से 'टच्' होता है। अतः उपनदम्, उपनदि; उपपौर्णमासं; उपाग्रहायणं, उप पौर्णमासि; उपाग्रहायणि यहरूप बनते हैं।

समृद्धि—सुयवनं=यवनानां समृद्धिः इति

नोट:—समृद्धि में 'सु' आता है।

व्यृद्धि—दुर्यवनम्=यवनानां व्यृद्धिः इति।

नोट—व्यृद्धिः (विनाश) में 'दुर्' आता है।

अभाव—निर्मक्षिकम्=मक्षिकाणाम् अभावः इति।

नोट—अभाव में 'निर्' आता है।

'अनुर्यत्समया' P. S.—समीप अर्थ में भी 'अनु' उपसर्ग अव्ययीभाव समास को प्राप्त होता है।

अनुगंगं वाराणसी।

द्विगु—(तत्पुरुष)

यदि अन्त में 'रात्रि' शब्द हो तो कभी-कभी पुलिंग में भी द्विगु समाहार दिखाई पड़ता है, जैसेः—

पंचरात्रः = पञ्चानां रात्रीणां समाहारः इति ।
पंचगवं = पंचानां गवां समाहारः इति (पंच + गो + टच्)

तत्पुरुष

द्वितीया आदि विभक्तियों के साथ में तत्पुरुष समास होता है। समास का विग्रह करने में पूर्वपद में कारक के अनुसार द्वितीया आदि विभक्तियाँ लगा दी जाती हैं। उत्तर पद में या तो प्रथमा विभक्ति रख कर उसका प्रकरणानुसार तत् शब्द के प्रयोग से लिंग, विभक्ति, तथा वचन का निर्देश किया जाता है और या प्रकरण की विभक्ति में ही उत्तर पद का प्रयोग किया जाता है। जैसे - राजभवनेः = राज्ञः भवनम् इति राजभवनं, तस्मिन् राजभवने, अथवा राज्ञः भवने इति।

द्वितीया तत्पुरुष पहले दिखलाया जा चुका है।

१—जैसेः—कृष्णश्रितः, बाधातीत (कृष्णं श्रितः इति)।

तृतीया तत्पुरुष

२—समास का उत्तरपद कृदन्त हो या तुल्य वाची हो तो विग्रहावस्था में पूर्वपद तृतीया में रखते हैं।

सुख युक्तः = सुखेनयुक्तः ।
खड्गहतः = खड्गेन हतः ।
पितृसमः = पित्रा समः ।

३—हीनार्थक शब्दों का उत्तर पद में प्रयोग हो तो विग्रहावस्था में पूर्वपद तृतीया विभक्ति में रखा जाता है।

विद्याहीनः = विद्यया हीनः ।
धनहीनः = धनेन हीनः ।

चतुर्थी तत्पुरुष

४—तादर्थ्य में चतुर्थी समास होता है।

ज्ञानाध्यनम् = ज्ञानाय अध्ययनम्।

यूपदारु = यूपायदारुः।

इसी प्रकार 'वलि' 'हित' 'सुख' ये उत्तर पद हो तो विग्रह में पूर्वपद चतुर्थी में रेखा जाता है।

भूतबलिम् = भूताय बलिम्।

गोहितम् = गवे हितम्।

भ्रातृसुखम् = भ्रात्रे सुखम्।

पंचमी तत्पुरुष

उत्तरपद भय, भीत आदि हो तो विग्रह में पूर्व पद पंचमी में रहता है।

चौरभयम् = चौरात्-भयम्।

व्याघ्रभीतः = व्याघ्रात् भीतः

नोट—'निर' आदि उपसर्ग समास के पूर्व पद में रहते हैं परन्तु अव्ययीभाव नहीं कहलाते। यदि इन उपसर्गों का अर्थ 'निगत' हो तो विग्रह में उपसर्ग का अर्थ और उत्तर पद में पञ्चमी' विभक्ति होगी। Vide 'निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या'।

निष्कौशाम्बिः = निर्गतः कौशाम्ब्याः इति।

उन्निद्र = उत्थितः निद्राया इति।

षष्ठी तत्पुरुष

पूर्वपद और उत्तरपद में किसी प्रकार का सम्बन्ध अभिलक्षित हो तो पूर्वपद षष्ठी में होता है।

राजभवनम् = राज्ञः भवनम्।

सप्तमी तत्पुरुष

यदि उत्तरपद श्रेष्ठ आदि के अर्थ में हो तो पूर्वपद सप्तमी में रखा जाता है।

वीरश्रेष्ठः = वीरेषु श्रेष्ठः इति।

द्विजोत्तमः = द्विजेषु उत्तमः इति।

गजराजः = गजेषु राजा इति।

यदि पूर्वपद उत्तरपद का अधिकरण हो तब भी विग्रहावस्था में पूर्वपद सप्तमी में होता है।

जलमग्नः = जलेषु मग्नः इति।

ऋणादि के लिए प्रयोग किए हुए कालवाची शब्दों में भी सप्तमी विभक्ति होती है जब कि उत्तरपद कृदन्त शब्द हो—

मासदेयम् (ऋणं) = मासे देयम्।

वर्षपरिशोध्यम् = वर्षे परिशोध्यम्।

यदि दिन और रात्रि के अवयववाची पूर्वपद हों और उत्तर पद कृदन्त हों तब भी विग्रहावस्था में पूर्वपद सप्तमी में रखे जावेंगे।

पूर्वाण्हकृतं = पूर्वाह्णे कृतम् इति।

कुछ शब्द ऐसे हैं कि तत्पुरुष होते भी हुए पूर्वपद का विपर्यय हो जाता है, दन्तानां राजः = राजदन्तः ।

अग्रेवनं = वनस्य अग्रे।

तत्पुरुषे लिंग विपर्ययः

षष्ठी तत्पुरुष में यदि उत्तरपद सभा हो और पूर्वपद राजा या मनुष्यवाची शब्द से भिन्न हो तो उत्तरपद 'सभा' नपुंसक लिंग हो जाता है — ईश्वरस्य सभा = ईश्वरसभम्। राक्षस सभम्।

सभा, सेना, सुरा, छाया, शाला और निशा तत्पुरुष के उत्तरपद मे हों तो विकल्प से ये शब्द नपुंसक लिंग हो जाते हैं। ब्राह्मणसेनम्। संगीतशालम्। चैत्रनिशम्।

'रात्रि' और 'अहन्' यदि अन्त में हों तो पुलिंग हो जाता है। रात्रि से समासान्त 'अच्' होकर 'रात्र' हो जाता है और 'अहन्' शब्द से कभी-कभी अह्न और कभी 'अह' होता है। दशरात्रः। मध्याह्नः। सप्ताहः।

समासान्त अच् या टच्

'राजन्' और 'अहन्' और 'पथिन्' और 'सखि' यदि समास के अन्त में हों तो उनसे समासान्त 'टच्' हो जाता है और शब्दों का रूप, 'राज', 'अह' 'पथ' 'सख' हो जाता है। राजसख = राज्ञः सखा-इति (सखि + टच्) सखिपथः—सख्युः पन्थः (पथिन् + टच्)।

कर्मधारय

विशेषण और विशेष्य का समास कहाता है।

विग्रह पूर्वपद और उत्तरपद दोनों की प्रकरणानुसार प्रथमा विभक्ति में रख कर विशेषण विशेष्य के बीच में एक वचन पुल्लिंग, स्त्रीलिंग में 'चासौ' नपुंसक लिंग में 'चतत्' शेष द्विवचन और बहु-वचन में विशेष्य के लिंगानुसार 'तत्' शब्द के रूपों का प्रयोग दोनों पदों के विशेषण विशेष्य के सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। नवयुगः = नवश्चासौ युगः। क्षुद्रनदी—क्षुद्रा चासौ नदी। नीलोत्पलम्—नीलं च तत् उत्पलम् नीलोत्पलम्।

उपमित कर्मधारय

जहाँ पर विशेषण विशेष्य में उपमानोपमेय सम्बन्ध' हो वहाँ दोनों को समानाधिकरण में रख कर बीच में प्रसंगानुसार इव' या 'एव' लगाए जाते हैं।

घनश्यामः—घन इव श्यामः घनश्यामः। चरणकमले—चरणौ एव कमले।

कर्मधारय और बहुव्रीहि में यदि पूर्वपद 'महत्' शब्द हो तो उसके 'त्' को 'आ' हो जाता है।

महाराजः—महाँश्चासौ राजा इति।

नञ् (न)—विरोधार्थक अव्यय के विशेषण होने पर कर्मधारय समास नञ् तत्पुरुष कहलाता है।

यदि उत्तरपद व्यञ्जनादि हो तो 'न' 'अ' में और यदि स्वरादि हो तो 'अन्' में परिवर्तित हो जाता है।

यथा न ब्राह्मणः इति अब्राह्मणः। न एकः इति अनेकः।

इसी प्रकार कुत्सित विशेषण के साथ कर्मधारय समास होने पर कुत्सित को 'कु' आदेश हो जाता है। यदि पुरुष विशेष्य हो तो कु को 'का' आदेश विकल्प से हो जाता है। यथा—कुत्सितः पुरुषः—कुपुरुषः या कापुरुषः।

यदि विशेष्य स्वरादि शब्द हो तो कुत्सित के स्थान में होने वाला 'कु' 'कत्' के रूप में बदल जाता है। यथा—कुत्सितः आचारः—कदाचारः। कुत्सित अश्वः कदश्वः।

कभी-कभी उपमित कर्मधारय समास में उपमेय पूर्वपद और उपमान उत्तरपद होता है। ऐसी अवस्था में 'इव' या 'एव' उत्तरपद के आगे विग्रह में लगेंगे। पुरुषव्याघ्रः-- पुरुषोव्याघ्र इव।

बहुव्रीहि

इसके पाँच भेद होते हैं समानाधिकरण। व्यधिकरण। तुल्ययोग। व्यतीहार। नञ्।

समानाधिकरण—समास में आये हुए पदों को प्रथमा विभक्ति में प्रकरणानुसार लिंग, वचन, में रखकर 'यत्' सर्वनाम को कारक के नियमानुसार प्रयुक्त करते हैं। पीताम्बरः—पोत अम्बरे यस्यसः।

नोटः—बहुब्रीहि के अन्तिम शब्द का लिंग विशेष्य संज्ञा के अनुसार बदल जाता है।

पीतोदकाःगावः = पीतं उदकं याभिः ताः।

यदि बहुव्रीहि का पूर्वपद स्त्रीलिंग हो तो वह भी पुल्लिंग हो जाता
है। रूपवद्भार्यः = रूपवती भार्या यस्य सः। परन्तु संज्ञावाचक शब्द,
पूरणी वाचक विशेषण (प्रथम, द्वितीय, तृतीय) जातिवाचक (ब्राह्मण,
क्षत्रिय) और स्वांगवाची विशेषण जिनकी उपधा में 'क' हो उनका
लिंग परिवर्तित नहीं होता।

यथा गंगाभार्य = गंगा भार्या यस्य सः।

पंचमीभार्यः = पंचमी भार्या यस्य सः।

सुकेशीभार्यः = शोभनकेशाः यस्याः सा सुकेशी, तथाक्ता

भार्या यस्य सः = सुकेशीभार्यः

व्यधिकरण—जहाँ पर पूर्वपद और उत्तरपद विग्रहावस्था में
भिन्न-भिन्न विभक्तियों में रखे जाते हैं वहाँ व्यधिकरण बहुव्रीहि होता
है। यह प्रायः प्रहरणार्थक शब्दों से अधिक होता है। परन्तु जहाँ पर
पूर्वपद उत्तरपद पर आश्रित प्रतीत हो वहाँ पर व्यधिकरण बहुव्रीहि
होता है। इसमें पूर्वपद प्रथमा में और उत्तरपद सप्तमी में ही दिखाई
देता है।

शस्त्रपाणिः = शस्त्रं पाणौ यस्य सः।

चन्द्रमौलिः = चन्द्रः मौलौ यस्य सः।

नोट—केवल 'कण्ठेकालः' ऐसा व्यधिकरण बहुव्रीहि है जिसमें
पूर्वपद सप्तमी में और उत्तरपद प्रथमा में रखा जाता है। साथ ही
पूर्वपद सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता।

तुल्ययोग—जहाँ पूर्वपद 'सह' और 'समान' होता है जो कि 'स'
में बदल जाता है। सपुत्रः = पुत्रेण सह। सरूपः = समान रूपं यस्य सः।

व्यतीहार—जिन शब्दों में प्रहार से युद्ध भासित हो उनके
पारस्परिक समास को व्यतीहार बहुव्रीहि समास कहते हैं।

१—प्रहारवाची शब्दों को द्वित्व हो जाता है और पूर्वपद के अन्तिम स्वर को दीर्घ हो जाता है।

२—उत्तरपद के अन्त में ह्रस्व 'इ' लग जाता है। यह प्रायः नपुंसक लिंग होते हैं।

३—इनके विग्रह में पूर्वपद उत्तरपद दोनों में सप्तमी या तृतीया का कारकों के नियमानुसार प्रयोग करके 'प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धं' या 'प्रवृत्तं युद्धं' लिखा जाता है।

केशाकेशि = केशेपु केशेपु गृहीत्वा प्रवृत्तं युद्धं इति। बाहूबाहवि। मुष्टीमुष्टि।

नञ् – न – इसका रूप 'अ' और 'अन्' तत्पुरुष में दिये नियमानुसार ही होता है। भेद केवल इतना होता है कि इस नञ् समास में अन्य पद प्रधान होता है।

अमूल्यम् = न विद्यमानं मूल्यं यस्य।

अनुत्तमम् = अविद्यमानं उत्तमं यस्मात्।

समासान्त—कप् या 'क' दीर्घ ईकारान्त और अकारान्त तथा ऋकारान्त यदि बहुव्रीहि के उत्तर पद में हों तो यह प्रत्यय समासान्त में प्रयुक्त होता है।

मृतपत्नीकः = मृतापत्नी यस्य सः। 'उरस्' और 'सर्पिष्' आदि शब्दों से यह प्रत्यय नित्य होता है। व्यूढोरस्कः = व्यूढं उरं यस्य सः।

प्रियसर्पिष्कः = प्रियं सर्पिर्यस्यसः। निरर्थकं = निर्गतः अर्थः यस्मात् तत्।

यदि उत्तर पद में इन्नन्त शब्द हो तो भी यह 'कप्' प्रत्यय अवश्य होता है। बहुधनिका = बहवः धनिनः यस्यां नगर्याम्—सा।

धर्म यदि उत्तर पद हो तो उसके आगे 'अनिच्' (अन्) प्रत्यय लगता है। समानधर्मा = समानः धर्मः यस्यसः।

सु दुर्, सुरभि और पूति शब्द यदि पूर्वपद में हों तो उत्तरपद गन्ध शब्द को इत् (इ) हो जाता है।

सुगन्धिः—सुष्ठु गन्धः यस्य सः।

यदि न्यून अर्थ विवक्षित हो या उपमान विवक्षित हो तब भी गन्ध शब्द को 'इ' हो जाता है। घृतगन्धि भोजनं = घृतस्य गन्धः लेशः यस्मिन् तत्।

यदि अन्त में धनुष् शब्द हो तो उसके 'ष्' को बहुव्रीहि में 'अनङ्' विकल्प से हो जाता है।

पुष्पधन्वा = पुष्पं धनुः यस्य सः (कामदेव)

यदि अन्त में 'जाया' शब्द हो तो उसके अन्त में 'या' को नि (ङ्) हो जाता है। जानकी जानिः = जानकी जाया यस्य सः। युव जानिः = युवती जाया यस्य सः। इत्यादि।

(शेष बातें गुरु की सेवा करके सीखनी चाहिये।)

Notes.

ENGLISH SECTION

EXERCISE 1

To salute—नम्, To bow—वद् (वन्द) with अभि (Prefix). Teacher—शिक्षकः, Truth—सत्यम्, To speak—वद् To carry—धा, (दधा) or धारि (धारय्) To lead—नी (नय), King—राजन् (राजा), Kind—दयालुः, Forest—वनम्, To burn—दह, Tiger—व्याघ्रः, शार्दूलः, Cave—गुहा, कन्दरा, Bird—खगः m. Nest—नीड m Tree—वृक्ष m. To fall—पत्, Parrot—शुक—m. To prattle—शब्दाय् A. or कूज् p. Wisa—m. Reality—तत्त्व n.

EXERCISE 2

To conquer—जि with वि (A); To run—धाव, Forest—वनम्. To walk—भ्रम, Coek—पाचकः, To cook—पच्, Vegetables—शाकम् Rice—तण्डुलम्, To know—ज्ञा, Secret—मर्म, To fetch नी—with आङ् (Prefix) (गत्वानयनमित्यर्थः) Bees—मधुमक्षिकाः To return—वृत, with प्रति and नि (Prefix) Duty—कर्तव्यम्; To worship—पूज् (णिजन्त)।

EXERCISE 3

Stars—तारकाः, To shine—शाक with प्र (Prefix) Cow-herd—गोपालः, To dwell—वस, To extol—with प्र (Prefix), Exploits साहसिक कार्याणि—Dens गुहाः, To stand—स्था, Sea-shore—समुद्रतटम्, Lord—प्रभुः,

Universe—सर्वलोक:, To grow—पद् with उत् Prefix), (दिवादि), To saw—वप, To rise—अय with उत् (Prefix), (अयते) A. To come—गम् with आङ् (Prefix), To take away—नी, or हृ, To live—वस् ।

EXERCISE 4

To get—लभ्, To get angry—क्रुध्, To cause जन् (णिच्)To become—भू, To agitate—क्षुभ, To satisfy—तोष्, To perish—नश । Fodder—बुसम्, Calm—शान्त:, Road—सरणि:, To nourish—पाल, Deer—मृग:, To irritate—रुष, To get weary—श्रम with परि (Prefix), To faint—मूर्च्छ, Hot—उष्ण: Child—अपत्यम्, To pardon—क्षम, Devotee—भक्त To dance—नृत्, Before—समक्षे To please मादयति, Conduct—आचरणम्, Wicked—दुष्ट:, Mad—उन्मत्त Wealth—धनम्, Fruit—फलम् ।

EXERCISE 5

Shop-keeper—वणिक्, To weigh—तोल (णिच्), Corn—अन्नम्, Correctly—सम्यक्तया, Pious—पवित्र, Every day—प्रत्यहम्, Rat—मूषक:, To eat—अद् or भक्ष, Stick—दण्ड: To recite—पठ, Coin—मुद्रा, Box—मञ्जूषा, To publish—काश with प्र (Prefix), or मुद्रयति, To arrange—स्थाप् with वि and अव् (Prefix), Row पंक्ति:, Disease—रोग:, Ornaments—अलङ्कारा: Flesh—मांस:, Horses—तुरङ्गा:, Gold-smith हेमकार: ।

EXERCISE 6

To examine—ईक्ष with परि (Prefix) Grammar—व्याकरणम् To begin—रभ with प्र-आ (Prefix)

To sport—क्रीड़, Evening—सायम्, Logic तर्क शास्त्रम्, Wise—बुद्धिमान्, To strive—यत् (यतते) progeny—सन्ततिः, To return—गम् with प्रति (Prefix) Exchange—प्रत्युपकारः. Planets—ग्रहाः, Wind—वायुः, Stormy—वेगयुक्तः, To blow up—क्षिप with उत् (Prefix), To tremble—कम्प, Punishment—दण्डः, Disc—बिम्बः, To decrease—क्षि To increase—वृध, Dark half—कृष्णपक्षः, Bright-half शुक्लपक्षः. Patriot देशभक्तः Motherland जन्मभूमिः, Zeal उत्साहः, to hear श्रु, Cool—शीतलम्, Traveller पथिकः, Rejoice—मुद् Advice—सम्मतिः।

EXERCISE 7

To reap—लू (कृत), Labour—श्रमः, Autumn—वसन्तः, To taste—स्वद्—Sweet—मिष्टम् To offer—दा or यच्छ, Absolution—उद्धारः, पापत्यागः Recesses अन्तरालं, Noble—भद्रः, To forgive—क्षम्, Fault—दोषः, Conduct—Parrot शुकः, Top—शिखरम्, To order दिश with आङ् (Prefix), Dangerous—भयंकरः, Feeling—भावना, To boast—कत्थ with वि (Prefix), Prudent धीमान्, Minutely—सूक्ष्मतया, To accept कृ with स्वी or अङ्गी (Prefix), To reject—षिध् with नि (Prefix), Season—कालः, Instantly—तत्क्षणम्, To fly—पत् with उत् (Prefix), Mountain अद्रिः, Peacock—मयूरः।

EXERCISE 8

To honour—पूज्, Mungoose—नकुलः, To protect—रक्ष, Actions—कार्याणि, Reward—पारितोषिकः Village—ग्रामः To command—शास, Chariot—स्यन्द-

नम Fowler—शाकुनिक: Army—सैन्यम् Dead of night मध्यरात्रम, To take away—हृ with अप, Drink पा, Goat—अज: ।

EXERCISE 9

To desert—त्यज्, To abandon—परित्यज्, To drink—पा Birds—पक्षिण:, Greatness—महत्ता, Warrior—योद्धा, To kill—वध, Battle—सम्पराय:, Sword—असि:, To respect, पूज Fault—अपराध:, To forgive—क्षम् To examine—ईक्ष with परि (Prefix) To loot—लुण्ठ, Thief—तस्कर:. To defeat—जय, with परा (Prefix), Clothe—वस्त्रम्, Washer-man रजक:, Sweet-meat—मिष्टान्नम्; To do—कृ To throw—क्षिप, Arrow—बाण:, Thirst पिपासा, Award पारितोषिकम् ।

EXERCISE 10

Subject प्रजा:, Heaven—स्वर्ग: Arrival—आगमनम्, To adorn—भूष, Virgins—कन्या, To please—हृष्, Worship—अर्चना, To remove—सारि with अप (Prefix), Affection—स्नेह:, Ornaments भूषणानि, Beautiful—सुन्दरम्, Bright—उज्ज्वलम्, To surround वृ with परि (Prefix), Anxiety—औत्सुक्यम्, Offering—हव्यम्, Reward—फलम् ।

EXERCISE 11

To offer—दा Offering—हवि:, To appease—सान्त्व. To bring—नी with उप (Prefix), fish—मत्स्य:. Cave—गुहा, To endure—सह, modesty—नम्रता, Sweetness—माधुर्यम्, To captivate—लुभ (णिच्) To fulfil—पूर with परि (Prefix) णिच्, Sweetheart—सुहृद,

Summer—ग्रीष्मर्तुः, Bower—कुञ्जः, Creeper—लता, Pious—पवित्रः ।

EXERCISE 12

To go—गम्, To see—ईक्ष्, Temple—मन्दिरम् To behold—ईक्ष्, लोक with अव् (Prefix) To hit—हन्, Messenger—दूतः, संदेशवाहकः, To reach गम् or प्राप्, Quality—योग्यता, Newspaper—समाचार पत्रम्, To discharge—क्षिप् Soldiers—सैनिकः ।

EXERCISE 13

Clever—निपुणः, To find—ज्ञा, Rejoice—मुद् Conduct—आचरणम्, Gentle—नम्रः, Behaviour—व्यवहारः, Breeze—वायुः, To swim—तॄ तर, To ascend—रुह्, Vow—प्रतिज्ञा, At all costs सर्वावस्थासु ।

EXERCISE 14

Misery—आपत्तिः, To read—पठ्, To cross—तॄ (तरति), To get—लभ्, Exertion परिश्रमः Poor—निर्धनः, Share—भागधेय, Lap—उत्सङ्गः, To slip—पत्, Arrow—बाणः, To reside—वस्, Imprudence—मौर्ख्यम् Present—उपहारः, To show—दृश—Causative (दर्शयति), Blessing—आशीः, Impudence—धृष्टता ।

EXERCISE 15

Notes:—'May you live long and be bappy." Sentences of the above kind should be translated as follows:—"भवान् चिरं जीवतु ससुखम्" in these 'may' should be translated in लोट् form or in आशीर्लिङ् । 'Let' also be treated likewise.

Cow—सुरभिः, To destroy—नाश (णिच), Tongue रसना, Glory—विजयः Virtue—गुणः, To punish—दण्ड, Wickedness—धूर्तता, दुष्टता, Prosperity—समृद्धिः, Coins—मुद्रा, Pray—अर्थ् with प्र and आङ् (Prefix), To fill—पूर, Picture—चित्रम् Prosperous—संमृद्धः, Mango—आम्रम्, Learned—बुधः, Welfare—शुभम्, उन्नतिः, Shut—तिरोधत्ते, Stone—पाषाणः।

EXERCISE 16

Advise—सम्मतिः To scold—भर्त्स् (णिच्), To decorate—भूष्, कृ with अलम् (Prefix), Hymns—गानानि, Mother in-law श्वश्रूः To break—खण्ड, Father-in-law—श्वसुरः Traversing—पारयन्।

EXERCISE 17

Confidence—विश्वासः Prudent—मतिमान्, To aggrieve—शुच् (शोचते). Anger—क्रोधः Sacrifice बलिः।

To forget—स्मृ with वि (Prefix), Adversity आपत्तिकालः, Market—आपणः, To get up—स्था with उत (Prefix) (उत्तिष्ठति) To study—इङ with अधि (Prefix), To proclaim—घुष् Business—व्यापारः, Arm—आयुधः To steal—मुष् To buy—क्री Selfpraise—आत्मश्लाघा, To agitate—आन्दोलयति Conciliate शमि (णिच्), Elderly—उत्तमः Prosperity—सम्पत्ति Sage—ऋषिः, Cause—कारणम्, Conduct—आचरणम्।

EXERCISE 18

To-day—अद्य, Either—अथवा, Back पृष्ठ, To stay—(स्था) तिष्ठ, Stars—ग्रहा Favourable—अनुकूलम्

Greedy —लुब्धः, Crops – कृषि, To care ईक्ष with अप् (Prefix) Slowly—शनैः शनैः, Simply सामान्यतया, To laugh हस्, wine—सुरा, To gamble—द्यूतक्रीडनम् । What-else अन्यत् किम् Rogues—लुण्टाकाः, To beg—याच् Slowly—Husband—पतिः, Through—मध्यम् ।

EXERCISE 19

Preceptor—गुरुः, To rejoice—प्रसन्नोभवति, Permission—आज्ञा, आदेशः, Victory—विजयः, Singing—गानम् , Songster—गायकः: To guard—रक्ष, To dwell—वस, path—वर्त्म, Delicious—स्वादुः, Alms—भिक्षा, Pit—गर्तः, Logic—न्यायशास्त्रम् । To narrate—कथ् , Wolves—वृकाः, Patriotism—देशशक्तिः, To conquer—जि (जयति), To preach—प्रचार (प्रचारयति) Loyalty—राजभक्तिः People—स्त्रियो मनुष्याश्च ।

EXERCISE 20

After—अनन्तरम् , Festival—उत्सवः, To accompany—गम् with सह् (Prefix) Sacred—पवित्रः To pluck त्रुट (त्रोटयति), Chapter—अध्यायः Capital—राजधानी, Gratitude—कृतज्ञता, Brave—शूरः Power राज्यम् , Defect—पराजयति, Direction—दिशा Cut off कृत (कर्तयति), Subjects—प्रजाः, To install—अभिषिच्, Jus as—यथैव, Expel—निष्कास् (णिच् Causative) Apartment—भवनम् , Boon—वरः ।

EXERCISE 21

Recite—पठ् , Early in the morning—ब्राह्ममुहूर्त Prayer—प्रार्थना, To beat—ताड (ताडयति) To follow—अनुसृ (अनुसरति), To draw—आलिख, Skill बुद्धिः, चातु-

र्यम्, Reward—पारितोषिकम्,—Hell—नरकः, Possession—आधिपत्यम्, Incarnate—अवतारः To cross—तरति, To liberate—मुच, or त्यज (त्यजति), Whatever—यत् किञ्चत्, Harsh—कठोरम्, To banish—निर्वास (णिच), Bidding—आदेशः, आज्ञा, Virulent—तीक्ष्णम्, To extinguish—निर्वाप (णिच्) To construct—रच् (णिच्)।

EXERCISE 22

To find—आप् with प्र (प्राप्नोति) or लभते Drinking—पिबति, Forest—वनम्, See दृश् (पश्यति) Top—शिखरम, Soldiers—यामिकः Minister—सचिवः Carriage—यानम्, To remember—स्मृ, To weep—रुद् (रोदित), To mount—आरुह् Branch—शाखा।

EXERCISE 23.

Extremity—चरम दशा, Captive—संयत, Twine—युग्म (नकुल-सहदेवौ) Marvelous—आश्चर्य-करम्, Feat—कार्यम्, crest-fallen—हतप्रभ, or च्युत किरीट, Humiliating—अपमान जनक, incident—घटना।

EXERCISE 24.

Beautious—सुन्दरम्, accomplish—परिपूरियत, conceive—विचारयति, Persuade—अनुरुध्, Ravisher—आतताई, triumphantly—विजित रूपेण। Righteously—धार्मिक तया।

EXERCISE 25.

Former—पूर्वतन, well versed—सुष्ठु अधीती, companion—सहचरः, Hunting—मृगया, tempt—आकृष्ट, curse—शाप, Utter—भाषते। Endow—युक्त।

EXERCISE 26.

Monarch—सम्राट्, to pine—क्लिश्, (क्लिश्यति) sacrificial—यज्ञिय, to dispute—आयोद्धुम्, आह्वातुम्, end—समाप्ति ।

EXERCISE 27.

propled—अध्युषित, infested—संक्रान्त, परिपूर्ण, unfor tunate—हतभाग्या, दुर्भगा, asylum—आश्रमः, Deety—देवता, Presiding—अधिष्ठात्री, Ascetic—वैखानसः,

EXERCISE 28.

Field of battle—युद्ध क्षेत्रम्, to vindicate—समर्थनम्, प्रमाणीकरणम्, निर्दोषीकरणम्, Usurper—आक्रामक, आततायी, बाधुर्षिक, Heritage—उत्तराधिकार, Auguish—पीड़ा, Disregard—उल्लङ्घनम्, Imposed—आसञ्जित, अध्यारूढ़ ।

EXERCISE 29.

Lion—सिंह, Animals—पशुः, Resound—प्रतिध्वनित, Roar—गर्जन, High spirited—साहसी, mean-time—अत्रान्तरे ।

EXERCISE 30.

Host—समुदाय, Dissuade—निवारयति, Slaughter—हन्, Agonising—दुखितः

EXERCISE 31.

Blind—अन्धः, नेत्रहीन, Property—सम्पत्तिः, Despair—हताशता, Abstaining—निवृत्तः, Restored—पुनरवाप्तवान्, Prosperity—अभ्युदयः ।

EXERCISE 32.

Prison—कारागारः, Wrong—अनुचित । Guilty—अपराधी, Mistake—त्रुटिः Reason—कारणम् । Alas—हन्त ! A fault-committed—एक दोष निह्नवे द्विगुणो दोषः क्रियते ।

EXERCISE 33.

Exalted—महामहिमा, Pride—दर्पः, skilled—चतुरः, Instantly—तत्क्षणम्, cliff—शैलः, Thunder—विद्युत्पातः

EXERCISE 34.

Afflict—पीडयितुम्, wreches—कापुरुषाः, Brutes—दन्दशूकः, Manger—द्रोणी । गोभक्षणस्थली, गवादनी ।

EXERCISE 35.

Courtier—आस्थान सदस्यः, overtake—आसद्, पश्चादागत्य संगतः, silver—रजतम्, Deign—कृपा, Bargain—व्यवसायः, consider—विचारणम् ।

EXERCISE 36.

Jest—परिहासः, Insolent—धृष्टाः, Punishment—दण्डः, Attendants—अंगरक्षकः Plate—पात्री, Distinct—व्यक्त.

EXERCISE 37.

Moonlight—चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, vine-yard—द्राक्षामण्डपः, Grapes—द्राक्षाः, Jumped—उत्प्लवतेस्म, Pretend—मिषः, परम्, छद्म, Sour—अम्ल ।

EXERCISE 38.

Ring—अङ्गुलीयकम्, Token—लक्ष्म, उपहार, Lake—सरः, Hermitage—आश्रमपदम्, Insensate—हतबुद्धि, विमूढः, नष्ट चेतनः, प्रत्यादेशः, Repudiate—प्रत्याख्यानम्, निराकरणं,

EXERCISE 39.

Moment—कालः. Dwell—निवासः, Pour—पातनम्, Muse—विचारणम्, Distance - आरात्, Companion—सहचराः, सखा, सतीर्थाः, Peaceful—शान्त । Disciples—शिष्याः, Insensate—जडः,

EXERCISE 40

To drink—पा, To commit—कृ, Very—एव To decide—नी with निर, To rebuke—भर्त्स्, To laugh—हस Aloud—उच्चैः, To censure—निन्द्, To salute—नम्।

EXERCISE 41

Relation—सम्बन्धी, Judgment—न्यायाधिपः (भावप्रधानम्) Wandoring—भ्रमन्, To mutter उच्चारयन्, Torch—उल्का, Tail—पुच्छम्, Festivity—उत्सव।

EXERCISE 42

Adoration—पूजा, Hastily—शीघ्रम्, To pound—चूर्ण with सम्, To roar—सिंहनादं करोति. To lecture दिश, with उप, Conciliation—शमनम्, सान्त्वम् Tribute—करः, Sacrifice—यज्ञः, Apprehensions—शङ्काः, To embrace—श्लिष् with आ To congratulate नन्द्—with अभि। To kiss—चुम्ब, To disappear—धा with तिरस् Sacrificial post—यूपः, To the—श्रम् with परि।

EXERCISE 43

News—समाचारः, To burn—दह् To buy—क्री, Logic - न्यायशास्त्रम्, Philosophy—दर्शनशास्त्रम्, Tribe जातिः, Formerly—पुरा, प्रथमम्, Thursday बृहस्पति वासरः, To shrink—संकुचित End—उद्देश्यम्, लक्ष्यम्, Chastity—पावित्र्यम्, To plough—कृष् or लिख्, To sow—वप्।

EXERCISE 44

Greedy— लुब्धः, Every—प्रति, Bond—बन्धनम्, To test- परीक्ष्, Mouse—मूषकः, Neighbour—प्रतिवेशी,

Fragrant—सुरभिः, To blow—वह्, Passion—वासना, Unholy—अपवित्रः ।

EXERCISE 45

Desire—एषणा, According—तदनुसारम्, तद्वत्, Misery—कष्टम्, Industry—शिल्पकला, Lazy—अलस Jealous—ईर्ष्यालुः मत्सरी, Fascinating—काकर्षणम्, Elegant—विशालम् or ललितम्, Form—आकृतिः, Offence अपराधः, Union—सम्मेलनम्; सन्धिः, Damsel—ललना, Juicy—रसयुक्तम्, Adversity—कष्टम्, Avocation—व्यापारः, कायम्, Rascal—नीचः ।

EXERCISE 47

Fie—धिक् (indeclinable—अव्ययम्), Self interest—स्वार्थ, In view—दृष्टिकोणः, Diabolical—आसुरभाववान्, Interest—लाभः ।

EXERCISE 47

Calamity—क्लेशः, To congratulate—अभिनन्द, Degree—उपाधिः Foreign country—विदेशः To impale—शूले रुह् with आ, Brother-in-law—श्यालः, Revered—आदरणीयः, Pretending—व्याजेन छलेन, City—नगरम् ।

EXERCISE 48

Bold धृष्टः, To proceed—आगम, Surely—निश्चितम्, To lose—नश्, त्यज्, (गिण्ज्), Jewel रत्नम् ।

EXERCISE 49

To associate—सम्पर्कः, कृ with पृच्, Uneducated—मूर्खः, Reduce—णम् with परि, Rough—कठोरम् । Rock—

शालासंघः, Poisonous—विषाक्तम्, Observe विधानम्, 'धा' with वि. To die—मरणम्, Serve—सेवा ।

EXERCISE 50

Proud—दर्पयुक्तः Nectarsweet—अमृतवत् मधुरम्, Devotee—भक्तः, Parents—पितरौ, To intoxicate—मदमत्तकरणम्, उन्मत्तीकरण, Worthless मूल्यरहितः, Command—आज्ञा ।

EXERCISE 51

To save—रक्ष, Pen—लेखनी, Pious—धार्मिकः, To swear—ज्ञा with प्रति, Innocent—निरपराधः, Deer—हरिणः, Boon—वरः ।

EXERCISE 52

Forgive—क्षम् Ignorance—अज्ञानम्, Curiosity, जिज्ञासा Respectfull—आदरेण, To blame—दोषी (दुष) Fornothing—व्यर्थम्, Several—अनेकानि, Delay—चिरम्, Soon—शीघ्रम्, Demon—राक्षसः । स्पष्टमन्यत् ।

हिन्दी-विभाग

(विशेष द्रष्टव्य--तत्सम शब्दों के पर्यायवाची संस्कृत शब्द नहीं दिये जायँगे—केवल उनका लिंङ्ग बतला दिया जायगा ।)

अभ्यास १

तत्सम शब्द--ईश्वर (पुं०), नगर (न०), चोर (पुं०), धन (न०), मनुष्य (पुं०), मुनि (पुं०), कमल (न०), फल (न०), पुस्तक (न०) कृष्ण (पुं०) ।

प्रणाम करना = नम् ; जाना = गम (गच्छ), चुराता है = हृ (हर); बाघ = व्याघ्र (पुं०), खाना – खाद्; लड़का = बालक (पुं०), पानी = जल (न०), पीना = पा (पिब), जंगल--वन (न०), रहना = वस्, भौंरा = भ्रमर (पुं०) पेड़ = वृक्ष (पुं०), तोता = शुक (पुं०), देखना = दृश (पश्य) गिरना = पत्, पढ़ना = पठ, आम = रसाल (पुं०), नौकर = सेवक (पुं०), ले जाना = नी (नय्) घर = गृह (न०), बन्दर = कपि (पुं०) ।

अभ्यास २

तत्सम शब्द--सिंह (पुं०), मूर्ख (पुं०), वेद (पुं०), संग्राम (पुं०), देवदत्त (पुं०), मन्त्र (पुं०), शिव (पुं०), राम (पुं०) कृषक (पुं०), अन्न (न०) ।

घूमना = सृ (सर्) भाव = तत्त्व (न०), नहीं = न (अ०) समझना = बुध् (बोध्), शत्रु = अरि (पुं०), जीतना = जि (जय्) पैर = पाद (पुं०) चलना = चल्, पूजा करना = यज्, बुद्धिमान् = बुध (पुं०), निन्दा करना = निन्द्, आज्ञा = आदेश (पुं०), छोड़ना = (त्यज्), पिता = जनक (पुं०), मिठाई = मिष्टान्न (न०), देना = दाण (यच्छ), प्रातःकाल = प्रातर् (अ०), बाग = उपवन

(न०), घोड़ा = अश्व (पुं०), सवार = अश्वारोह (पुं०), गाँव = ग्राम (पुं०), भिक्षुक = याचक (पुं०), मैदान = क्षेत्र (न०), दौड़ना = धाव्, रखना = स्थाव् (स्थापयति), जीना = जीव्, आग = अग्नि (पुं०), जलाना = दह् ।

अभ्यास ३

तत्सम शब्द—बीज (न०) मित्र (न०), दिन (न०), पुत्र (पुं०), कवि (पुं०), श्लोक (पुं०), सूर्य सारथि (पुं०) ।

पहाड़ = पर्वत (पुं०), उगना = रुह् (रोह्) खेत = क्षेत्र (न०), याद करना = स्मृ (स्मर्), कहाँ = कुत्र (अ०), ठहरना = स्था (तिष्ठ), बोझ = भार (पुं०), बुलाना = आ + ह्वे, राजा = भूपति (पुं०), प्रशंसा करना = प्र + शंस्, तलवार = खड्ग (पुं०), हाथ = हस्त (पुं०), कर (पुं०), सूर्य = रवि (पुं०), योधा = योध (पुं०), ढोना = वह्, चढ़ना = आ + रुह्, स्वामी = अधिपति (पुं०), पीछे-पीछे चलना = अनु + सृ, छोटा भाई = अनुज (पुं०), झगड़ा = कलह (पुं०), पसन्द करना = इष्, रुच, कहना = वद् ।

अभ्यास ४

तत्सम शब्द = ग्रीष्म (पुं०) रोग (पुं०), आचरण (न०) दण्ड (पुं०), वसन्त (पुं०), सभा (स्त्री०), दुःख (न०), पाठ-शाला (स्त्री०), ऋषि (पुं०) ध्यान (न०) ।

सन्तुष्ट होना = तुष्, क्रोध करना = क्रुध्, मोर = मयूर (पुं०) नाचना = नृत्, तालाब = तडाग (पुं०), सूख जाना = शुष्, लोभ करना = लुध्, दवा = योग (पुं०), औषध (न०), नष्ट होना = नश् (अधिक—प्रचुरम् (वि०), बिना = बिना (अ०), शान्त होना = शम् (शाम् समुद्र = सागर (पुं०), चञ्चल होना = क्षुभ्, वेश्या = गणिका (स्त्री०), पढ़ना = पठन (न०), थक जाना = श्रम् (श्राम्) ।

अभ्यास ५

तत्सम शब्द=वचन (नि०), दुष्ट (विशेष्यानुसार), सज्जन (पुं०), वैद्य (पुं०), पीड़ा (स्त्री०), राजपुत्र (पुं०), उपदेश (पुं०), अपराध (पुं०)।

प्रसन्न होना=तुष, प्रेम करना=स्निह, छोटा भाई=अनुज (पुं०) गले लगना=आ+श्लिष्, क्षमा करना=क्षम् क्षाम्) चिड़िया=खग (पुं०), चटका (स्त्री०), बच्चा=शावक (पुं०), पालना=पुष्, धनी मनुष्य=धनिक (पुं०), धनाढ्य (पुं०), लोभ करना=लुभ, गर्मी=आतप (पुं०), मूर्च्छित होना—मुह्, नौकर=सेवक, प्रेम करना—स्निह्, पालना=पाल, भृ (भरति)।

अभ्यास ६

तत्सम शब्द—बाण (पुं०), मोक्ष (पुं०), गुरु (पुं०), शिष्य (पुं०), संसार (पुं०), आसन (न०)

बादल=मेघ (पुं०), सींचना=सिच् (सिञ्चति), प्रवेश करना=विश्, फेंकना=मुच्। (मुञ्च्), चाहना=इष (इच्छ), किसान=कृषक (पुं०), हल=हल (न०), आङ्गल (न०), जोतना=कृष, उपदेश देना=उप+दिश, मन्दिर=देवालय (पुं०), छोड़ना=मुच् (मुञ्चति), कुम्हार=कुम्भकार, (पुं०), घड़ा=घट (पुं०), बनाना=सृज्, खेल=क्रीड़ा (स्त्री०), खेलना (न०), छूना=स्पृश्, संन्यासी=यति (पुं), पूछना=प्रच्छ् (पृच्छ), शिर=शीर्ष (न०), बैठना=उप+विश, आज्ञा देना=आ+दिश, आज्ञा=आदेश (पुं०) विद्यार्थ छात्र (पुं०), शिष्य (पुं०)।

अभ्यास ७

तत्सम शब्द—कवि (पुं०), व्याध (पुं०), परिश्रम (पुं०), अतिथि (पुं०) श्लोक (पुं०)।

पूजना = अर्च्, दण्ड देना = दण्ड, धोना = क्षल्, (क्षाल्), चुराना = चुर् (चोर्), सताना = पीड्, सान्त्वना देना = सान्त्व्, खाना = भक्ष, डंडा = दण्ड (पुं०) बिलाव = मार्जार (पुं०) मारना = ताड्, वर्णन करना = वर्ण्, गिनना = गण, ढूँढ़ना = मार्ग्, प्रसन्न करना = प्री (प्रीण्), , गहना = अलङ्कार (पुं०) शरीर = देह (पुं०), सजाना = भूष, धोना – प्र + क्षाल, वर्णन करना — वर्ण। (इस अभ्यास में सब धातुओं के अन्त में अयति जोड़ो—जैसे—अर्च + अयति = अर्चयति) ।

अभ्यास ८

तत्सम सब्द = व्याकरण (न), अभ्युदय (पुं०), कल्याण (न०), बिम्ब (न०), शुक्ल पक्ष (पुं०), ज्ञान (न०), भय (न०), देश (पुं०) असत्य (न०), कर्त्तव्य (न०) शिक्ष (पुं०), छात्र (पुं०), आकाश (न०) ।

पढ़ना—अध्ययन (न०), आरम्भ करना = आ + रम् (भ्वा०), साथ = सहाय, खेलना = रम् (भ्वा०), लड़ना = युध् (दिवा०), आनन्द मनाना = वृध् (वर्ध्) (भ्वा०अ० क) हवा = पवन (पुं०), झोंका = वेग (पुं०) हिलना = कम्प (भ्वा० अ०), साधारणतः = प्रायः (अ०), यत्न करना = यत् (भ्वा० आ०), पुरस्कार = पारितोषिक (न०) पाना = लभ् (भ्वा० आ०) काँपना = वेप् (भ्वा० अ०), सिपाही = सैनिक (पुं०) प्रेम = स्नेह (पुं०), सेवा करना—सेव् (भ्वा० आ०), मानना = अनु—रुध् (दिवा० आ०) कभी-कभी = यदा-कदा (अ०), कर्हिचित् (अ०), भाषण करना = भाष् (भ्वा० आ०) भाई = सहोदर (पुं०) गुरु = अध्यापक, आचार्य (पुं०) आदर = सम्मान (पुं०) आशा करना = आ + शास् (भ्वा० आ०), तारा = नक्षत्र (न०) चमकना = द्युत् (द्योत्) (भ्वा० आ०), मरना = मृ (म्रिय्) (तनादि० आ०) ।

अभ्यास ९

तत्सम शब्द—शिखर (न०), मुनि (पुं०) अपराध (पुं०), नृत्य (न०), गुण (पुं०), गायक (पुं०), मोक्ष (पुं०), सेनापति (पुं०), सैनिक (पुं०), भोजन (न०), पाप (न०) दुःख (न०)। राजभवन = प्रासाद (पुं०), कौआ = काक (पुं०), उड़ना = डी (ड्य) (भ्वा० आ०) क्षमा करना क्षम् (भ्वा० आ०), सीखना = शिक्ष् (भ्वा० आ०), होना = विद् दिवा० आ०), फूल = पुष्प (न०) प्रसून (न०), प्रशंसा करना = श्लाघ् (भ्वा० आ०), मिठाई = मिष्टान्न (न०), चखना = स्वाद् (भ्वा० आ०) गीत = संगीत (न०). आदर करना = आ + दृ (आद्रिय) (तुदा० आ०), आदेश करना = आ + दिश (तुदा० उ०), भिखारी = भिक्षुक (पुं०) माँगना = याच् (भ्वा० आ०) उत्पन्न होना = जन यति, (दिवा० आ०), तलवार = खड्ग (पुं०), नाश करना = नि + सूद् (निषूद) (चुरादि आ०), उत्पन्न होना = उत् + पद् (उत्पद्यते)

अभ्यास १०

तत्सम शब्द—हिरण (पुं०) कार्य; (न०) अलङ्कार (पुं०), जीव (पुं०) नदी (स्त्री०), रथ (पुं०)।

नेवला = नकुल (पुं०), साँप = सर्प (पुं०), मारा जाना = हन् (हन्य) (कमवा०), देखा जाना = दृश् (दृश्य), प्रार्थना करना = प्र + अर्थ (चुरा० आ०), उपदेश देना = उप + दिश (तुदा० उ०), बिल्ली = मार्जारी (स्त्री०), बकरी = अजा (स्त्री०)।

अभ्यास ११

तत्सम शब्द—अपराध (पुं०), न्याय (पुं०)।

कुत्ता-सारमेव—(पुं०) पीना = पा (पिब्), गिनना = गण, जानना = अवगम्। छोड़ना = त्यज् (भ्वा० प०), महिमा = महत्त्व (न०), लड़ाई = युद्ध (न०), अच्छा व्यवहार = सदाचार (पुं०) यात्री = पथिक (पुं०), हराना = परा + जि (भ्वा० आ०), धोबी = रजक, धावक (पुं०), कपड़ा = वस्त्र (न०)।

अभ्यास १२

तत्सम शब्द—प्रज्ञा (स्त्री०), आज्ञा (स्त्री०), नारद (पुं०), स्वर्ग (पुं०), सखी (स्त्री०), हरिणी (स्त्री०), कन्या (स्त्री०), शोभा (स्त्री०), आज्ञा (स्त्री०), माला (स्त्री०), सेवा (स्त्री०) शोक (पुं०), दासी (स्त्री०), पुत्री (स्त्री०), पुत्री (स्त्री०), पाठशाला (स्त्री०), द्रव्य (न०) ।

कहानी=कथा स्त्री०), युवती=प्रमदा (स्त्री०), क्रीड़ा करना=क्रीड् (भ्वा० प०), आना=आगमन (न०), समय=वेला (स्त्री०), स्त्री=ललना (स्त्री०), नाच=नृत्य (न०), यात्री= पथिक (पु०), सन्दूक=पेटिका (स्त्री०), मंजूषा (स्त्री०), माता= जननी (स्त्री०), दूर करना=अप+हृ (भ्वा० उ) रानी=राज्ञी (स्त्री०), शोभित किया जाना=अलम्+कृ (कर्मवा०) सजाना= भूष । पीछा करना=अनु+धाव् प्रसन्न करना प्र—साद् ।

अभ्यास १३

तत्सम् शब्द=इन्द्राणी (स्त्री०), नम्रता (स्त्री०), कैकेयी, छाया (स्त्री०), देवता (पुं०), इच्छा (स्त्री०), लता (स्त्री०) ।

स्त्री=पत्नी (स्त्री०) भार्या (स्त्री०) पति=रमण (पुं०), वल्लभ (पुं०), मछलियाँ=मत्स्य (सं०), गुफा=गुहा (स्त्री०) कन्दरा (स्त्री०) धृष्टता=अशिष्टता (स्त्री०), पीछे चलना= अनु+गम् (भ्वा० उ०), मिठास=माधुर्य (न०), वचन=वाणी (स्त्री०), चाँदनी=कौमुदी (स्त्री०), मन=चित्त् (न०), मोह लेना=हृ (भ्वा० उ०) चट्टान=शिला (स्त्री०) बैठना=उप+ विष् (तुदा० प०), देवता=देव (पुं०), पूरा होना=भल् (भ्वा० प०) मंडप=मण्डप (पुं०), विहार करना=वि+हृ ।

अभ्यास १४

तत्सम शब्द—वर्ष (न०), दूत (पुं०), पुस्तक (न०), कविता (स्त्री०), कृपा (स्त्री०), पुस्तकालय (पुं०), समाचार-पत्र (न०) ।

बनारस = वाराणसी (स्त्री०), शिव का मन्दिर = शिवालय (पुं०) वापस = नि० + वृत् (भ्वा० आ०), पहुँचना = उप + आ + गम् (भ्वा० प०) लाना = आ + नी (भ्वा० उ०), सब जगह = सर्वत्र (अ०), कविता = काव्य (न०), बहुत = बहु (वि०), वर = वर (पुं०), गहना = भूषण, सोने का = सौवर्णम् ।

अभ्यास १५

तत्सम शब्द—शिष्य (पुं०), परीक्षक (पुं०), दर्शन (न०), बनाना = सृज् (तुदा० प०), भेजना = प्रेष (प्रेरणा०), पहचानना = अनु + स्मृ (भ्वा० प०), प्रस्थान करना = प्र + स्था (भ्वा० आ०), शेर = सिंह (पुं०), सुन्दर = सुन्दरी (स्त्री०), परीक्षा लेना = परि + ईक्ष् (भ्वा० आ० , आनन्दित होना = मुद् (भ्वा० आ०), बनाना = रच्, आराधना करना = भज ।

अभ्यास १६

तत्सम शब्द—प्राण (पुं० बहु०), भयङ्कर (वि०), कामदेव (पुं०), मधुर (वि०), वाटिका (स्त्री०), गोपी (स्त्री०) यज्ञ (पुं०) ।

झील = सरसी (पुं०) एक समय = एकदा (अ०), देना (प्रदाण) = त्यज् (भ्वा० प०), घोंसला = नीड (पुं०) कुलाय (पुं०) जब = यदा (अ०), चारों ओर = चतुर्षु दिक्षु, फैलाना = व्यापारयति, तीसरी = तृतीय (वि०), आँख = नेत्र (न०) नयन (न०), रखना = स्थान (प्रेरणा०) (स्थापयति), निन्दा करना = अधि + क्षिप (तुदा० प०) ।

अभ्यास १७

तत्सम शब्द—दीन (वि०), पैतृक (वि०), सम्पत्ति (स्त्री०), संग्राम (पुं०) आशीर्वाद (पुं०) धृष्टता (स्त्री०) उपहार पुं० ।

आज = अद्य (अ०), नाव = नौका (स्त्री०) गंगा = जाह्नवी (स्त्री०), गंगा (स्त्री०), पार करना = तृ (तर) (भ्वा० प०),

शिकारी = व्याध (पुं०), आखेटक (पुं०), गोद = क्रोड (न०) अङ्क (पुं०), धृष्टता = अविनय (पुं०), दिखलाना = दृश (प्रेरणा०), (दर्शयति) लाना = आ + नी ।

अभ्यास १८

तत्सम शब्द—अभ्युदय (पुं०), परीक्षा (स्त्री०), उत्तीर्ण (वि०) ।

गाय = गो धेनु (स्त्री०), जीभ = जिह्वा (स्त्री०), रसना (स्त्री०), सच = सत्य (न०), चावल = तन्दुल (पु०), प्रार्थना करना = प्र + अर्थ् (चुरा० आ०), बुलाया जाना = आ + ह्वान, (प्रेरणा०) भरना = प्र + पूर (चुरा०), बन्द करना (आँख) = नि + मील (भ्वा० प०), देना = प्र + दाण (भ्वा० प०), द्वारपाल = दौवारिक ।

अभ्यास १९

तत्सम शब्द—पराक्रम (पुं०), वेद (पुं०), अभीष्ट (वि०) पदार्थ (पुं०), महत्त्व (न०), तर्कशास्त्र (न०), सिद्धान्त (पुं०), रक्षक (पुं०) ।

कष्ट = संकट (न०), व्यसन (न०), तालाब = जलाशय (पुं०) प्यासा = तृषार्त (वि०) ।

अभ्यास २०

तत्सम शब्द—विपत्ति (स्त्री०) दीपक (पुं०), बल (न०) साधु संगति (स्त्री०) ।

बाजार = आपण (पुं०); उठना = उद् + स्था (भ्वा० आ०) (उत्तिष्ठति), कंचुकी = कंचुकित् (पुं०), सूचित करना = सूच् (चुरादि०), जलाना = दीपक इत्यादि) दीप् (प्रेरणा०), भुजा = बाहु (पु०), क्षत्रीया = क्षत्रिय (पु०), बड़े = गुरुजन (पुं०) भूलना = वि + स्मृ (भ्वा० प०), निष्कारण = निर्निमित्तम् (अ०), धैर्य रखना = श्वस् + आ + श्वस् (अदा० प०) ।